	१२ ३ १ ० ०	
२४३२१	४ २ ४ ३ १	३×१२=३६
	−१ ०	२×३= ६
	३ २	४३१ गमल=६
		४८

	१२ ३ १ ० ०	
३२१५	४ ३ २ १ ५	४×१२=४८
	−० ३	२१५ मलग= ३
	५	५१

	१२ ३ १ ० ०	
४२१३	५ ४ २ १ ३	४×१२=४८
	−० २	२×३= ६
	४ २	२१३ मलग= ३
		५७

सारांश यह है कि मिश्रितान्क मे एक के नियम दूसरे को उपयुक्त नहीं। जो उपरोक्त नियम ग्रहण करने के लिये १२३७७ को १२३४५ मानना पड़ेगा। एतद् केवल सिद्धांत समझ लेना अलम् है विशेष गोरख धधे मे पड़ने की आवश्यकता नहीं मिश्रिताको के नष्टोद्दिष्ट ध्रुवाक की रीति से ऊपर बताये गये हैं परन्तु मुख्यत उनकी सूची और प्रस्तार भेद की गति ही समझ लेना पर्याप्त है।

इति श्रीअकविलासे भानुकवि विरचिते मिश्रितांक नष्टोद्दिष्ट वर्णनन्नाम त्रयोदशो विलास ।



॥ श्री ॥

अङ्क विलास

OR

MYSTERIES OF FIGURES

जिसमें

अङ्कपाश विद्या विषयक सूची, प्रस्तार, नष्ट और उद्दिष्ट के नियम और उदाहरण अत्यन्त सरलतापूर्वक दिये हैं और १ अंक से लेकर परार्ध (शंख) संख्या तक ज्योतिष, गणित, पुराण, भूगोल तथा व्यवहार सम्बन्धी अनेक मनोरंजक उदाहरण भी विद्वज्जनों के विनोदार्थ लिखे हैं।

जिसे

छंदःप्रभाकर प्रणेता

साहित्याचार्य्य जगन्नाथप्रसाद रायबहादुर उपनाम "भानु" कवि रिटायर्ड इ० ए० कमिश्नर ने निज यन्त्रालय जगन्नाथ प्रेस बिलासपुर (म० प्र०) में छापकर प्रकाशित किया।

प्रथम बार १००० प्रति — सन् १९२५ — मूल्य २)

समर्पण

श्री गुरु पिङ्गल ज्ञाननिधि, सुगम सुझायो पंथ।
वारवार पद वंदि प्रभु, करहुं समर्पण ग्रंथ॥
करहुं समर्पण ग्रंथ, स्वामि मम करुणासागर।
अंकविलासहिं करहु सुफल, जरा छंद प्रभाकर॥
भेद सकल दरसाय, जगत में कीन्हो मङ्गल।
सदा रहौ अनुकूल 'भानु' पै, श्री गुरु पिङ्गल॥

दीनदास,

जगन्नाथप्रसाद—'भानु'।



INTRODUCTION.



I am very grateful to the Hindi loving public for their kind appreciation of my treatises on Hindi Rhetoric (Kavya prabhakar) and on Hindi versification (Chhanda-Prabhakar) The former, a bulky book, has found place in almost all the important libraries in India, while the latter has been finally prescribed as a text book for the B A course by the Patna University Chhanda-Prabhakar contains the simplest formulae for finding out the combinations and permutations of various metrical quantities and syllables Ever since its publication, I have been thinking as to whether similar formulae could also be devised for the cardinal numbers 1 to 9 and their various combinations, either by repetition or omission and I am glad to say that my attempts have been crowned with success

2 The old mathematicians have confined their rules only to the finding out of the total number of combinations and the total number of permutations, but beyond this they have not framed any rules or devised any method for finding out the exact position of any particular permutation desired or for stating the exact number of a particular permutation given

3 In the absence of any definite or fixed rule, the permutations are generally worked out *at random or in a haphazard* manner For instance, if 2 persons sit together to work out permutations of the four figures 1, 2, 3, 4, each may have a table of different order, although the results of both may happen to be the same Unless the whole order is uniformly maintained, it is impossible to find out the particular position required or to state the number of any particular position given

4 This is quite evident from the fact that even the distinguished mathematicians of the past paid little or no attention to this important and interesting subject For instance, I find a very small combination of 1, 2, 3, worked out in different order in Lilawati and the higher Algebra of Hall and Knight now taught in the English Colleges —

Serial No	Lilawati.			Higher Algebra		My method or Banna Siddhant		Remarks.
	In figures		In letters	In figures	In letters	In figures	In letters	
1	389	123	abc	123	abc	123	abc	*The arrangements are not in any Scientific order i.e. neither ascending nor descending
2	398	132	acb	132	acb	132	acb	
3	893*	231	bca	231*	bca	213	bac	
4	839*	213	bac	213*	bac	231	bca	
5	983*	321	cba	312	cab	312	cab	
6	938*	312	cab	321	cba	321	cba	

5 Thus in Lilawati, the 3rd, 4th, 5th, and 6th positions and in the higher Algebra the 3rd and 4th positions are not in any scientific order, while the beginning in both is correct. Such is the unhappy condition of the smallest combination of 3 figures involving only 6 permutations, not to speak of more figures involving permutations numbering hundreds of thousands or more

6. My method is based on fixed rules which clearly indicate the exact position of each order so that neither the 5th can ever be the 4th order nor the 4th can ever be the 5th order, and so on. Each permutation has its own fixed position It will also be observed that the last order according to my method, is just the reverse of the first order and this is quite a natural process in working out all the possible permutations.

7 My method will be found quite in conformity with the simple and natural order and it dispenses with the necessity of the very complicated Algebraic system It is, therefore, a step further in advance of the discoveries hitherto made in the mathematical researches and it may also prove useful in musical science as well as in regimental or academical amusements,

8 Mixed numbers have also been dealt with by me adopting the simplest formulae I have also added other interesting matter consisting of various poems and proverbs connected with mathematical puzzles, astronomy, mythology, geography, morals and practice in every sphere of life to make the book as attractive and instructive as possible

9 With these few remarks, I venture to place this humble work, ' Ank Vilas " before the learned public for their kind acceptance

Bilaspur, C P

The 9th March 1924

JAGANNATH PRASAD 'BHANU

Retired E A C

Bilaspur, C P.

भूमिका।



जब से मैंने छंद प्रभाकरादि ग्रंथों की रचना की है तब से मैं इस बात का विचार कर रहा था कि जैसे छंदों के प्रस्तारादिक के नियम स्थिर किये गये हैं वैसेही नियम अंकों के भी स्थिर होसके हैं या नहीं। परन्तु अनावकाश के कारण इधर पूर्णरूप से ध्यान नहीं देसका। साम्प्रत कुछ अवकाश मिला तो विचार करतेही श्रीगुरु पिंगलाचार्य्यजी महाराज की पूर्ण कृपा दृष्टि हुई और ये सब नियम सरलतापूर्वक बन गये जिन्हें अब मैं ग्रन्थ के रूप में सजाकर विद्वज्जनों की सेवा में उपस्थित करता हूं।

२ आजकल पाठशालाओं में जो अंकगणित और बीजगणित की हिन्दी या अंगरेजी पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, उनमें इस अंक पाश विद्या की ओर ध्यानही नहीं दिया गया है। हां, इतना तो अवश्य है कि अमुक अंक-समूह के इतने भेद हो सकते हैं, इसका उनमें विधान है। परन्तु उनका प्रस्तार कैसा निकाला जावे, प्रस्तारान्तर्गत अमुक भेद का रूप कैसा होगा या दिये हुये रूप की अनुक्रम संख्या क्या है, इन बातों का कहीं उल्लेख नहीं पाया जाता। सबसे प्राचीन ग्रंथ लीलावती में भी प्रस्तारादि के नियम नहीं दिये गये हैं। हां, एक स्थान पर तीन अंकों का प्रस्तार मिलता है। परन्तु वह भी क्रम पूर्वक नहीं है। संभव है कि वह टीकाकार की करामात या कल्पनाहो क्योंकि मूल श्लोक में तो उसका पताही नहीं। अस्तु, इसी अभाव की पूर्ति के लिये यह ग्रंथ लिखा गया है यदि कोई गणितज्ञ महाशय इससे भी और कोई सुलभ रीति निकाल कर प्रकाशित करेंगे तो वे अवश्य धन्यवाद और सुयश के भागी होंगे। अंकपाश विद्या द्वारा संगीत विषयक सप्तस्वरों के भेदोपभेद तथा उनके भिन्न भिन्न रूप भी तत्काल ज्ञात हो सकते हैं। पाठशालाओं में भी मनोरंजनार्थ नाना प्रकार की शिक्षाएं (कवायद) हो सकती हैं।

३ इस ग्रंथ में गूढ़ वैज्ञानिक शब्दों के बदले सर्व साधारण के समझने योग्य सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है, जैसे —

अंगरेजी	वैज्ञानिक	इस ग्रंथ में
Product	घात	गुणनफल
Combinations	एकादि भेद	अंक समूह या मूलांक
Permutations	अंक पाश	मूलांक के आंतरिक भेद
Quotient	भजनफल	लब्धि
Direct	अनुलोम	सरलगति
Converse	प्रतिलोम, विलोम व्यतिक्रम, उत्क्रम	विषमगति

अंत में पाठकों के मनोरंजनार्थ नव अंक का माहात्म्य, अंगरेजी तारीखों से

पार निकालने के नियम कुछ कौतुकांक और एक वृहत् अंक पहाड़ा भी सम्मिलित कर दी गई है, जिसमें १ अंक से लेकर परार्ध (आधुनिक शंख) संख्या तक गणित ज्योतिष, पुराण भूगोल तथा व्यवहार सम्बन्धी अनेक मनोरंजक और शिक्षाप्रद उदाहरण दिये हैं जो विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं इनके पठन-पाठन में [illegible] थोड़ा विनोद अवश्य होगा और अंक सम्बन्धी कविता कंठस्थ करने से विद्यार्थियों की बुद्धि भी तीव्र होगी। प्रश्न करने पर जो जितने अधिक पद इस ग्रंथ से या इसके अतिरिक्त अपनी कल्पना से और भी कह और लिख सकेगा वह दूसरे की अपेक्षा उतना ही अधिक प्रवीण और सभा चतुर समझा जावेगा। इन्हीं समस्त बातों को विचारकर मैंने इस ग्रंथ का नाम "अंकविलास" रखा है। यदि इससे पाठकों को कुछ भी लाभ होगा तो मैं अपने को कृतकृत्य समझूंगा।

इस ग्रंथ को प्रारंभिक अवस्था में साहित्य प्रेमी श्रीयुत गोवर्धनदास जी अगरवाला, बी ए एक्जिक्यूटिव इंजिनियर मध्यप्रदेश ने मुझे सहायता दी एतदर्थ उनको अनेक धन्यवाद देता हूं।

बिलासपुर,
ता: ९ मार्च १९२४

विनीत,
जगन्नाथप्रसाद (भानु)

सूचीपत्र।



॥ श्रीगणेशायनमः ॥



मंगलाचरणम्

श्री गुरु पिंगलरायके, चरण बंदि अभिराम ।
भानु मुदित अंकित करत, अंक बिलास ललाम ॥१॥
अंकमयो यह जगत है, अंकहि परम प्रकाश ।
अंक ज्ञान बिन जगत में, नाहिन बुद्धि विकाश ॥२॥
अंक उलटि अंकहि हरो, तो माया अलगाय ।
शुद्ध ब्रह्म नव रूप में, दरशत हिय हरषाय ॥३॥

यथा—७३-३७=३६=९

नव व्यापक सब अंक में, ब्रह्म जीव सम लेख ।
ज्ञान चक्षु लखि लीजिये, चर्म चक्षु नहिं देख ॥४॥
इक नव मिलि उन्नीस है, तिनके दस रहिजात ।
दसके पुनि एकहि रहत, एकहि एक लखात ॥५॥

यथा—१९, १+९=१०, १+०=१

काव्य प्रभाकर में लिख्यो, नव महिमा उल्लास ।
अंक बिलासहि अब लिखत, बुध जन बुद्धि बिलास ॥६॥
अंक शास्त्र प्रवेश हिय, हुइहै परम प्रमोद ।
काव्य रसिक गुणवन्त कर, सहजहि बुद्धि विनोद ॥७॥
'राम नाम इक अंक है, सब साधन है सून' ।
'अंक गये कछु हाथ नहि, अंक रहे दसगून' ॥८॥
मर्म सु अंक बिलास को, समुझत परमानन्द ।
भाग्यवन्त बुधिवन्त लह, भक्ति सच्चिदानन्द ॥९॥

सरलांक प्रस्तार लिखने के पूर्व मात्राओ, वर्णों और अकों के भेदोपभेद का नीचे एक तुलनात्मक कोष्ठक लिखते हैं —

सख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मात्रा	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५
वर्ण	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२
अक	१	२	६	२४	१२०	७२०	५०४०	४०३२०	३६२८८०

मात्राओ और वर्णों के भेदोपभेदो का ज्ञान पिंगल के ग्रथो मे वा मेरे रचित छंद प्रभाकर ग्रथ के देखने से हो सकता है और अंको के ज्ञानार्थ यही अक विलास ग्रंथ आपकी सेवा मे उपस्थित है

अकसमूह वा मूलांक (Combination)
अकपाश वा आतरिक भेद (Permutations)

भिन्नाङ्क प्रस्तार भेद

अक १ से लेकर ९ तक हैं। शून्य की गणना अको मे नहीं है।

(१) सूची

(Index or Indicator of Permutations)

प्रत्येक अक समूहके जितने भेद हो सके हैं उनके जानने की विधिको सूची कहते हैं .—

एक, एक, दो दो रहै, त्रय षट, चौ चौबीस।
पंच एक सौ बीस पुनि, छहो सात सौ बीस॥
सात अक के भेद है, पंच सहस चालीस।
पृथक् पृथक् सब अंक की, सूची भल जगदीस॥

अक	१	२	३	४	५	६	७
भेद सख्या	१	२	६	२४	१२०	७२०	५०४०

ऐसेही—८=४०,३२०, ९=३,६२,८८०।

(१) एक अक के भेद को, अगले ते गुनि लेव।
गुणन फलहिं सम जानिये, सकल भेद के भेव॥
जैसे.—२ के २×३=६ तो ४ के ६×४=२४

२ भिन्नांकों के भेद २

(१) १ २ लग (लघु गुरु)
(२) २ १ गल (गुरु लघु)

३ भिन्नाकों के भेद ६

(२) श्लोकः—लोमगं लुग्म मालागम् । मगलं गुल्म गोमलम् ॥
अंकत्रय विभिन्नच । प्रस्तारादिषु योजयेत् ॥

(संकेताक्षर) ल=लघु अंक । म=मध्यम अंक । ग=गुरु अंक ।

(३) लकारो लघु सज्ञस्स्यात् । मकारो मध्यमस्तथा ॥
गकारो गुरु मतव्यः । प्रस्तारादिक सूचकाः ॥

(१) १ २ ३ लोमग=लघु, मध्यम, गुरु ।
(२) १ ३ २ लुग्म=लघु, गुरु, मध्यम ।
(३) २ १ ३ मालागम्=मध्यम, लघु, गुरु ।
(४) २ ३ १ मगल=मध्यम, गुरु, लघु ।
(५) ३ १ २ गुल्म=गुरु, लघु, मध्यम ।
(६) ३ २ १ गोमलम्=गुरु, मध्यम, लघु ।

(४) लोमग प्रथम मन्ये, लागमश्च द्वितीयकम् ।
मालागतु तृतीय स्यात्, मगलच चतुर्थकम् ।
गुल्मच पचम प्रोक्त, गमल षष्ट सूचकम् ।
अंकत्रय विभिन्नच, षड्भेदाः कथिताः क्रमात् ।

(५) ध्यान रहे कि तीनो अंक पृथक पृथक् हो, ऐसे तीन अंको में जो सब से लघु हो उसे " ल " समझो, जो मध्यम हो उसे " म " समझो, और जो सब से बडा अर्थात् गुरु हो उसे " ग " समझो। तीनों अंक सहित जो सब से छोटा रूप बन सकता हो वही सरल अर्थात् प्रथम भेद होगा। नीचे छहों भेद लिखते हैं।

भेद	अंक	अंक	अंक	अंक	अंक	अंक	संज्ञानुसार भेद
१	१२३	२६७	३८९	४७९	५७८	६७९	लमग (पहिला)
२	१३२	२७६	३९८	४९७	५८७	६९७	लगम (दुसरा)
३	२१३	६२७	८३९	७४९	७५८	७६९	मलग (तीसरा)
४	२३१	६७२	८९३	७९४	७८५	७९६	मगल (चौथा)
५	३१२	७२६	९३८	९४७	८५७	९६७	गलम (पाचवां)
६	३२१	७६२	९८३	९७४	८७५	९७६	गमल (छठा)

(६) एक अंक दोबार न हो-जैसे-११२ वा १२२।
(७) प्रथम भेद का उल्टा अंतिम भेद होगा।
(८) यदि अंको के सिवाय किन्हीं अक्षरों, फूल, फल, रंग वा अन्य वस्तुओं का प्रस्तार करना हो तो प्रत्येक में १, २, ३ इत्यादिक मूल्य निर्धारित करना होगा।
(९) पहिला पंक्ति में जो ऊपर से नीचे जाती है ल, ल, म, म, ग, ग अवश्य क्रमानुसार आवेंगे अर्थात् १, १, २, २, ३, ३।

उपरोक्त नियमों को दूसरी प्रकार से समझाते हैं।

(१) १ २ ३ लमग—लोमागो इक प्रभु पद प्रीति।
(२) १ ३ २ लगम—लोगोमें दुविधा अनरीति॥
(३) २ १ ३ मलग—मोलग त्रिभुवन पति उपकार।
(४) २ ३ १ मगल—मगल चारों फल दातार॥
(५) ३ १ २ गलम—गेलमजु पचन की भार।
(६) ३ २ १ गमल—गोमाला पद्द हरै विकार॥

पुनश्च

(१०) अंग अंग लीला मम गंग, विषम घटै सम बढै तरंग।
तीन अंक प्रस्तार प्रसंग, नष्टोद्दिष्ट एकही संग॥

अंग=वेद के छै अंग, अंग अंग=प्रत्येक अंग। लीला ममगग=आदि पंक्ति जो ऊपर से नीचे की ओर जाती है उसमें क्रमानुसार ल, ल, म, म, ग, ग होते हैं। विषम घटै=विषम भेदों मे (१, ३, ५) तरंगें घट जाती हैं और सम बढ़ै=सम भेदों में (२, ४, ६) तरंगें बढ़ जाती हैं यथा.—

१ विषम में २३, तो २ सम में उलटकर ३२
३ विषम में १३, तो ४ सम में उलटकर ३१
५ विषम में १२, तो ६ सम में उलटकर २१

विषम और सम में सदा ९ का अन्तर रहता है यथा.—

२३, ३२ अन्तर—९
१३, ३१ अन्तर—१८, १+८=९
१२, २१ अन्तर—९

नष्टोद्दिष्ट=इन्हीं तीन अंको के प्रस्तार प्रसंग मे **'लीला मम गंग'** रूपी सूत्र या मंत्र के प्रभाव से नष्ट और उद्दिष्ट भी एकही साथ सिद्ध होते हैं जिनका विस्तृत वर्णन आगे लिखा जायगा।

नष्ट=रूप न देकर पूछना कि अमुक भेद का रूप कैसा होगा।
उद्दिष्ट=रूप देकर पूछना कि यह कौनसा भेद है।

पुनश्च

शीघ्र बोधार्थ अब आदि के दो दो अक्षरों में भी तीन अंको के छओ भेद लिखते हैं।

जमेक, जगद्धै, मलत्तीनजान, मगशो, गलप्पच, गमछै, प्रमान
लम १, लग २, मल ३, मग ४, गल ५, गम ६।

(२) प्रस्तार

Expansion of Permutations

प्रथम अंक गति विषम लगाय, तिनको लिखो सरल गति भाय।
सरल गती कर, यहै प्रमान, बायें लघु दाये गुरु जान। *
जेतिक अंक, तितेई अंश, भिन्न अंक कर उज्ज्वल वंश।
अंतिम तजि सूची शिर धार, सूची क्रम लगि अंक सुधार।
प्रथम पंक्ति अंशन-प्रति अंक,-क्रम तें-लखि लखि-लिखो निशंक।
अन्य पंक्ति में पूर्व्व विहाय, अंक सूचि क्रम तें लिख जाय।
याही गती सब अंक निहार, तबही जान अंत प्रस्तार।
अंतिम ह्वै कर उलट प्रसंग, विषम घटै, सम बढ़ै तरंग।

लिखिये जो कि सरलगति क्रमावली की सर्वदा प्रथम भेद है। जितने भिन्नांक हों उतने ही अंश होंगे यथा —

३ अंक के तीन अंश ४ अंक के ४ अंश वैसे ही ५ अंक के ५ अंश होंगे।

प्रस्तार करने के पूर्व जितने अंकों का प्रस्तार करना हो उनके ऊपर अंतिम स्थान छोड़कर वाम गति से सूची के अंक लिखो यथा —

६ २ १ ०

१ २ ३ ४.

अब १ की जो प्रथम पंक्ति है उसके ऊपर ६ का अंक है इसलिये १ के नीचे पहिले अंश मे अर्थात् ६ स्थान तक १, १ फिर दूसरे अंश मे (अर्थात् ७ से १२ तक) २, २ फिर तीसरे अंश मे (१३ से १८ तक) ३, ३ और चौथे अंश में (१९ से २४ तक) ४, ४ भर जाव, पहिली पंक्ति भर गई।

अब दूसरी पंक्ति में २ है और २ के ऊपर सूची अंक भी २ है। प्रथम पंक्ति में पहिले १ का अंक आ गया है इसलिये १ को छोड़कर दूसरी पंक्ति के पहिले अंश में २-२, ३-३, ४-४ लिखो पहिली पंक्ति के दूसरे अंश में पहिले २ आ चुका है अतएव २ को छोड़कर दूसरी पंक्ति के दूसरे अंश में १-१, ३-३, ४-४ लिखो, पहिली पंक्ति के तीसरे अंश में पहिले ३ का अंक आ चुका है इसलिये ३ को छोड़कर दूसरी पंक्ति के तीसरे अंश में १-१, २-२, ४-४ लिखो, पहिली पंक्ति के चौथे अंश में पहिले ४ आ चुका है इसलिये ४ को छोड़कर दूसरी पंक्ति के चौथे अंश में १-१, २-२, ३-३ लिखो अब दूसरी पंक्ति भी भर गई॥

* विषमगति	सरलगति (प्रथमभेद)
१ ३ २ ४	१ २ ३ ४
१ ५ ३ २ ४	१ २ ३ ४ ५

☞ पंक्ति वह है जो ऊपर से नीचे की ओर जाता है।

अब तीसरी और चौथी पंक्ति का भरना है, दो शेषाङ्क में से न्यूनगत को विषमाङ्क क्रम में और वृद्धिगत को समाङ्क क्रम में रखा यथा-३४ यह न्यूनगत है यह पहले विषमाङ्क में होगा यही पलटकर अर्थात् ४३ होकर दूसरे समाङ्क में आवेगा।

विषमाङ्क वह है जिसमें दो का भाग न जासके जैसे २३ और समाङ्क वह है जिसमें दो का भाग लग जाय जैसे २४.

अंतिम भेद सदा पहिले भेद के विपरीत होगा ऐसेही सर्वत्र जानो।

चार अंकों का प्रस्तार जैसे १२३४

	भेद	अंकों में: प्रथम पंक्ति	दूसरी पंक्ति	तीसरी पंक्ति	चौथी पंक्ति	स्वरों में: प्रथम पंक्ति	दूसरी पंक्ति	तीसरी पंक्ति	चौथी पंक्ति
प्रथमांश	१	१	२	३	४	स	रि	ग	म
	२	१	२	४	३	स	रि	म	ग
	३	१	३	२	४	स	ग	रि	म
	४	१	३	४	२	स	ग	म	रि
	५	१	४	२	३	स	म	रि	ग
	६	१	४	३	२	स	म	ग	रि
द्वितीयांश	७	२	१	३	४	रि	स	ग	म
	८	२	१	४	३	रि	स	म	ग
	९	२	३	१	४	रि	ग	स	म
	१०	२	३	४	१	रि	ग	म	स
	११	२	४	१	३	रि	म	स	ग
	१२	२	४	३	१	रि	म	ग	स
तृतीयांश	१३	३	१	२	४	ग	स	रि	म
	१४	३	१	४	२	ग	स	म	रि
	१५	३	२	१	४	ग	रि	स	म
	१६	३	२	४	१	ग	रि	म	स
	१७	३	४	१	२	ग	म	स	रि
	१८	३	४	२	१	ग	म	रि	स
चतुर्थांश	१९	४	१	२	३	म	स	रि	ग
	२०	४	१	३	२	म	स	ग	रि
	२१	४	२	१	३	म	रि	स	ग
	२२	४	२	३	१	म	रि	ग	स
	२३	४	३	१	२	म	ग	स	रि
	२४	४	३	२	१	म	ग	रि	स

स रि ग म
१ २ ३ ४

व्याख्या

	प्रस्तांक	प्रथम भेद सरल गति	अंतिम भेद उलटी गति	कुल भेद	इतना प्रस्तार किन अंकों के अनुसार निकाला जायगा
समांक	१२३४	१२३४	४३२१	२४	१२३४
"	५६७८	५६७८	८७६५	२४	१२३४
विषमांक	३४२५	१२३४	४३२१	२४	१२३४
"	५७६८	५६७८	८७६५	२४	१२३४
"	५३२४६	२३४५६	६५४३२	१२०	१२३४५
"	४६५८७	४५६७८	८७६५४	१२०	१२३४५

अंश

अंक जिते अगहु तिते, पृथक् पृथक् यदि अंक।
प्रथम पंक्ति में अंश प्रति, क्रम तें धरहु निशंक॥

अंक	१	२	३	४	५	६	७	
अंश	१	२	३	४	५	६	७	
अंश विभाग	१	१	२	६	२४	१२०	७२०	प्रति अंश संख्या
		१	२	६	२४	१२०	७२०	तथा
			२	६	२४	१२०	७२०	तथा
				६	२४	१२०	७२०	तथा
					२४	१२०	७२०	तथा
						१२०	७२०	तथा
							७२०	तथा
जोड़	१	२	६	२४	१२०	७२०	५०४०	

इति श्री अंकविलासे भानुकवि विरचिते भिन्नांक सूची-प्रस्तार वर्णननाम प्रथमोविलास.॥

प्रस्तार सिद्धांत

३ से ७ अंकों तक का प्रस्तार

व्याख्या । प्रस्तार के प्रत्येक भेद में अन्त के दो अंकों की विधि —

(विषम संख्या में कम)	(सम संख्या में अधिक)
जैसे २१ में १२	जैसे २७ में ३१
जैसे २३ में १२	जैसे २४ में २१

अंक (भेद)	क्रम	विधि
७ (५०४०)	१	प्रति अंश में १-२-३-४-५-६-७ के प्रत्येक अंक क्रम से ७२०-७२० बार
	२	पूर्वांक छोड़कर २-३-४-५-६-७ क्रम से १२०-१२० बार
	३	पूर्वांक छोड़कर ३-४-५-६-७ क्रम से २४-२४ बार
	४	पूर्वांक छोड़कर ४-५-६-७ क्रम से ६-६ बार
	५	पूर्वांक छोड़कर ५-६-७ क्रम से २-२ बार
	६	अंतिम ६-७ वा अन्य शेषांक उलट पुलट कर
	७	विषम में कम, सम में अधिक।
६ (७२०)	१	प्रति अंश में १-२-३-४-५-६ के प्रत्येक अंक क्रम से १२०-१२० बार
	२	पूर्वांक छोड़कर २-३-४-५-६ क्रम से २४-२४ बार
	३	पूर्वांक छोड़कर ३-४-५-६ क्रम से ६-६ बार
	४	पूर्वांक छोड़कर ४-५-६ क्रम से २-२ बार
	५	अंतिम ५-६ वा अन्य शेषांक उलट पुलट कर
	६	विषम में कम, सम में अधिक।
५ (१२०)	१	[illegible] में
	२	[illegible] से ६- [illegible]
	३	छोड़कर [illegible] से २-२ [illegible]
	४	[illegible] अन्य [illegible] उलट कर
	५	विषम में कम, सम में अधिक।
४ (२४)		[illegible]
३ (६)		[illegible]

५ अंकोंका प्रस्तार, प्रत्येक अंश २४, २४ के, कुल भेद १२०

पहिला अंश					
१	१	२	३	४	५
२	१	२	३	५	४
३	१	२	४	३	५
४	१	२	४	५	३
५	१	२	५	३	४
६	१	२	५	४	३
७	१	३	२	४	५
८	१	३	२	५	४
९	१	३	४	२	५
१०	१	३	४	५	२
११	१	३	५	२	४
१२	१	३	५	४	२
१३	१	४	२	३	५
१४	१	४	२	५	३
१५	१	४	३	२	५
१६	१	४	३	५	२
१७	१	४	५	२	३
१८	१	४	५	३	२
१९	१	५	२	३	४
२०	१	५	२	४	३
२१	१	५	३	२	४
२२	१	५	३	४	२
२३	१	५	४	२	३
२४	१	५	४	३	२

दूसरा अंश					
२५	२	१	३	४	५
२६	२	१	३	५	४
२७	२	१	४	३	५
२८	२	१	४	५	३
२९	२	१	५	३	४
३०	२	१	५	४	३
३१	२	३	१	४	५
३२	२	३	१	५	४
३३	२	३	४	१	५
३४	२	३	४	५	१
३५	२	३	५	१	४
३६	२	३	५	४	१
३७	२	४	१	३	५
३८	२	४	१	५	३
३९	२	४	३	१	५
४०	२	४	३	५	१
४१	२	४	५	१	३
४२	२	४	५	३	१
४३	२	५	१	३	४
४४	२	५	१	४	३
४५	२	५	३	१	४
४६	२	५	३	४	१
४७	२	५	४	१	३
४८	२	५	४	३	१

तीसरा अंश					
४९	३	१	२	४	५
५०	३	१	२	५	४
५१	३	१	४	२	५
५२	३	१	४	५	२
५३	३	१	५	२	४
५४	३	१	५	४	२
५५	३	२	१	४	५
५६	३	२	१	५	४
५७	३	२	४	१	५
५८	३	२	४	५	१
५९	३	२	५	१	४
६०	३	२	५	४	१
६१	३	४	१	२	५
६२	३	४	१	५	२
६३	३	४	२	१	५
६४	३	४	२	५	१
६५	३	४	५	१	२
६६	३	४	५	२	१
६७	३	५	१	२	४
६८	३	५	१	४	२
६९	३	५	२	१	४
७०	३	५	२	४	१
७१	३	५	४	१	२
७२	३	५	४	२	१

चौथा अंश					
७३	४	१	२	३	५
७४	४	१	२	५	३
७५	४	१	३	२	५
७६	४	१	३	५	२
७७	४	१	५	२	३
७८	४	१	५	३	२
७९	४	२	१	३	५
८०	४	२	१	५	३
८१	४	२	३	१	५
८२	४	२	३	५	१
८३	४	२	५	१	३
८४	४	२	५	३	१
८५	४	३	१	२	५
८६	४	३	१	५	२
८७	४	३	२	१	५
८८	४	३	२	५	१
८९	४	३	५	१	२
९०	४	३	५	२	१
९१	४	५	१	२	३
९२	४	५	१	३	२
९३	४	५	२	१	३
९४	४	५	२	३	१
९५	४	५	३	१	२
९६	४	५	३	२	१

पाँचवाँ अंश					
९७	५	१	२	३	४
९८	५	१	२	४	३
९९	५	१	३	२	४
१००	५	१	३	४	२
१०१	५	१	४	२	३
१०२	५	१	४	३	२
१०३	५	२	१	३	४
१०४	५	२	१	४	३
१०५	५	२	३	१	४
१०६	५	२	३	४	१
१०७	५	२	४	१	३
१०८	५	२	४	३	१
१०९	५	३	१	२	४
११०	५	३	१	४	२
१११	५	३	२	१	४
११२	५	३	२	४	१
११३	५	३	४	१	२
११४	५	३	४	२	१
११५	५	४	१	२	३
११६	५	४	१	३	२
११७	५	४	२	१	३
११८	५	४	२	३	१
११९	५	४	३	१	२
१२०	५	४	३	२	१

६ और ७ अकों के प्रस्तारों का दिग्दर्शन ।

६ अकोंका प्रस्तार प्रत्येक अश १२०, १२०के, कुलभेद ७२०

१	१	२	३	४	५	६	२५	१	३	२	४	५	६
२	१	२	३	४	६	५	२६	१	३	२	४	६	५
३	१	२	३	५	४	६	२७	१	३	२	५	४	६
४	१	२	३	५	६	४	२८	१	३	२	५	६	४
५	१	२	३	६	४	५	२९	१	३	२	६	४	५
६	१	२	३	६	५	४	३०	१	३	२	६	५	४
७	१	२	४	३	५	६	३१	१	३	४	२	५	६
८	१	२	४	३	६	५	३२	१	३	४	२	६	५
९	१	२	४	५	३	६	३३	१	३	४	५	२	६
१०	१	२	४	५	६	३	३४	१	३	४	५	६	२
११	१	२	४	६	३	५	३५	१	३	४	६	२	५
१२	१	२	४	६	५	३	३६	१	३	४	६	५	२
१३	१	२	५	३	४	६	३७	१	३	५	२	४	६
१४	१	२	५	३	६	४	३८	१	३	५	२	६	४
१५	१	२	५	४	३	६	३९	१	३	५	४	२	६
१६	१	२	५	४	६	३	४०	१	३	५	४	६	२
१७	१	२	५	६	३	४	४१	१	३	५	६	२	४
१८	१	२	५	६	४	३	४२	१	३	५	६	४	२
१९	१	२	६	३	४	५	४३	१	३	६	२	४	५
२०	१	२	६	३	५	४	४४	१	३	६	२	५	४
२१	१	२	६	४	३	५	४५	१	३	६	४	२	५
२२	१	२	६	४	५	३	४६	१	३	६	४	५	२
२३	१	२	६	५	३	४	४७	१	३	६	५	२	४
२४	१	२	६	५	४	३	४८	१	३	६	५	४	२

७ अकोंका प्रस्तार, प्रत्येक अश ७२०, ७२० के, कुलभेद ५०४०

१	१	२	३	४	५	६	७	२५	१	२	४	३	५	६	७
२	१	२	३	४	५	७	६	२६	१	२	४	३	५	७	६
३	१	२	३	४	६	५	७	२७	१	२	४	३	६	५	७
४	१	२	३	४	६	७	५	२८	१	२	४	३	६	७	५
५	१	२	३	४	७	५	६	२९	१	२	४	३	७	५	६
६	१	२	३	४	७	६	५	३०	१	२	४	३	७	६	५
७	१	२	३	५	४	६	७	३१	१	२	४	५	३	६	७
८	१	२	३	५	४	७	६	३२	१	२	४	५	३	७	६
९	१	२	३	५	६	४	७	३३	१	२	४	५	६	३	७
१०	१	२	३	५	६	७	४	३४	१	२	४	५	६	७	३
११	१	२	३	५	७	४	६	३५	१	२	४	५	७	३	६
१२	१	२	३	५	७	६	४	३६	१	२	४	५	७	६	३
१३	१	२	३	६	४	५	७	३७	१	२	४	६	३	५	७
१४	१	२	३	६	४	७	५	३८	१	२	४	६	३	७	५
१५	१	२	३	६	५	४	७	३९	१	२	४	६	५	३	७
१६	१	२	३	६	५	७	४	४०	१	२	४	६	५	७	३
१७	१	२	३	६	७	४	५	४१	१	२	४	६	७	३	५
१८	१	२	३	६	७	५	४	४२	१	२	४	६	७	५	३
१९	१	२	३	७	४	५	६	४३	१	२	४	७	३	५	६
२०	१	२	३	७	४	६	५	४४	१	२	४	७	३	६	५
२१	१	२	३	७	५	४	६	४५	१	२	४	७	५	३	६
२२	१	२	३	७	५	६	४	४६	१	२	४	७	५	६	३
२३	१	२	३	७	६	४	५	४७	१	२	४	७	६	३	५
२४	१	२	३	७	६	५	४	४८	१	२	४	७	६	५	३

विस्तार भय से आगे के भेद नहीं लिखे गये ।

सू० ध्यान रहे कि प्रत्येक भेद एक दूसरे से अधिक संख्या में रहे ।

इति श्रीअकविलासे भानुकवि विरचिते प्रस्तार
सिद्धान्तवर्णनन्नाम द्वितीयो विलासः ॥

(३) नष्ट वर्णन ।

(Negative Demonstration)

(अमुक भेद को रूप किमि, प्रश्न कहावै नष्ट)
नष्ट जिते अङ्कन को पेख, तितने अंक सरल गति लेख।
सूची तिन पर लिखौ सुजान, अंतिम छाडि वाम गतिमान ॥१॥
वाम अंत जो सूची अंक, प्रथमहिं तिहितें भाजि निशंक।
जब लग शेष रहे तर लागि, सूचि क्रमहि ते दीजे भाग ॥ २ ॥
शेष जहां लब्धी जुर एक, लब्धि शून्य तउ लीजे एक।
जो जो अंक लब्धि सो सिद्ध, क्रमतें तिनहीं लिखौ प्रसिद्ध ॥ ३ ॥
लिये अंक चिन्हित करि देव, आगिल क्रम में उन्हें न लेव।
अथवा शेष अंक लिखि लेव, आगिल क्रम में परे न भेव ॥ ४ ॥
अथवीचही भाग जह पूर, शेष अंक उलटी गति पूर।
सावधान ह्वै पालो रीति, सुयश लहो जो हरि पद प्रीति ॥ ५ ॥
विषम प्रश्न उत्तर के अन्त, दोय सरल गति अंक लसन्त। *
सम प्रश्नहिं उत्तर के अंत, विषम गती दो अंक लसत ॥ ६ ॥

(४) उद्दिष्ट वर्णन ।

(Positive Demonstration)

(दिये अंक को भेद कहु, सोई है उद्दिष्ट)
सुनिये उद्दिष्टहिं की रीति, जासो मन में होय प्रतीत।
त्रयतें अधिक अंक के भेद, अंतिम तीन तजौ बिन खेद ॥१॥
ये हैं बोध करावन हार, इक तें षट लगि गति अनुसार।
अंतिम तजि सूची सिर धार, क्रमतें इक द्वै छै अनुसार ॥२॥

---

* (विषमाक भेद) १, ३, ५, ७ इत्यादि
(समाक भेद) २, ४, ६, ८ इत्यादि
सरलगति—यथा—२७, १७, २८, ३६ (लग)
विषमगति—यथा—७२, ७१, ८२, ६३ (गल)
प्रमाण
विषम घटै सम बढै ताग।

चहु में पहिले ते इकहीन, शेष रुचि तें गुणहु प्रवीन।
पच सीधे रवि उलट महेश, दोय अंक को इत आदेश ॥३॥
छै सों नव लगि एकहि रीति, सीधे रवि उलटे हर प्रीति।
अंतल इक अतम पुनि दोय, अंतग तीन जानिये सोय* ॥४॥
चौथो पचम अरु पट अंक, वामे लघुतर गिनौ निशंक।
गिनती माहि अधिक इक लेव, ताही अंक तरे धरि देव ॥५॥
जहां शून्य तहँ एकहि धार, शेषहिं गुनौ सूचि अनुसार।
लमगादिक सूत्रहि को अंग, जोरि उदिष्टहिं लहौ उमंग ॥६॥
नष्टोदिष्ट उभय की रीति, प्रश्नहिं जाचो होय प्रतीत।
इक तें नव लगि सख्या जानु, सब उदिष्ट कहे कवि भानु ॥७॥

उद्दिष्ट के नीचे घटने वाले अंकों की दूसरी सुगम रीति।—

आदि अंक तें एक घटाव, दाहिन के पुनि सुनहु प्रभाव।
वाम ओर जेतिक लघु देख, तिन मँह जोरिय एक विसेख ॥
वाम ओर एकहु लघु नांय, तौहू एक घटैये भाय।
शेष नियम पहिले कहि दीन, थोरे मँह समुझिहैं प्रवीन ॥

सूचना।—दोनों रीतियों का परिणाम एकही है। ध्यान रहे कि जहा तीन से अधिक अंक हों वहा अन्त के तीन अंक सर्वदा त्यक्त हैं इनकी संख्या 'लमग' क्रमानुसार पीछे से जोड लीजाती है॥

इति श्रीअंकविलासे भानुकवि विरचिते नष्टोद्दिष्ट वर्णनंनाम तृतीयो विलास।

---

* आदि के तीन अंकों मे जहा अन्त मे लघु हो वहा १ जहा अन्त मे मध्यम हो वहा २ और जहा अन्त मे गुरु हो वहा ३ घटावो।

नष्ट

प्र०—५ अंकों में ९५ भेद कैसा होगा ?

२४ ६ २ १ ०
१ २ ३ ४ ५

२४) ९५ (३+१=४ चौथा अंक ४
७२ (रहे १२३५)

६) २३ (३+१=४ चौथा अंक ५
१८ (रहे १२३)

२) ५ (२+१=३ तीसरा अंक ३
४ (रहे १२)

१) १ (१= १ पहिला अंक १
१ शेष २
०

उत्तर= ४५३१२

उद्दिष्ट

प्र०—५ अंकों में ४५३१२ कौनसा भेद है ?

२४ ६ २ १ ०
४ ५ ३ १ २
−१ २
३ ३

३×२४= ७२
३×६= १८
३१२=गलम= ५
९५

प्र०—पहिले दो अंकों से १२ क्यों घटाये ?
उ०—सीधे रवि

उत्तर= ९५वां

६ अंकों के ७२० भेद

प्र०—६ अंकों में ४७५वां भेद कैसा होगा ?

१२० २४ ६ २ १ ०
१ २ ३ ४ ५ ६

१२०) ४७५ (३+१=४ चौथा अंक ४
३६० (रहे १२३५६)

२४) ११५ (४+१=५ पांचवां अंक ६
९६ (रहे १२३५)

६) १९ (३+१=४ चौथा अंक ५
१८ (रहे १२३)

२) १ (०= १ पहिला अंक १
(रहे २३)

१) १ (१= १ पहिला अंक २
१ शेष ३
०

उत्तर= ४६५१२३

प्र०—६ अंकों में ४६५१२३ कौन भेद है ?

१२० २४ ६ २ १ ०
४ ६ ५ १ २ ३
−१ २ २
३ ४ ३

३×१२०= ३६०
४×२४= ९६
३×६= १८
१२३=जमग= १
४७५

प्र०—तीसरे अंक से २ क्यों घटाये ?
उ०—पहिले तीन अंकों में ५ मध्यम है, अतम=२

उत्तर= ४७५वां

५ अंक के-१२० भेद

प्रश्न- ५ अंको मे ८६वा भेद कैसा होगा ?

```
          २४ ६ २ १ ०
          ----------
           १ २ ३ ४ ५
२४) ८६ (३+१=४ चौथा अंक      ४
    ७२        (रहे १२३५)
    --
 ६) १७ (२+१=३ तीसरा अंक     ३
    १२        (रहे १२५)
    --
 २) ५ (२+१=३ तीसरा अंक      ५
    ४         (रहे १२)
    --
 १) १ (१=१    पहिला अंक     १
    १         शेष रहे       २
    --
    ०
              उत्तर=   ४३५१२
```

प्रश्न-५ अंको में ४३५१२ कौनसा भेद है!

```
   २४ ६ २ १ ०
    ४ ३ ५ १ २
   -१ १
   -----
    ३ २
    ३×२४=      ७२
     २×६=      १२
  ५१२=गलम=      ५
              ----
               ८६
```

प्र०-पहिले दो अंको से ११ क्यो घटाये?
उ०-उलटे ६१=११

उत्तर= ८६वां

प्र०-५ अंको में ६०वा भेद कैसा होगा ?

```
          २४ ६ २ १ ०
          ----------
           १ २ ३ ४ ५
२४) ६० (२+१=३ तीसरा अंक है ३
    ४८        (रहे १२४५)
    --
 ६) १२ (२=२   दूसरा अंक है २
    १२        (रहे १४५)
    --
    ०
  शून्य रहा पूरा भाग }
  लगा, उलटा क्रम     }   ५४१

              उत्तर=  ३२५४१
```

प्र०-५ अंकों मे ३२५४१ कौनसा भेद है?

```
   २४ ६ २ १ ०
    ३ २ ५ ४ १
   -१ १
   -----
    २ १
    २×२४=      ४८
     १×६=       ६
  ५४१=गमल=      ६
              ----
                ६०

  उत्तर=      ६०वां
```

८ अंकों के ४०३२० भेद

प्र०—८ अंकों में २७१११वां भेद कैसा होगा ?

```
      ५०४० ७२० १२० २४ ६ २ १ ०
         १   २   ३  ४ ५ ६ ७ ८

५०४०) २७१११ (५+१=६ छठा अंक ६
      २५२००      (रहे १२३४५७८)
      ------
 ७२०) १९११ (२+१=३ तीसरा अंक ३
      १४४०      (रहे १२४५७८)
      ------
 १२०) ४७१ (३+१=४ चौथा अंक ५
      ३६०        (रहे १२४७८)
      ------
  २४) १११ (४+१=५ पांचवां अंक ८
       ९६        (रहे १२४७)
      ------
   ६) १५ (२+१=३ तीसरा अंक ४
     -१२         (रहे १२७)
      ------
   २) ३ (१+१=२ दूसरा अंक २
      २          (रहे १७)
      ------
   १) १ (१= १ पहिला अंक १
      १       शेष       ७
      ------
      ०
```

उत्तर= ६३५८४२१७

प्र०—८ अंकों में ६३५८४२१७ कौन भेद है ?

```
      ५०४० ७२० १२० २४ ६ २ १ ०
         ६   ३   ५  ८ ४ २ १ ७
        -१   १   २  ४ २
      --------------------------
         ५   २   ३  ४ २

             ५×५०४०=  २५२००
              २×७२०=   १४४०
              ३×१२०=    ३६०
               ४×२४=     ९६
                २×६=     १२
            २१७=गलत=      ३
                     --------
                        २७१११
```

प्र०—पहिले दो अंकों से ११ क्यों घटाये ?
उ०—उलटे हर=११
प्र०—तीसरे से २ क्यों घटाये ?
उ०—पहिले ३ में ५ मध्यम अतम=२
प्र०—चौथे से ४ क्यों घटाये?
उ०—चौथा अंक ८ है उसके पूर्व ५, ३ और ६ तीन लघुतर अंक हैं तीन में १ जोड़ा ४ हुए इसलिये ४ घटाये ?
प्र०—पांचवें अंक से २ क्यों घटाये ?
उ०—पांचवां अंक ४ है, इसके पूर्व १ही लघु है अर्थात् ३, १ लघु में १ और जोड़ा २ हुए इसलिये २ घटाये।

उत्तर= २७१११

प्र०–६ अको मे १४५ भेद कैसा होगा ?

```
            १२० २४ ६ २ १ ०
              १  २ ३ ४ ५ ६
१२०) १४५ (१+१= २  दूसरा अक  २
     १२०           ( रहे १३४५६ )
     ---
 २४) २५ (१+१= २  दूसरा अक  ३
     २४            ( रहे १४५६ )
     ---
  ६) १ (०=   १  पहिला अक   १
                   ( रहे ४५६ )
  २) १ (०=   १  पहिला अक   ४
                   रहे ५६ )
  १) १ (१=   १  पहिला अक   ५
     १             शेष      ६
     ---
     ०
```

उत्तर= २३१४५६

प्र०–६ अकों मे २३१४५६ कौन भेद है

```
   १२० २४ ६ २ १ ०
    २  ३ १ ४ ५ ६
   –१  २ १
   -----------
    १  १ ०
   १×१२०=        १२[illegible]
   १×२४=          २[illegible]
   ४५६=लमग=
   -----------
                 १४[illegible]
```

प्र०–तीसरे अक से १ क्यों घटाया ?

उ०–पहिले तीनों में यही लघु है अंतल=[illegible]

उत्तर= १४५वा[illegible]

७ अंकों के ५०४० भेद

नष्ट

प्र०–७ अको में ३५७१वां भेद कैसा होगा ?

```
             ७२० १२० २४ ६ २ १ ०
              १   २  ३ ४ ५ ६ ७
७२०) ३५७१ (४+१=५ पाचवा अक ५
     २८८०          ( रहे १२३४६७ )
     ----
१२०) ६९१ (५+१=६ छठा अक    ७
     ६००           ( रहे १२३४६ )
     ----
 २४) ९१ (३+१=४ चौथा अक    ४
     ७२            ( रहे १२३६ )
     ----
  ६) १९ (३+१=४ चौथा अक    ६
     १८            ( रहे १२३ )
     ----
  २) १ (०=  १ पहिला अक    १
                   ( रहे २३ )
  १) १ (१=  १ पहिला अक    २
     १             शेष     ३
     ----
     ०
```

उत्तर= ५७४६१२३

उद्दिष्ट

प्र०–७ अकों में ५७४६१२३ कौन भेद है ?

```
   ७२० १२० २४ ६ २ १ ०
    ५   ७  ४ ६ १ २ ३
   –१   २  १ ३
   ----------------
    ४   ५  ३ ३
       ४×७२०=   २८८०
       ५×१२०=    ६००
        ३×२४=     ७२
         ३×६=     १८
     १२३=लमग=      १
   ----------------
                 ३५७१
```

प्र०–पहिले दो अको से १२ क्यो घटाया ?

उ०–क्योकि सीधा क्रम है सीधे रवि १२

प्र०–तीसरे अक से १ क्यो घटाया ?

उ०–क्योकि पहिले तीन अकों में यही लघु है, अतल=१

प्र०–चौथे अक से ३ क्यो घटाया ?

उ०–इस अक के पूर्व २ लघु हैं अर्थात् ४ और ५। २ में १ और जोड़ा तो ३ हुए इसलिये ३ घटाये।

उत्तर= ३५७१वा

८ अंकों के ४०३२० भेद

प्र०—८ अंको में २७१११वां भेद कैसा होगा ?

५०४० ७२० १२० २४ ६ २ १ ०
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

५०४०) २७१११ (५+१=६ छठा अंक ६
२५२०० (रहे १२३४५७८)

७२०) १९११ (२+१=३ तीसरा अंक ३
१४४० (रहे १२४५७८)

१२०) ४७१ (३+१=४ चौथा अंक ५
३६० (रहे १२४७८)

२४) १११ (४+१=५ पांचवा अंक ८
९६ (रहे १२४७)

६) १५ (२+१=३ तीसरा अंक ४
१२ (रहे १२७)

२) ३ (१+१=२ दूसरा अंक २
२ (रहे १७)

१) १ (१= १ पहिला अंक १
१ शेष ७

०

उत्तर= ६३५८४२१७

प्र०—८ अंकों में ६३५८४२१७ कौन भेद है ?

५०४० ७२० १२० २४ ६ २ १ ०
६ ३ ५ ८ ४ २ १ ७
−१ १ २ ४ २

५ २ ३ ४ २

५×५०४०= २५२००
२×७२०= १४४०
३×१२०= ३६०
४×२४= ९६
२×६= १२
२१७=आलग= ३

२७१११

प्र०—पहिले दो अंको से ११ क्यों घटाये ?

उ०—उलटे हर=११

प्र०—तीसरे से २ क्यों घटाये ?

उ०—पहिले ३ में ५ मध्यम अंतम=२

प्र०—चौथे से ४ क्यो घटाये ?

उ०—चौथा अंक ८ है उसके पूर्व्व ५, ३ और ६ तीन लघुतर अंक हैं तीन में १ जोड़ा ४ हुए इसलिये ४ घटाये ?

प्र०—पांचवें अंक से २ क्यो घटाये ?

उ०—पांचवां अंक ४ है इसके पूर्व्व १ही लघु है अर्थात् ३, १ लघु में १ और जोड़ा २ हुए इसलिये २ घटाये।

उत्तर= २७१११

६ अंकों के ३६२८८० भेद

नष्ट

प्र०—६ अंको मे १४७८६५वा भेद कैसा होगा?

४०३२० ५०४० ७२० १२० २४ ६ २ १ ०
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

४०३२०) १४७८६५ (३+१=४ चौथा अंक ४
१२०९६० (रहे १२३५६७८९)

५०४०) २६९३५ (५+१=६ छठा अंक ७
२५२०० (रहे १२३५६८९)

७२०) १७३५ (२+१=३ तीसरा अंक ३
१४४० (रहे १२५६८९)

१२०) २९५ (२+१=३ तीसरा अंक ५
२४० (रहे १२६८९)

२४) ५५ (२+१=३ तीसरा अंक ६
४८ (रहे १२८९)

६) ७ (१+१=२ दूसरा अंक २
६ (रहे १८९)

२) १ (०= १ पहिला अंक १
(रहे ८९)

१) १ (१= १ पहिला अंक ८
१ शेष ९
०

उत्तर= ४७३५६२१८९

उद्दिष्ट

प्र०—९ अंको मे ४७३५६२१८९वा भेद कौन है?

४०३२० ५०४० ७२० १२० २४ ६ २ १ ०
४ ७ ३ ५ ६ २ १ ८ ९
−१ २ १ ३ ४ १

३ ५ २ २ ३ १

३×४०३२०= १२०९६०
५×५०४०= २५२००
२×७२०= १४४०
२×१२०= २४०
२×२४= ४८
१×६= ६
१८९=लमग= १

१४७८९५

प्र०—पहिले दो अंको के नीचे १२ क्यों रखे?

उ०—सीधे रवि १२

प्र०—तीसरे के नीचे १ क्यो?

उ०—अंतल=१

प्र०—चौथे के नीचे ३ क्यो?

उ०—चौथे अंक ५ के पूर्व दो लघुतर अंक हैं दो में १ और जोड़कर ३ रखे।

प्र०—पाचवें के नीचे ४ क्यों?

उ०—पाचवें अंक ६ के पूर्व तीन लघुतर अंक हैं उनमें १ और जोड़कर ४ रखा।

प्र०—छठे के नीचे १ क्यों?

उ०—छठा अंक २ है उससे लघुतर अंक पूर्व में कोई नहीं। शेष शून्य। इसलिये १ रखा।

उत्तर= १४७८९५ वां

प्रश्न—ऊपर जो नियम भिन्नांक नष्टोद्दिष्ट के दिये हैं वे तो सब सक्रमांको के हैं वेही यदि बिना क्रम के हुये तो उनके नष्टोद्दिष्ट कैसे निकलेंगे?

उत्तर—इन दिये अंकों को पहले सरलगति से लिखो यथा—

प्रश्नांक	सरलगति	भेद
३४२५	२३४५	२४
७५३८	३५७८	२४

नष्ट निकालने के लिये तो वेही नियम हैं जो ऊपर कहलाये हैं हां उद्दिष्ट निकालने के लिये सरलगति में से सरलांक क्रमपूर्वक घटाना चाहिये जिन२ अंकों के नीचे जो अंक शेष रहे उस अंतर को ध्यान में रक्खे। उद्दिष्ट निकालने के लिये प्रश्नांक में से जो जो अंक ऊपर कहे हुए नियमानुसार घटाया जाता है उसमें जिस अंक का जो अन्तर है वह भी मिलाकर घटावे शेष गुणन क्रिया पूर्ववत ही है यथा —

सरलगति	२३४५	३५७८
घटाये	१२३४	१२३४
अंतर	११११	२३४४

उद्दिष्ट प्रश्न—बताओ २३४५ में ३४२५ कौनसा भेद है?

उत्तर क्रिया सहित—यह चार अंकों का उद्दिष्ट है अन्त के तीन अंक तो सदा छोड़दिये जाते हैं यहां प्रथमांक ३ है साधारण नियमानुसार तो प्रथमांक में से १ घटता है यहां पर ३ के नीचे १ का अन्तर है इसलिये १+१=२ प्रथमांक ३ में से घटाये तो शेष १ रहा।

उद्दिष्ट

```
  ६ २ १ ०
  ३ ४ २ ५
 −२
 ———
  १
    १×६=  ६
४२५ सलग=  ३
         ———
           ६
```

उत्तर= ६वा भेद

नष्ट

२३४५ का ६वा भेद कैसे होगा?

```
६) ६ (१=२  दूसराअंक   ३
   ६          (रहे २४५)
  ———
   ३
२) ३ (१=२  दूसरा अंक   ५
   २          (रहे २५)
  ———
   १
१) १ (१=१ पहिला अंक   २
   १          शेष     ५
  ———
   ०
```

उत्तर= ३५२५

दूसरा उद्दिष्ट प्रश्न। नष्ट

३५७८ में ८३५७ कौनसा भेद है ३५७८ का १९वां भेद कैसे होगा?

६ २ १ ०
८ ३ ५ ७
-५ घटाया १+४=५
―――
३
३×६= १८
३५७ जमा= १
―――
१९

६) १९ (३=४ चौथा अंक ८ (रहे ३५७)
१८
―――
१
२) १ (०=१ प्रथमांक ३ (रहे ५७)
०
―――
१
१) १ (१=१ प्रथमांक ५
१ शेष ७
―――
०

उत्तर= १९वां भेद उत्तर= ८३५७

इति श्रीअङ्कविलासे भानुकवि विरचिते नष्टोद्दिष्ट प्रदर्शननाम चतुर्थो विलासः॥

भिन्नांक छल प्रश्न वर्णन।

प्र०–बताओ पांच अंकों में १२७वां भेद कैसा होगा ?

उ०–यह प्रश्नही अशुद्ध है ५ अंको के १२० से अधिक भेद नहीं होते।

प्र०–बताओ ६ अंको में यह कौनसा भेद है १२७४५३ *

उ०–यह प्रश्नही अशुद्ध है छै अंको के भेदो में १ से लेकर ६ तकही अंक आवेंगे ७ का अंक नहीं आसक्ता। शुद्ध प्रश्न यों होसक्ता है १२६४३५। *

प्र०–बताओ ६ अंको में १२६६३४ कौनसा भेद है ?

उ०–यह प्रश्न भी अशुद्ध है एक अंक दोबार नहीं आसकता, जितने अंकों का प्रश्न हो उसमें उतनेही अंक पूरे चाहिये चाहे वे किसी क्रम से हो यथा १२६६३४ अशुद्ध और १२६५३४ वा १२५६३४ शुद्ध हैं।

* यदि पृच्छक महाशय आग्रह करें कि कहां अंक भिन्न है छै न सही छै के बदले ७ तो है तो उद्दिष्ट में साधारण नियम से एक और अधिक अंक लेना होगा क्योंकि ६ और ७ में १ का अन्तर है जैसे.—

```
१२० २४ ६ २ १ ०              १२० २४ ६ २ १ ०
  १   २ ६ ४ ३ ५                १   २ ७ ४ ३ ५
 –१   २ ३                     –१   २ ४
 ─────────                    ─────────
      ३                             ३
    ३×६=          १८              ३×६=          १८
  ४३५ सलग          ३           ४३५ सलग          ३
                 ───                           ───
                  २१                            २१
```

१२३४५७ में २१वां भेद कैसे होगा ?

```
        १२० २४ ६ २ १ ०
          १   २ ३ ४ ५ ७
  १२०) २१ (०=                     १
                रहे २३४५७
   २४) २१ (०=१–                   २
                रहे ३४५७
    ६) २१ (३=४ चौथा अंक           ७
       १८         रहे ३४५
       ──
        ३
    २) ३ (१=२ दूसरा अंक           ४
       २          रहे ३५
       ──
    १) १ (१   प्रथम अंक           ३
       १          शेष             ५
       ──
        ०           उत्तर= १२७४३५
```

इति श्रीअंकविलासे भानुकवि विरचिते छल प्रश्न वर्णननाम पचमो विलास.॥

प्रस्तार चक्र

१ से ७ अंकों का प्रस्तार चक्र

स्थान	सब भिन्न	दो सम शेष भिन्न	तीन सम शेष भिन्न	चार सम शेष भिन्न	पाँच सम शेष भिन्न	छै सम शेष भिन्न	सात सम	दो सम, दो सम शेष भिन्न	दो सम, दो सम, दो सम, शेष भिन्न	दो सम, तीन सम शेष भिन्न	तीन सम, तीन सम शेष भिन्न	दो सम, चार सम शेष भिन्न	तीन सम, चार सम	दो सम, पांच सम	व्याख्या
१	१	०	०	०	०	०	०	०	०						(१) बायें लघु दायें गुरु (मिटता) प्रथम भेद (२) व्यतिक्रम (उलटा) अन्तिम भेद
२	२	१	०	०	०	०	०	०	०						
३	६	३	१	०	०	०	०	०	०						
४,	२४	१२	४	१	०	०	०	६	०						
५	१२०	६०	२०	५	१	०	०	३०	०	१०					
६	७२०	३६०	१२०	३०	६	१	०	१८०	९०	६०	२०	१५			
७	५०४०	२५२०	८४०	* २१०	४२	७	१	१२६०	६३०	४२०	१४०	१०५	३५	२१	

* चार सम शेष भिन्न १११२ २३४ $\frac{\quad}{२४\ ०} = \frac{५०४०}{२४} = २१०$

* तीन सम, दो सम, दो सम १११ २२ ३३ = ५०४०; $\frac{}{६ \times २ \times २ = २४} = २१०$

इति श्रीमत्कविताके भानु कवि - विरचिते प्रस्तारचक्रप्रकरण षष्ठो विलासः ॥

मिश्रितांक सूची भेद वर्णन।

दो वा अधिक तुल्य जहँ अंक, भिन्न अंक सह 'मिश्रित अंक'।
तुल्य अंक सब लेहु निहार, तिन तर भेद भिन्नवत् धार।
गुणनफलहि सो भाजि अभेद, प्रश्न अंक के पूरे भेद।
लब्धि समान भेद उर लाव, उत्तर लहि हरि के गुण गाव॥

जिस अंक समूह मे भिन्नांकों के साथ दो वा अधिक तुल्यांक हो वे मिश्रितांक कहाते हैं।

भिन्नांको के साथ दो वा अधिक तुल्यांक एक वा अधिक स्थानो मे हो तो भिन्नांकवत् उनके सम्पूर्ण भेद उनके नीचे लिखो यदि ऐसे भेद दो वा अधिक स्थानो मे हों तो उन सबों का परस्पर गुणा करो जो गुणनफल हो उसका भाग प्रश्नांक के अंको को भी भिन्न मानकर उनके सम्पूर्ण भेदो मे दे देव जो लब्धि हो वही उत्तर होगा यथा —

$$\frac{\text{११ २२}}{\text{२ × २}} = \frac{\text{२४}}{\text{४}} = \text{६}$$

$$\frac{\text{१२ ३३}}{\text{० × २}} = \frac{\text{२४}}{\text{२}} = \text{१२}$$

$$\frac{\text{११ २२२}}{\text{२ × ६}} = \frac{\text{१२०}}{\text{१२}} = \text{१०}$$

$$\frac{\text{११ २२२२}}{\text{२ × २४}} = \frac{\text{७२०}}{\text{४८}} = \text{१५}$$

$$\frac{\text{११ ३२ ३३ ५}}{\text{२ × २ × २ × ०}} = \frac{\text{५०४०}}{\text{८}} = \text{६३०}$$

$$\frac{\text{१११ २२२२}}{\text{६ × २४}} = \frac{\text{५०४०}}{\text{१४४}} = \text{३५}$$

$$\frac{\text{११ २२२२२}}{\text{२ × १२०}} = \frac{\text{५०४०}}{\text{२४०}} = \text{२१}$$

इति श्रीअंकविलासे भानुकवि विरचिते मिश्रितांक सूची भेद वर्णननाम सप्तमो विलास।

मिश्रितांक प्रस्तार वर्णन।

मिश्रितांक कर सरल विचार, तिनको करिय खंड प्रस्तार।
गुरु अंकनि क्रमतें धरि वाम, शेष अंक प्रस्तार ललाम।
कष्ट साध्य प्रश्नहिं के अंक, खंड अनेक करिय विन शंक।
उनके धरिय भिन्न सब रूप, भानु भनत प्रस्तार अनूप।
प्रथम भेद गति सरलहिं देख, दूजो मध्य भिन्न अवरेख।
तीजी अंतिम की गति वक्र, एक भिन्न दो सम जहँ अंक।
बांये लघु दायें गुरु, प्रथम सरल गति मान।
मध्य भिन्न दूजो अहै, तृतिय व्यतिक्रम जान।

(३)	(३)
१–१२२	१–११२
२–२१२	२–१२१
३–२२१	३–२११
३	३

(४)	(४)	(४)	(४)
१–११२२	१–११२३	१–१११२	१–१२२२
२–१२१२	२–११३२	२–११२१	२–२१२२
३–१२२१	३–१२१३	३–१२११	३–२२१२
४–२११२	४–१२३१	४–२१११	४–२२२१
५–२१२१	५–१३१२	४	४
६–२२११	६–१३२१		
६	७–२११३		
	८–२१३१		
	९–२३११		
	१०–३११२		
	११–३१२१		
	१२–३२११		
	१२		

(५)

१	१२३४४	२१	२४३१४	४१	४१४२३
२	१२४३४	२२	२४३४१	४२	४१४३२
३	१२४४३	२३	२४४१३	४३	४२१३४
४	१३२४४	२४	२४४३१	४४	४२१४३
५	१३४२४	२५	३१२४४	४५	४२३१४
६	१३४४२	२६	३१४२४	४६	४२३४१
७	१४२३४	२७	३१४४२	४७	४२४१३
८	१४२४३	२८	३२१४४	४८	४२४३१
९	१४३२४	२९	३२४१४	४९	४३१२४
१०	१४३४२	३०	३२४४१	५०	४३१४२
११	१४४२३	३१	३४१२४	५१	४३२१४
१२	१४४३२	३२	३४१४२	५२	४३२४१
१३	२१३४४	३३	३४२१४	५३	४३४१२
१४	२१४३४	३४	३४२४१	५४	४३४२१
१५	२१४४३	३५	३४४१२	५५	४४१२३
१६	२३१४४	३६	३४४२१	५६	४४१३२
१७	२३४१४	३७	४१२३४	५७	४४२१३
१८	२३४४१	३८	४१२४३	५८	४४२३१
१९	२४१३४	३९	४१३२४	५९	४४३१२
२०	२४१४३	४०	४१३४२	६०	४४३२१

६०

(५)

१	११२२२
२	१२१२२
३	१२२१२
४	१२२२१
५	२११२२
६	२१२१२
७	२१२२१
८	२२११२
९	२२१२१
१०	२२२११

१०

(५)

१	१११२२
२	११२१२
३	११२२१
४	१२११२
५	१२१२१
६	१२२११
७	२१११२
८	२११२१
९	२१२११
१०	२२१११

१०

(६)

१	११२२२२
२	१२१२२२
३	१२२१२२
४	१२२२१२
५	१२२२२१
६	२११२२२
७	२१२१२२
८	२१२२१२
९	२१२२२१
१०	२२११२२
११	२२१२१२
१२	२२१२२१
१३	२२२११२
१४	२२२१२१
१५	२२२२११

१५

(६)

१	१११२२२
२	११२१२२
३	११२२१२
४	११२२२१
५	१२११२२
६	१२१२१२
७	१२१२२१
८	१२२११२
९	१२२१२१
१०	१२२२११
११	२१११२२
१२	२११२१२
१३	२११२२१
१४	२१२११२
१५	२१२१२१
१६	२१२२११
१७	२२१११२
१८	२२११२१
१९	२२१२११
२०	२२२१११

(७)

१	११२२२२२
२	१२१२२२२
३	१२२१२२२
४	१२२२१२२
५	१२२२२१२
६	१२२२२२१
७	२११२२२२
८	२१२१२२२
९	२१२२१२२
१०	२१२२२१२
११	२१२२२२१
१२	२२११२२२
१३	२२१२१२२
१४	२२१२२१२
१५	२२१२२२१
१६	२२२११२२
१७	२२२१२१२
१८	२२२१२२१
१९	२२२२११२
२०	२२२२१२१
२१	२२२२२११

सू० ध्यान रहे कि प्रत्येक भेद की संख्या एक दूसरे से अधिक रहे।

प्र०—नीचे लिखे मिश्रितांकों के प्रथम और अंतिम भेदों के रूप कैसे होंगे और उनके समस्त भेदों की संख्या कितनी है?

उ० प्रश्नांक	प्रथमभेद (सरलगति)	अंतिमभेद (उल्टीगति)	समस्तभेद संख्या
११३४	११३४	४३११	१२
११४३	११३४	४३११	१२
१५२२७	१२२५७	७५२२१	६०
६१६३८	१३८६६	६६८३१	६०
७३११५२	११२२३७	७३५२११	१८०

इति श्री अंक विलासे भानुकवि विरचिते मिश्रितांक प्रस्तार वर्णनन्नाम अष्टमो विलासः॥



खंड प्रस्तार प्रदर्शन।

७ अक्षर—१११२२२२=३५ भेद

(१) १—११२२२२=१५
२—१११२२२=२०
 ३५

(२) ११—१२२२२= ५
१२—११२२२=१०
२१—११२२२=१०
२२—१११२२=१०
 ३५

(३) १११—२२२२=१
११२—१२२२=४
१२१—१२२२=४
१२२—११२२=६
२११—१२२२=४
२१२—११२२=६
२२१—११२२=६
२२२—१११२=४
 ३५

(४) १११२—२२२=१
११२१—२२२=१
११२२—१२२=३
१२११—२२२=१
१२१२—१२२=३
१२२१—१२२=३
१२२२—११२=३
२१११—२२२=१
२११२—१२२=३
२१२१—१२२=३
२१२२—११२=३
२२११—१२२=३
२२१२—११२=३
२२२१—११२=३
२२२२—१११=१
 ३५

७ अक्षर—११२२२२२=२१ भेद

(१) १—१२२२२२= ६
२—११२२२२=१५
 २१

(२) ११—२२२२२= १
१२—१२२२२= ५
२१—१२२२२= ५
२२—११२२२=१०
 २१

(३) ११२—२२२२=१
१२१—२२२२=१
१२२—१२२२=४
२११—२२२२=१
२१२—१२२२=४
२२१—१२२२=४
२२२—११२२=६
 २१

(४) ११२२—२२२=१
१२१२—२२२=१
१२२१—२२२=१
१२२२—१२२=३
२११२—२२२=१
२१२१—२२२=१
२१२२—१२२=३
२२११—२२२=१
२२१२—१२२=३
२२२१—१२२=३
२२२२—११२=३
 २१

☞ सबों का परिणाम एक समान है।

इति श्री अंकविलासे भानुकवि विरचिते खंड प्रस्तार प्रदर्शननाम
नवमो विलास।

ध्रुवांक।

(Rudimental figures)

प्रश्नांक में जितने अंक है, उनमें से प्रत्येक अंक प्रस्तार के आदि में कितने बार आवेगा?

भिन्न अंक इक इक लैलेव, सम सम अंक पृथक् गिनि लेव।
गुणि भेदन सों भाजि सुचित्त, प्रश्न अंक संख्या सो मित्त।
आदि अंक सब भेदन केर, सहजहिं मिलै न लागै वेर।
इनहिं ध्रुवांक जानिये तात, सोई सकल भेद प्रगटात।

(१) १२२=३ भेद

$\frac{\text{१ भिन्नांक}\times\text{३}}{\text{३}}$=१, १ आदि मे--१ भेद   १२२

$\frac{\text{२ समानांक}\times\text{३}}{\text{प्रश्नांक ३}}$=२, २ आदि मे--२ भेद   २१२
२२१

(२) ११२३=१२ भेद

$\frac{\text{२ समानांक}\times\text{१२}}{\text{प्रश्नांक ४}}=\frac{\text{२४}}{\text{४}}$=६, १ आदि मे--६ भेद   ११२३
१,
१२१३
१२३१
१३१२
१३२१

$\frac{\text{१ भिन्नांक}\times\text{१२}}{\text{प्रश्नांक ४}}$=३, २ आदि मे-३ भेद   २११३
-,३
२३११

$\frac{\text{१ भिन्नांक}\times\text{१२}}{\text{प्र ४}}=\frac{\text{१२}}{\text{४}}$=३, ३ आदि-मे ३ भेद   ३११२
३१२१
३२११

(३) ११२२२=१० भेद

$\frac{\text{२ समानांक}\times\text{१०}}{\text{प्र ५}}=\frac{\text{२०}}{\text{५}}$=४, १ आदि मे-४ भेद   ११
१२१
१२२१
१२२२

मिश्रितांक उद्दिष्ट तथा नष्ट वर्णन।

मिश्रितांक के लिखिये भेद, पुनि ध्रुव अंकनि केर विभेद।
ध्रुवांकन गत भेद जितेक, क्रमों जोरिय सहित विवेक ॥१॥
भेद आदि जँह एक लखाय, तहँ तहँ शून्य धरौ हर्षाय।
अंतिम त्रय के भेदहुँ जोरि, उद्दिष्टहिं कहिये बिन खोरि ॥२॥
* उलट क्रिया ताकी कह नष्ट, लहिये भेद मीत बिन कष्ट।
त्रय तें अधिक प्रश्न के अंक, अंतिम तीन तजौ बिन शंक ॥३॥
तीन भिन्न छै भेद अभंग, ध्यान धरे "लीला मम गंग"।
तीन तुल्य तहँ शून्य प्रमान, सरल भेद इक गिनौ सुजान ॥४॥
मध्य भिन्न दूसर गनि लेव, व्यतिक्रमहिं तीसर कहि देव।
कछुक उदाहरण इनके दीन, थोरहि में समुझिहैं प्रवीन ॥५॥
प्रश्न नष्ट अथवा उद्दिष्ट, सब कर ठौर सदा निर्दिष्ट।
भानु भनित यह रीति उदार, जग मँह कीर्ति बढ़ावनहार ॥६॥

उद्दिष्ट

प्रश्नांक ११२२, भेद ६, ध्रु १ के ३, २ के ३
प्र०—११२४ में २११२ कौनसा भेद है?

२ के पूर्व भेद	३
११२ सरल	१
उत्तर	४ था

नष्ट

प्र०—११२२ का ४था भेद कैसा है?

४ अंकों में ३ के परे	२
शेष १	११२ सरल
४	
उत्तर	२११२

प्रश्नांक ११२३, भेद १२, ध्रु १ के ६, २ के ३ ३ के ३
प्र०—११२३ में ३११२ कौनसा भेद है?

३ के पूर्व भेद	९
११२ सरल	१
उत्तर	१० वा

प्र०—११२३ में १०वा भेद कैसा है?

४ अंकों में ९ के परे	३
शेष १	सरल ११२
१०	
उत्तर	३११२

* (उद्दिष्ट में)	(नष्ट में)
(१) ध्रुवांक पूर्व	ध्रुवांकोत्तर
(२) १=०	०=१
(३) अंतिम तीनकी संख्या	अंतिम तीनके रूप की रचना

(७) ११२३ भेद १२ $\frac{१२\times७}{४}$ = २१ = २१

```
    २१
   २१
  २१
 २१
-----
२३३३१  = उत्तर २३३३१
```

(८) १२२४ भेद २४ $\frac{२४\times१०}{४}$ = ६० = ६०

```
    ६०
   ६०
  ६०
 ६०
-----
६६६६० = उत्तर ६६६६०
```

(९) १२३७ भेद २४ $\frac{२४\times१३}{४}$ = ७८ = ७८

```
    ७८
   ७८
  ७८
 ७८
-----
८६६५८  = उत्तर ८६६५८
```

इति श्रीअङ्कविलासे भानुकवि विरचिते प्रस्तार भेदान्तर्गत सख्या योग वर्णननाम द्वादशो विलासः ।



मिश्रितांक उद्दिष्ट तथा नष्ट वर्णन।

मिश्रितांक के लिखिये भेद, पुनि ध्रुव अंकनि केर निभेद।
ध्रुवांकन गत भेद जितेक, क्रमतें जोरिय सहित विवेक ॥१॥
भेद आदि जँह एक लखाय, तहँ तहँ शून्य धरौ हर्षाय।
अंतिम त्रय के भेदहुँ जोरि, उद्दिष्टहिं कहिये चित खोरि ॥२॥
* उलट क्रिया ताकी कह नष्ट, लहिये भेद मीत विन कष्ट।
त्रय तें अधिक प्रश्न के अंक, अंतिम तीन तजौ निज शंक ॥३॥
तीन भिन्न छै भेद अभंग, ध्यान धरे "लीला मम गंग"।
तीन तुल्य तहँ शून्य प्रमान, सरल भेद इक गिनौ सुजान ॥४॥
मध्य भिन्न दूसर गनि लेव, व्यतिक्रमहिं तीसर कहि देव।
कछुक उदाहरण इनके दीन, थोरहि मे समुझिहै प्रवीन ॥५॥
प्रश्न नष्ट अथवा उद्दिष्ट , सम कर ठौर सदा निर्दिष्ट।
भानु भनित यह रीति उदार, जग मँह कीर्ति बढ़ावनहार ॥६॥

उद्दिष्ट		नष्ट	
प्रश्नांक ११२२, भेद ६, ध्रु १ के ३, २ के ३		प्र०–११२२ का ४था भेद कैसा है?	
प्र०–११२४ मे २११२ कौनसा भेद है?		४ अंकों में ३ के परे	२
२ के पूर्व भेद	३	शेष १	११२ सरल
११२ सरल	१		४
उत्तर	४ था	उत्तर	२११२
प्रश्नांक ११२३, भेद १२, ध्रु १ के ६, २ के ३ ३ के ३		प्र०–११२३ मे १०वा भेद कैसा है?	
प्र०–११२३ मे ३११२ कौनसा भेद है?		४ अंकों मे ६ के परे	३
३ के पूर्व भेद	६	शेष १	सरल ११२
११२ सरल	१		१०
उत्तर	१० वा	उत्तर	३११२

* (उद्दिष्ट मे) (नष्ट मे)

	(उद्दिष्ट मे)	(नष्ट मे)
(१)	ध्रुवांक पूर्व	ध्रुवांकोत्तर
(२)	१=०	०=१
(३)	अंतिम तीनकी संख्या	अंतिम तीनके रूप की रचना

उद्दिष्ट	नष्ट
प्रश्नांक ११२२२, ५ अक्षर=भेद १०, १ के ४, २ के ६	प्र०–११२२२ में ९वां भेद कैसा है ?
प्र०–११२२२ में २२१२१ कौनसा भेद है?	११२२२ में ४ के परे २
२२१२१ में २ के पूर्व भेद ४	१२२२ में ३ के परे २
(२ २१) (वा ११२१) भेद ६ ध्रु० १ के ३, २ के ३)	शेष २, ११२ का
२१२१ में २ के पूर्व ध्रु० भेद ३	$\frac{}{९}$ दूसरा रूप १२१
शेष १२१ मध्यम भिन्न २	
उत्तर ९वां	उत्तर २२१२१

प्रश्नांक ११२२२ भेद १०, ध्रु० १ के ६, २ के ४	प्र०–११२२२ में ७वां भेद कैसा होगा ?
प्र०–११२२२ में २१११२ कौनसा भेद है?	११२२२ में ६ भेदों के परे २
२१११२ में २ के पूर्व भेद ६	१२२२ में ० के परे १
११२२ में २ के पूर्व ०	शेष १ सरल = ११२
शेष ११२ सरल १	$\frac{}{७}$
उत्तर ७वां	उत्तर २१११२

प्रश्नांक ११२२२२ भेद १५, ध्रु १ के ५, २ के १०	प्र०–११२२२२ में १३वां भेद कैसा होगा ?
प्र०–११२२२२ में २२२११२ कौनसा भेद है?	११२२२२ में ५ भेदों के परे २
२२२११२ में २ के पूर्व ५	११२२२ में ४ गत २
(२२११२ के भेद १० ध्रु १ के ४, २ के ६)	११२२ में ३ गत २
२२११२ में २ के पूर्व ध्रु ४	शेष १ सरल = ११२
(२११२ वा ११२२ के भेद ६, ध्रु १ के ३, २ के ३)	$\frac{}{१३}$
२११२ में २ के पूर्व ३	
शेष ११२ सरल १	
उत्तर १३वां	उत्तर २२२११२

उद्दिष्ट		नष्ट	
प्रस्तार ११११२२२ भेद २० ध्रु १के १०, २के १०			
प्र०—१११२२२ में २२१११२ कौनसा भेद है ?		प्र०—१११२२२ में १७वा भेद कैसा है ?	
२२१११२ मे २ के पूर्व्व भेद	१०	६ अको में १० के परे	२
(२१११२ या १११२२ के १० भेद ध्रु १ के ६, २ के ४)		५ अको में ६ के परे	२
२१११२ मे २ के पूर्व्व भेद	६	४ अको में ० के परे	१
११२ म १ के पूर्व्व भेद	०	शेष १ सरल =	११२
शेष ११२ सरल	१	१७	
उत्तर	१७वा	उत्तर	२२१११२
प्रस्तार ११२२२२२ भेद २१ ध्रु १ के ६, २ के १५			
प्र०—११२२२२२ मे २२२२११२ कौनसा भेद है ?		प्र०—११२२२२२मे १९वा भेद कैसा होगा ?	
२२२२११२ में २ के पूर्व्व भेद	६	७ अको में ६ के परे	२
(२२२११२ के १५ भेद ध्रु १ के ५, २ के १०)		६ अको में ५ ,,	२
२२२११२ में २ के पूर्व्व भेद	५	५ अको में ४ ,,	२
(२२११२ के १० भेद ध्रु १ के ४, २ के ६)		४ अको में ३ ,,	२
२२११२ में २ के पूर्व्व भेद	४	शेष १ सरल=	११२
(२११२ के ६ भेद ध्रु १ के ३, २ के ३)		१९	
२११२ म २ के पूर्व्व भेद	३		
११२ सरल	१		
उत्तर	१९वा	उत्तर	२२२२११२

केवल पांच मिश्रिताको को ही लीजिये तो उनके भेद कई प्रकार के होते हैं यथा,—२ स और ३ भिन्न के ६० भेद, ३ सम और २ भिन्न के २० भेद, ४ सम और १ भिन्न के भेद, २ सम २ सम और १ भिन्न के ३० भेद तथा २ सम और ३ सम के १० भे होगे वैसेही सम परिमाणित रूप से (Proportionately) उनके सन्यक भी पृथ पृथक् होगे यथा ५ भिन्नाकों के १२० परन्तु २ सम और ३ भिन्नाकों के उनके अ अर्थात् ६० भेद होगे (देखो प्रस्तार पृष्ठ २२) इनके सूची अङ्क भी वैसेही आधे होजायें

५ भिन्नांक की सूची २४ ६ २ १ ०
१२३४५
२ सम और ३ भिन्नाको की सूची
१२३४४ १२ ३ १ ० ०

मिश्रिताङ्क सूची और प्रस्तार के नियम तो स्पष्ट हैं परन्तु इनके अवान्त अनेक भेदोपभेदो के कारण उद्दिष्ट दि नियम कठिन हो जाते हैं उसमें भी समानां और भिन्नाक निकटवर्ती न होकर दूरवर्ती हुए तो और विचार की अपेक्षा रहती यथा,—

१२३४४ निकटवर्ती
१२३७७ दूरवर्ती

यहां सूच्यकानुसार १२३४४ के ६० भेदो के कुछ उद्दिष्टोदाहरण लिखते हैं।—

पाच अंको के उद्दिष्ट मे आदि के केवल दो अको का ही विचार होता है शे ३ के भेद की संख्या जोड़ ली जाती है आदि के दो अको मे से किस प्रकार अ घटाये जायंगे वे नीचे लिखे हैं,—

१२ १३ १४ २१ २३ २४ ३१ ३२ ३४ ४१ ४२ ४३ ४४
—१२ १२ १२ ११ १२ १२ ११ ११ १२ ११ १० ०३ ०२

भिन्नाकवत् सरलगति मे १२ और विषमगति से ११ घटेंगे परन्तु ४२ से १० ४३ से ०३ और ४४ से ०२ घटेंगे, इनके कुछ उदाहरण नीचे देते हैं —

२१३४४
  १२ ३ १ ० ०
  २ १ ३ ४ ४
  —१ १
  १
  १×१२=१२
  ३४४ प्रथम भेद— १
  १३

३४२४१
  १२ ३ १ ० ०
  ३ ४ २ ४ १
  —१ २
  २ २
  २×१२=२४
  २×३= ६
  २४१ मंगल=४
  ३४

	१२ ३ १ ० ०	
४२४३१	४ २ ४ ३ १	३×१२=३६
	−१ ०	२×३= ६
	३ २	४३१ मलग=६
		४८

	१२ ३ १ ० ०	
४३२१५	४ ३ २ १ ५	४×१२=४८
	−० ३	२१५ मलग= ३
	४	५१

	१२ ३ १ ० ०	
४४२१३	४ ४ २ १ ३	४×१२=४८
	−० २	२×३= ६
	४ २	२१३ मलग= ३
		५७

सारांश यह है कि मिश्रिताङ्क में एक के नियम दूसरे को उपयुक्त नहीं। जैसे उपरोक्त नियम घ.टस करने के लिये १२३७७ को १२३४५ मानना पड़ेगा। एतदर्थ केवल सिद्धांत समझ लेना अलम् है विशेष गोरख धंधे में पड़ने की आवश्यकता नहीं। मिश्रिताकों के नष्टोद्दिष्ट ध्रुवाङ्क की रीति से ऊपर बताये गये हैं परन्तु मुख्यत उनके सूची और प्रस्तार भेद की गति ही समझ लेना पर्याप्त है।

इति श्रीअंकविलासे भानुकवि विरचिते मिश्रिताङ्क नष्टोद्दिष्ट वर्णननाम त्रयोदशो विलास ।



गृहीत मुक्त रीति वर्णन ।

प्रश्नांकों में से कुछ अंक त्याग करना और शेष लेकर उनके मूलांक और रूपान्तर (भेद) बतादेने की रीति को गृहीत मुक्त रीति कहते हैं ।

गृहित मुक्त अंकन की रीति । गृहित भेद लहि होय प्रतीत ॥
मुक्त अंक के भेद जितेक । पूर्ण भेद भाजिय सविवेक ॥
गृहित मुक्त द्वउ भेद मिलाय । भाजिय पूर्ण भेद मन लाय ॥
मूल अंक संख्या प्रगटात । जाहि लहे जिय अति हुलसात ॥

प्र०–१२३४ में प्रत्येक वार दो दो अंक लेव तो कितने भेद होंगे ?

मुक्तांक २ के २ भेद–पूर्ण भेद $\frac{२४}{२}$=१२ भेद

गृहितांक के २ भेद २×२=४ $\frac{२४}{४}$=६ मूलांक

१२
१३
१४
२३
२४
३४

६×२=१२

दूजी रीति सुलभ सुनि लेव । वाम गती गृहितहिं गुणि देव ॥
मुक्त गृहित भेदन सो भाजि । मूल अंक संख्या ले साजि ॥

प्र०–१२३४ में प्रत्येक वार दो दो अंक लेव तो कितने भेद होंगे ?
वामगति से पिछले दो अंक ४×३=१२ भेद

मुक्त २ के २ भेद, गृहीत २ के २ भेद पूर्ण भेद $\frac{२४}{४}$=६ मूलांक

अन्योदाहरण

प्र०–१२३४ में प्रत्येक वार तीन [illegible] तो [illegible] ?
(परिर्जा रीति [illegible]

मुक्तांक १ का १ [illegible] कुल

गृहीतांक [illegible] ६

१२३ रूपान्तर ६
१२४ ,, ६
१३४ ,, ६
२३४ ,, ६
२४ ४×६=२४

(दूसरी रीति)
गृ० ४×३×२= २४ कुल भेद
मुक्ताक १ का १ भेद
गृहीताक ३ के ६ भेद
१×६=६ $\frac{२४}{६}$=४ मूलाक पूर्ववत

प्र०–१२३४५ में प्रत्येक बार तीन तीन अङ्क लेंय तो कितने भेद होंगे ?

(पहिली रीति)
मुक्ताक २ के २ भेद, पूर्ण भेद $\frac{१२०}{२}$=६० कुल भेद
गृ० ३ के ६ भेद
मु० २ के २ भेद ६×२=१२ $\frac{१२०}{१२}$=१० मूलाक×६= ६०

(दूसरी रीति)
गृ० ५×४×३=६० कुल भेद
गृ०×मु०
६×२=१२ $\frac{१२०}{१२}$=१० मूलाक

१२३ १४५
१२४ २३४
१२५ २३५
१३४ २४५
१३५ ३४५

प्र०–१२३४५६ में प्रत्येक बार चार चार अङ्क लिये तो कितने भेद होंगे ?

(पहिली रीति)
२ मुक्ताक के २ भेद पूर्ण भेद $\frac{७२०}{२}$=३६० कुल भेद
२ मु० के २ भेद
४ गृ० के २४ भेद २×२४=४८ $\frac{७२०}{४८}$=१५ मूलाक×२४=३६०

१२३४ १३४५ २३५६
१२३५ १३४६ २४५६
१२३६ १३५६ ३४५६
१२४५ १४५६
१२४६ २३४५
१२५६ २३४६

(दूसरी रीति)

गृ० ६×५×४×३=   ३६० कुल भेद
मूलाङ्क   १५ पूर्ववत

प्र०–१२३४५६७८९ में प्रत्येक वार पांच पाच अंक लिये तो कितने भेद होंगे?

(पहिली रीति)

मुक्तांक ४ के २४ भेद   पूर्ण भेद $\frac{३६२८८०}{२४}$=१५१२० कुल भेद

४ मु० के २४ भेद

५ गृ० के १२० भेद २४×१२०=२८८० $\frac{३६२८८०}{२८८०}$ १२६ मूलाङ्क

१२६×१२०=१५१२०

(दूसरी रीति)

गृ० ९×८×७×६×५   =१५१२० कुल भेद
मूलांक   १२६ मूलांक

प्र०–१२३४५६७८९ में से प्रत्येक वार छै छै अंक लेते जाव तो कितने भेद होंगे?

(पहिली रीति)

३ मुक्तांक के ६ भेद,   पूर्ण भेद $\frac{३६२८८०}{६}$=६०४८० कुल भेद

३ मु० के ६ भेद

६ गृ० के ७२० भेद। ६×७२०=४३२० $\frac{३६२८८०}{४३२०}$= ८४ मूलाक
८४×७२०=६०४८०

(दूसरी रीति)

गृ० ९×८×७×६×५×४=   ६०४८० कुल भेद
पूर्ववत   ८४ मूलाक

विस्तारभय से १२६ और ८४ मूलांको के रूप नहीं लिखे, सुज्ञ पाठक स्वयही समझ लेंगे।

अपने पाठको के विनोदार्थ ३ से लेकर ९ अंको तक के गृहीतांक, मूलाक भेद, प्रत्येक मूलांको के उपभेद, समस्त भेद और मुक्तांकों (त्यक्तांको) के भेदों का एक कोष्ठक नीचे लिखे देते हैं,—

अंक	प्रत्येक बार गृहीतांक	पृथक् पृथक् मूलांक	प्रत्येक मूलांक के भेद	समस्त प्रास्तारिक भेद	मुक्तांक
३	१	३	१	३	२
	२	३	२	६	१
	३	१	६	६	०
४	१	४	१	४	३
	२	६	२	१२	२
	३	४	६	२४	१
	४	१	२४	२४	०
५	१	५	१	५	४
	२	१०	२	२०	३
	३	१०	६	६०	२
	४	५	२४	१२०	१
	५	१	१२०	१२०	०
६	१	६	१	६	५
	२	१५	२	३०	४
	३	२०	६	१२०	३
	४	१५	२४	३६०	२
	५	६	१२०	७२०	१
	६	१	७२०	७२०	०
७	१	७	१	७	६
	२	२१	२	४२	५
	३	३५	६	२१०	४
	४	३५	२४	८४०	३
	५	२१	१२०	२५२०	२
	६	७	७२०	५०४०	१
	७	१	५०४०	५०४०	०
८	१	८	१	८	७
	२	२८	२	५६	६
	३	५६	६	३३६	५
	४	७०	२४	१६८०	४
	५	५६	१२०	६७२०	३
	६	२८	७२०	२०१६०	२
	७	८	५०४०	४०३२०	१
	८	१	४०३२०	४०३२०	०
९	१	९	१	९	८
	२	३६	२	७२	७
	३	८४	६	५०४	६
	४	१२६	२४	३०२४	५
	५	१२६	१२०	१५१२०	४
	६	८४	७२०	६०४८०	३
	७	३६	५०४०	१८१४४०	२
	८	९	४०३२०	३६२८८०	१
	९	१	३६२८८०	३६२८८०	०

अरूपाश दिया लखिन, निष्कलक निग्रात ।
देखि गुणीजन रीझिहैं, सरल भानु सिखात ॥

इति श्रीअकबिलसे भानुकवि विरचिते गुणित गुरु रीति वर्णननाम चतुर्दश विलास ॥

कौतुकांक।

"नाम वेद गुण बाण युत, द्विगुण वसू हृत शेष"।
"राम मयी यह जगत है, पंडित जान विशेष"॥

टी०:—नामाक्षरों को ४ से गुणा करके उसमें ५ जोडो, जो योगफल हो उसका दूना करो और ८ से भाग देव, सदैव २ बचेंगे यथाः—

	भाजक	शेष
१×४+५=९×२=१८	८	२
२×४+५=१३×२=२६	८	२
३×४+५=१७×२=३४	८	२
४×४+५=२१×२=४२	८	२
५×४+५=२५×२=५०	८	२
६×४+५=२९×२=५८	८	२
७×४+५=३३×२=६६	८	२
८×४+५=३७×२=७४	८	२
९×४+५=४१×२=८२	८	२
१०×४+५=४५=२=९०	८	२

साधु संग नव अंक सम, सदा एक रस लीन।
दुष्ट सग पुनि आठ सम, दिन दिन गति अति छीन॥
तऊ लहत सयोग नव, नवहि रूप ह्वैजात।
पारस परसि कुधात जिमि, देखत सबहि सुहात॥

८×९=७२=९

स्थिर (एक रस)	घटत
९×१= ९	८×१= ८
९×२=१८=९	८×२=१६=७
९×३=२७=९	८×३=२४=६
९×४=३६=९	८×४=३२=५
९×५=४५=९	८×५=४०=४
९×६=५४=९	८×६=४८=३
९×७=६३=९	८×७=५६=२
९×८=७२=९	८×८=६४=१
९×९=८१=९	

इति श्रीअंकविलासे भानुकवि विरचिते कौतुकांक वर्णननाम पचदशो विलास.॥

एकांकीय करण।

(१) पन्द्रा बाइस सुन्न रु सात, कीजे पंडित सातइ सात।
गुणि निरन्तर एकहि पाय, चाहि जिते गुण ताहि बढ़ाय ॥५॥

```
  १५२२०७
      ७३
 --------
  ४५६६२१
१०६५४४९
 --------
११११११११
```

सात सात अंक-यथा –७३×८=५११

```
   १५२२०७
      ५११
 ---------
   १५२२०७
  १५२२०७
 ७६१०३५
 ---------
 ७७७७७७७७
```

(२) पन्द्रा आठ तिरसर कहिं, सात गुणा कर एक लखाहिं।
सातहिं गुणा जाहि सो तात, सोइ गुणे सब अंक लखात ॥६॥

```
  १५८७३
      ७
 -------
 १११११
```

तीन तीन अंक-यथा–७×३=२१

```
  १५८७३
     २१
 -------
  १५८७३
 ३१७४६
 -------
 ३३३३३३
```

इति श्रीअंकविलासे मनुकवि विरचिते एकांकीय करणनाम षोडशो विलासः ॥

४५ संख्या की विशेषता ।

चहुँ ओरी पंचै बीसैंहि होय । धन ऋण गुण भजि दस दस होय ॥

८+२= १०
१२−२= १०
५×२= १०
२०÷२= १०

ऋण

९८७६५४३२१	=४५=९
१२३४५६७८९	=४५=९
८६४१९७५३२	=४५=९

इति श्रीअंकविलासे भानुकवि विरचिते पञ्चचत्वारिंशत् संख्या विशेषता वर्णनंनाम सप्तदशो विलासः ॥

नवांक महत्व।

नवके अंकका महत्व बतला देना भी उपयोगी होगा। गुसाईंजीने कहा है, कि,—

तुलसी अपने रामकर, भजन करहु निश्शंक।
आदि अन्त निरवाहि है, जैसे नव को अंक॥
दुगुने तिगुने चौगुने, पंचम षट अरु सात।
आठों में पुनि नव गुने, नव के नव रहिजात॥
नव के नव रहिजात है, तुलसी किये विचार।
रम्यो राम इमि जगत में, नहीं द्वैत विस्तार॥
जगतें रहु छत्तीस ह्वै (३६), राम चरन छत्तीन (६३)।
तुलसी देख विचार हिय, है यह मतो प्रवीन॥

निस्सन्देह नव का अंक बड़ा विचित्र है। उसे चाहे जितनेसे गुणित कीजिये, उसमें नव का अंक बना रहेगा। कहा भी है—

जैसे घटत न अंक नव, नव के लिखत पहार॥

अर्थात् नव का पहाड़ा लिखकर देखिये, सब मे नव का अंक विद्यमान रहता है यथा—नव दूने १८, नव तिया २७ और नव चौक ३६ आदि। इन गुणित अंकों का योग परस्पर में (१+८, २+७, ३+६) कीजिये, उत्तर आपको नव ही मिलेगा। इसी प्रकार और भी चाहे जितने से गुणा कीजिये, नव का अंक विद्यमान रहेगा। नीचे नव के विशेष महत्व का संक्षिप्त में वर्णन किया जाता है। जिन्हें विशेष जानने की इच्छा हो, वे हमारी बनाई "नव पंचामृत रामायण" को देखें।

(१) इकसों नव लगि संख्या जोर। पैंतालिस चौभाग बहोर॥
बारा आठ पांच अरु बीस। द्वै ऋण धन गुण भाग सरीस॥

भा०—१+२+३+४+५+६+७+८+९=४५ हुए, इसमें ४ और ५ दो अंक हैं, कि जिनका योगफल ९ होता है। अब इसके इस प्रकार से चार खंड कीजिये कि १२+८+५+२०=४५, इन प्रत्येक विभक्त भागों में क्रमश दो के अंक का ऋण, धन, गुणा और भाग कीजिये उत्तर समान होगा। यथा—

१२−२=१०, ८+२=१०, ५×२=१०, और २०÷२=१०।

(२) संख्या तें हर संख्या योग। शेष शुद्ध नव अंक सुयोग॥
माया के जिमि होतहिं दूर। शुद्ध ब्रह्म लखिये भरपूर॥

भा०—कोई भी मन मानी संख्या लिखकर उसके योग को उसी में से घटा दो, शेष अंकों का योग नव होगा। यथा,—

४५ संख्या की विशेषता ।

चहुं वीरा पचे बीसँहिं दोय । धन ऋण गुण भजि दस दस होय ॥

८+२= १०
१२–२= १०
५×२= १०
२०–२= १०

ऋण

९८७६५४३२१	=४५=९
१२३४५६७८९	=४५=९
८६४१९७५३२	=४५=९

इति श्रीअङ्कविलासे मातृकवि विरचिते पञ्चचत्वारिंशत् संख्या
विशेषता वर्णनो नाम सप्तदशो विलास ॥

नवांक महत्व ।

नवके अंक का महत्व बतला देना भी उपयोगी होगा । गुसाईंजीने कहा है, कि—

तुलसी अपने रामको, भजन करहु निशंक ।
आदि अन्त निरवाहि हैं, जैसे नव को अंक ॥
दुगुने तिगुने चौगुने, पंचम षट अरु सात ।
आठो तें पुनि नव गुने, नव के नव रहि जात ॥
नव के नव रहि जात है, तुलसी किये विचार ।
रम्यो राम इमि जगत में, नहीं द्वैत विस्तार ॥
जगतें रहु छत्तीस ह्वै (३६), राम चरन छत्तीन (६३) ।
तुलसी देख विचार हिय, है यह मतो प्रवीन ॥

निस्सन्देह नव का अंक बड़ा विचित्र है । उसे चाहे जितनेसे गुणित कीजिये, उसमें नव का अंक बना रहेगा । कहा भी है —

जैसे घटत न अंक नव, नव के लिखत पहाड़ ॥

अर्थात् नव का पहाड़ा लिखकर देखिये, सब में नव का अंक विद्यमान रहता है यथा –नव दूने १८, नव तिया २७ और नव चौके ३६ आदि । इन गुणित अंकों का योग परस्पर में (१+८, २+७, ३+६) कीजिये, उत्तर आपको नवही मिलेगा । इसी प्रकार और भी चाहे जितने से गुणा कीजिये, नव का अंक विद्यमान रहेगा । नीचे नव के विशेष महत्व का संक्षिप्त में वर्णन किया जाता है । जिन्हें विशेष जानने की इच्छा हो, वे हमारी बनाई "नव पंचामृत रामायण" को देखें ।

(१) इकसों नव लगि संख्या जोर । पैंतालिस चौभाग वहोर ॥
बारा आठ पाच अरु बीस । द्वै ऋण धन गुण भाग सरीस ॥

भा०—१+२+३+४+५+६+७+८+९=४५ हुए, इसमें ४ और ५ दो अंक हैं, कि जिनका योगफल ९ होता है । अब इसके इस प्रकार से चार खंड कीजिये कि १२+८+५+२०=४५, इन प्रत्येक विभक्त भागों में क्रमश दो के अंक का ऋण, धन, गुणा और भाग कीजिये, उत्तर समान होगा । यथा —

१२–२=१०, ८+२=१०, ५×२=१०, और २०–२=१० ।

(२) संख्या तें हर संख्या योग । शेष शुद्ध नव अंक सुयोग ॥
माया के जिमि होतहिं दूर । शुद्ध ब्रह्म लखिये भरपूर ॥

भा०—कोई भी मन मानी संख्या लिखकर उसके योग को उसी में से घटा दो, शेष अंकों का योग नव होगा । यथा—

७२५ इसके अंकों ७+२+५ का योग १४ हुआ, अब ७२५−१४=७११ अर्थात् ७+१+१=९। इसी प्रकार और भी जानो।

(३) संख्या उलटि हरै जो अंक। नव के नव पुनि लहौ निशंक ॥
घट घट में प्रभु रह्यो समाय। महिमा भानु कहे किमि गाय ॥

भा०—किसी भी संख्या को लिखकर उसी की उलटी संख्या को उसी में से घटाओ शेष का योग नव होगा, यथा:—

३५६१ इसकी उलटी संख्या १६५३ हुई। पूर्व संख्या ३५६१ में से १६५३ को घटाया तो १९०८ बचे, जिसके अंकों १+९+०+८ का योग १८ अर्थात् १+८=९ हुआ इसी प्रकार और भी जानो।

(४) शेष अंक तें हरिये जौन। नव महँ घटी जानिये तौन ॥
तत्व यही हिय माहीं लाय। मेटो अंकहि भानु बताय ॥

भा०—नियम दूसरे के अनुसार यह सिद्ध कर दिया गया है कि किसी अंक समूह के योग को उसी में से घटाने पर केवल ९ (एकही अंक में वा अनेक अंक मिलकर) बच रहते हैं। इस तत्व को ध्यान में रखकर किसी से कहो, कि आप कोई संख्या लीजिये, और उसके अंश को जोड़कर उसी में से घटा दीजिये। जो शेष रहे उसमें से कोई भी एक अंक जैसी इच्छा हो मेट दीजिये शेष अंक का योग जो आवे, उसमें ९ के लिये जितनी कमी हो, वही अंक काढ़ दीजिये। जैसे किसी ने ११६ संख्या ली। तो दूसरे नियम के अनुसार वह उसे जोड़कर १+१+६=८, उसमें से घटावेगा, यथा—११६−८=१०८ शेष बचे। अब पृच्छक चाहे १ का अंक मेटेगा अथवा ८ का मेटेगा, यदि १ का मेटेगा तो रहेंगे ८, अब ८ में ९ के लिये केवल १ की घटी है। अतएव यही उत्तर है। यदि पृच्छक ने शून्य मेटा है, तो पहिले ही कह देना उचित है। कि शून्य कोई अंक नहीं है।

सूचना—यदि शेष संख्या का योग ९ आवे, तो कह सकते हो, कि आपने ९ मेटा है। यदि वे शून्य मेटकर हठ करें तो कह सकते हो, कि आपने या तो शून्य मेटा है, अथवा ९ मेटा है।

(५) उलटो योही कै अधिकाय। संख्या योगहि देय घटाय ॥

(६) वा गुरुतातें लघुताहीन। कीजै हरि चरणन चित लीन ॥

भा०—किसी भी कल्पित संख्या को उलट कर लिखो। और उसके योग को उसी में से घटा दो, तो घटी हुई संख्या का योग ९ होगा।

यथा—कल्पित संख्या २३७ है, तो इसकी उलटी संख्या ७३२ हुई। इसके अंकों का योग ७+३+२=१२ हुआ। इस १२ को ७३२ में से घटाया, तो ७३२-१२=७२० बचे इसके अंकों का योग ७+२+०=९ हुआ।

(घ)—किसी भी कल्पित संख्या को उलटा करो, यदि उलटा मान अधिक है, तो उसमें से कल्पित संख्या घटा दो, शेष के अंकों का योग ९ होगा,

यथा—कल्पित संख्या १३६ इसका उलटा ६३१-१३६=४९५ हुए, इस संख्या के अंकों का योग ४+९+५=१८=१+८=९ हुए।

(ग)—और यदि उलटा मान कल्पित संख्या से न्यून है, तो भी उक्त क्रिया करो। अर्थात् अधिक संख्या में से न्यून को घटाओ, शेष संख्या के अंकों का योग ९ही होगा। यथा —

कल्पित संख्या ७१ है, इसके उलटे १७ हुए, तो इस ७१ म से १७ का घटावो, (७१-१७=५४) तो ५४ बचेंगे, जिसके अंकों का योग ५+४=९ हुआ। इसी प्रकार और भी जानो।

(७) नव व्यापक सब अंक में, ब्रह्म जीव सम लेख।
ज्ञान चक्षु लखि लीजिये चर्म चक्षु नहिं देख॥

(८) इक नव मिलि उन्नीस हैं, ताके दश रहि जात। १९=१+९=१०=१
दश के पुनि एकहि रहत, एकहि एक लखात॥

(९) सोइ नियम सब अंक में, निश्चय घटत समान।
नव महिमा की मित नहीं, कहा कहै लघु भान॥

नीचे नव के अंक का महत्व तथा उसकी व्याप्ति संक्षेप में और भी बताई जाती है —

(१०) संख्या के अंक (मुख्य) एक से लेकर नव तकही हैं।
(११) नव खण्ड
(१२) नव ग्रह
(१३) नव द्वार
(१४) नव निधि
(१५) नव रत्न
(१६) नव रात्रि
(१७) नव रस
(१८) नवधाभक्ति
(१९) नवनाड़ी
(२०) नव द्रव्य
(२१) नव विप्रकर्म
(२२) नव शक्ति
(२३) नव रस व उनके नव स्थायी भाव
(२४) राग रागिणी राग ६ और रागिणी ३०, दोनों का योग ३६ होता है, अतः ३+६=९

(२५) अक्षौहिणी संख्या=२१८७। ०=२+१+८+७=१८=१+८=९

(२६) युग वर्ष संख्या कलियुग ४३२०००=४+३+२=९
द्वापर ८६४०००=८+६+४=१८=१+८=९
त्रेता १२९६०००=१+२+९+६=१८=१+८=९
सतयुग १७२८०००=१+७+२+८=१८=१+८=९

(२७) चारो युग के वर्षों का योग=(दिव्ययुग) ४३२००००=४+३+२=९

(२८) मन्वन्तर (७१ दिव्य युग) ३०६७२००००=३+६+७+२=१८=१+८=९

(२९) कल्प (१४ मन्वन्तर) ४२९४०८००००=४+२+९+४+८=२७=२+७=९

(३०) बारह खड़ी में गुरु नव हैं-का, की, कू, के, कै, को, कौ, कं, कः (९)

(३१) नायिका भेद प्रस्तार ४७८८=४+७+८+८=२७=२+७=९ वा १०८=९

(३२) काव्य भेद ३४०६२३९००=३+४+६+२+३+९=२७=२+७=९

(३३) चारो वेदों की मन्त्र संख्या=१९४०४=१+९+४+४=१८=१+८=९

ऋग्वेद की मन्त्र संख्या–१०५१८
यजुर्वेद की ,, ,, – १९७५
सामवेद की ,, ,, – १०६४
अथर्ववेद की ,, ,, – ५८४७

चारिहु वेद मंत्र विस्तार।
उनिस सहस चारसौचार॥

(३४) रामजन्म तिथि–नवमी (९) नवमी तिथि मधु मास पुनीता।
शुक्ल पक्ष अभिजित हरि प्रीता॥

(३५) तुलसीकृत रामायण की छन्द संख्या=९९९०=९+९+९=२७=२+७=९

(३६) तुलसीकृत रामायण में शंकर प्रति पार्वतीजी के प्रश्नों की संख्या=९

यथा—प्रथम सु कारण कहहु विचारी। निर्गुण ब्रह्म सगुण वपुधारी॥१॥
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा॥२॥ बाल चरित पुनि कहहु उदारा॥३॥
कहहु यथा जानकिहिं विवाहा॥४॥ राज्य तजा सो दूषण काहा॥५॥
वन वसि कीन्हे चरित अपारा॥६॥ कहहु नाथ जिमि रावण मारा॥७॥
राज्य बैठि कीन्ही बहु लीला। सकल कहहु शंकर शुभ शीला॥८॥
बहुरि कहहु करुणायतन, कीन्ह जु अचरज राम।
प्रजा सहित रघुवंश मणि, किमि गवने निजधाम॥९॥

(३७) तुलसीकृत रामायण की रचना तिथि=नवमी ९
'नवमी भौमवार मधु मासा'

(३८) विप्रगुण=९
यथा—ऋजु (सरल), तपस्या, सन्तोष, क्षमा, अतृष्णा, जितेंद्रिय, दातव्य, ज्ञान, दया,

(३९) पुराण–१८=१+८=९

(४०) व्यसन–१८=१+८=९

४१) नक्षत्र–२७=२+७=९

४२) जयमाला की गुरियां–१०८=१+८=९

४३) लेखन व्यवहार में पूज्यों की श्री संख्या–१०८=१+८=९

४४) वर्णमाला के वर्ण–६३=६+३=९

यथा—ह्रस्व ५, दीर्घ ८, प्लुत ९ }
कवर्ग ५, चवर्ग ५, टवर्ग ५ }
तवर्ग ५, पवर्ग ५, अंतस्थ ४ } ६३
ऊष्म ४, अयोग वाहरूप ८ }

४५) नवार्ण मंत्र=९ यथा—ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥इति॥

इति श्रीअंकविलासे भानुकवि विरचिते नवांक माहात्म्य वर्णनन्नाम अष्टादशो विलासः ॥



(२५) अक्षौहिणी संख्या=२१८७० =२+१+८+७=१८=१+८=९

(२६) युग वर्ष संख्या
कलियुग ४३२०००=४+३+२=९
द्वापर ८६४०००=८+६+४=१८=१+८=९
त्रेता १२९६०००=१+२+९+६=१८=१+८=९
सतयुग १७२८०००=१+७+२+८=१८=१+८=९

(२७) चारों युग के वर्षों का योग=(दिव्ययुग) ४३२००००=४+३+२=९

(२८) मन्वन्तर (७१ दिव्य युग) ३०६७२००००=३+६+७+२=१८=१+८=९

(२९) कल्प (१४ मन्वन्तर) ४२९४०८००००=४+२+९+४+८=२७=२+७=९

(३०) वर्ग खड़ी में गुरु नव हैं-का, की, कू, के, कै, को, कौ, कं, कः (९)

(३१) नायिका भेद प्रस्तार ४७८८=४+७+८+८=२७=२+७=९ वा १०८=९

(३२) काव्य भेद ३४०६२३९००=३+४+६+२+३+९=२७=२+७=९

(३३) चारो वेदों की मंत्र संख्या=१९४०४=१+९+४+४=१८=१+८=९

ऋग्वेद की मंत्र संख्या-१०५२८
यजुर्वेद की „ „ - १९७५
सामवेद की „ „ - १०६४
अथर्ववेद की „ „ - ५८४७

चारिहु वेद मंत्र विस्तार ।
बत्तिस सहस चारसौचार ॥

(३४) रामजन्म तिथि-नवमी (९) नवमी तिथि मधु मास पुनीता ।
शुक्ल पक्ष अभिजित हरि प्रीता ॥

(३५) तुलसीकृत रामायण की छन्द संख्या=९९९०=९+९+९=२७=२+७=९

(३६) तुलसीकृत रामायण में शंकर प्रति पार्वतीजी के प्रश्नों की संख्या=९

यथा—प्रथम सु कारण कहहु विचारी । निर्गुण ब्रह्म सगुण वपुधारी ॥१॥
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा ॥२॥ बाल चरित पुनि कहहु उदारा ॥३॥
कहहु यथा जानकिहिं बिवाहा ॥४॥ राज्य तजा सो दूषण काहा ॥५॥
बन बसि कीन्हे चरित अपारा ॥६॥ कहहु नाथ जिमि रावण मारा ॥७॥
राज्य बैठि कीन्हीं बहु लीला । सकल कहहु शंकर शुभ शीला ॥८॥
बहुरि कहहु करुणायतन, कीन्ह जु अचरज राम ।
प्रजा सहित रघुबंश मणि, किमि गवने निजधाम ॥९॥

(३७) तुलसीकृत रामायण की रचना तिथि=नवमी ९
'नवमी भौमवार मधु मासा'

(३८) विप्रगुण=९
यथा—ऋजु (सरल), तपस्या, सन्तोष, क्षमा, अतृष्णा, जितेंद्रिय, दातव्य, ज्ञान, दया,

(३९) पुराण-१८=१+८=९

(४०) व्यसन-१८=१+८=९

भावार्थ।

(१) सन् का उत्तरार्द्ध जैसे १८६६ का	६६
(२) उत्तर के सन् की चौथाई केवल लब्धि जैसे ६६ की	२४
(३) पूछी हुई तारीख जैसे मानो	६
(४) पूछे हुए महीने का मासिक अंक जिसका ज्ञान आगे होगा। जैसे सितम्बर के लिये	१
(५) पूछे हुए शतक का अंक जिसका ज्ञान आगे होगा। जैसे १८६६ के लिये	०

पाचों का योग १३३

१३३ में ७ का भाग दिया शेष बचे ०

शून्य से रत्न गया कि शनिवार होगा। इसका ज्ञान आगे होगा।

उक्त क्रिया से यह जाना गया कि ६वीं सितम्बर सन् १८६६ को शनिवार पड़ेगा।

मासिक अंक विचार।

सेप दिसम्बर एक है, ज्ञापर जुलाई होय।
जन् अक्टूबर तीन है, मे लौ अग पच होय ॥१॥
मार्च नवम्बर फरवरी, पट अर्काह गुनि लेव।
जून छून मन नालिये, पूछो दिन कहि देव ॥२॥
भि वर्ष में फरवरी, मास अंक है पाच।
[illegible] जनुरी जानिये, ज्योतिष मत यह साच ॥३॥

मावार्थ

साधारण वर्षांक।	लीप अर्थात् अधिवर्षांक
१	१
१	१
२	२
२	२
३	२
३	३
४	४
५	५
६	६
[illegible]	६
	५
	०

[illegible] विचार।

[illegible], सुन्न बचे तो चार।
[illegible] लदिये सुगम विचार।

आंग्लतारीख वार कथन ।

अंगरेजी महीनों की तारीखों के वार (दिन) जानने की रीतिः—

महीनों के नाम और दिन—जनवरी ३१, फरवरी २८, २९, मार्च ३१, अप्रैल
मई ३१, जून ३०, जुलाई ३१, अगस्त ३१, सितम्बर
अक्टूबर ३१, नवम्बर ३० और दिसम्बर ३१ दिन ।

जिस सन में चार का भाग पूरा जावे उस सन की फरवरी २९ दिन की
जाती है और जिन सनों में चार का भाग पूरा न जावे उन सनों की फरवरी २८
की होती है । इस प्रकार का योग प्रत्येक चौथे वर्ष आता रहता है । जिस साल
फरवरी का मास २९ दिन का माना जाता है उस साल को अंगरेजी में लीपइयर क
हैं । परन्तु पूर्ण शताब्दी के वर्षों के लिये चार के भाग का नियम चरितार्थ नहीं हो
शताब्दी के वर्षा मे जब चारसौ का भाग पूरा लग जावे तो वे वर्ष लीपइयर हो स
हैं । यथा —

सन् १३०० } इन वर्षों मे पूरे चारसौ का भाग नहीं लगता अतएव ये साध
सन् १४०० } वर्ष कहे जाते हैं ।
सन् १५०० }

सन् १६०० मे पूरे चारसौ का भाग जाता है अत लीप इयर है ।

सन् १७०० } इन वर्षों में पूरे चारसौ का भाग नहीं लगता अतएव ये साध
सन् १८०० } वर्ष कहे जाते हैं ।
सन् १९०० }

सन् २००० में पूरे चारसौ का भाग जाता है अतएव यह लीप इयर है । इससे
पाया गया कि साधारण वर्ष में चार का भाग जब लग जाता है तब
लीप इयर होता है और शताब्दी के वर्ष में जब चारसौ का भाग ल
है तब वह लीप इयर होता है । तथा —

सन् १८८८ } इन वर्षों में चार का भाग लग जाता है अत ये लीप इय
सन् १८९२ } अर्थात् इन सनो में फरवरी का महीना २९ दिनों का मानागया
सन् १८९६ }

सन २००० में चारसौ का भाग पूरा जाता है अतएव इस सन् की फरवरी लीप
की मानी जायगी और उसके २९ दिन होंगे ।

इन नियमों के स्मरणार्थ निम्न लिखित दोहा कंठ कर लेना समुचित होगा.—

साधारण अधिवर्ष स्यइ, भाग चार जहँ पूर ।
पूर्ण शतक अधि जानिये, भाग चारसौ पूर ॥

पूछी हुई तारीख के दिन बताने की नीचे एक विचित्र रीति लिखी जाती है —

उत्तरार्द्ध सन चौथ फल, पुनि तारिख मासक ।
जुरि शतक कै सप्त करि, शेष वार निःशक ॥

भावार्थ ।

(१) सन् का उत्तरार्द्ध जैसे १८९९ का	९९
(२) उत्तरार्द्ध सन् की चौथाई केवल लब्धि जैसे ९९ की	२४
(३) पूछी हुई तारीख जैसे मानो	९
(४) पूछे हुए महीने का मासिक अङ्क जिसका ज्ञान आगे होगा। जैसे सितम्बर के लिये	१
(५) पूछे हुए शतक का अङ्क जिसका ज्ञान आगे होगा। जैसे १८९९ के लिये	०
पाचों का योग	१३३

१३३ में ७ का भाग दिया शेष बचे ०

शून्य मे बचा, जाना कि शनिवार होगा। इस का ज्ञान आगे होगा।
उक्त क्रिया से यह जाना गया कि ९वीं सितम्बर सन् १८९९ को शनिवार पड़ेगा

मासिक अंक विचार ।

सेप दिसम्बर एक है, अपर जुलाई दोय।
जन् अक्टूबर तीन है, मे चौ अग पच होय ॥१॥
मार्च नवम्बर फरवरी, षट अङ्क गुनि लेव।
जून शून्य मन मानिये, पूछो दिन कहि देव ॥२॥
अधिक वर्ष मे फरवरी, मास अंक है पांच।
दोय जनवरी जानिये, ज्योतिष मत यह सांच ॥३॥

भावार्थ

मास	साधारण वर्षाङ्क।	लीप अर्थात अधिवर्षाङ्क
सितम्बर	१	१
दिसम्बर	१	१
अप्रैल	२	२
जुलाई	२	२
जनवरी	३	२
अक्टूबर	३	३
मई	४	४
अगस्त	५	५
मार्च	६	६
नवम्बर	६	६
फरवरी	६	५
जून	०	०

शतकांक विचार ।

पूर्व्वार्द्ध सन चौथ लगि, सुन्न बचे तो चार।
इक है, दै सुन, तीन पच, लहिये सुगम विचार ॥

भावार्थ।

पूर्व्वार्द्ध अर्थात् सन् के पहिले दो अंक लेलेवे और उसमें चार का भाग देवे यदि शेष.—

० बचे तो ४
१ बचे तो २
२ बचे तो ०
३ बचे तो ५

१७६८	का १७/४	शेष १	शतकांक २
१८६२	का १८/४	शेष २	,, ०
१९५५	का १९/४	शेष ३	,, ५
२०२२	का २०/४	शेष ०	,, ४
२११२	का २१/४	शेष १	,, २
२२२२	का २२/४	शेष २	,, ०

शेषांक विचार।

शनी शुन्य रवि एक है, सोम दोय कुज तीन।
बुद्ध चार गुरु पच त्यों, शुक्र षष्ठलो चीन॥

भावार्थ।

शेष		
०	रहे तो	शनिवार
१	,,	रविवार
२	,,	सोमवार
३	,	मंगलवार
४	,,	बुधवार
५	,,	गुरुवार
६	,,	शुक्रवार

इस रीति से चाहे जिस शतक और सन की तारीख का दिन सहजही में निकल सकता है, परंतु इस बात का ध्यान रखना अवश्य है कि योरोप खण्ड में सन १७५२ के पूर्व तारीखों के मानने में बड़ी ही गड़बड़ थी। सन् १७५२ के अंत में इस बात का निश्चय हुआ तब से अर्थात् १४ सितम्बर सन् १७५२ से तारीखों के दिन सही निकलेंगे। इसके पूर्व तारीख के दिन निकालना चाहो तो उत्तर वह निकलेगा जो इस रिवाज किये हुए नियमों के अनुसार होना चाहिये था। परन्तु वह न निकलेगा जो उस समय यथार्थ में मान लिया गया था।

नीचे पाठकों के सुगमार्थ सन १७५३ से सन १९५२ तक की १ जनी तारीखों

के दिन की दी जाती है जिसके द्वारा प्रत्येक मास की कौनसी तारीख को कौन दिन पड़ता है सहज मे ज्ञात होसकता है।

सन १७५२ से १९५२ तक के प्रत्येक महीनो की पहिली तारीखो के दिनो की जंत्री।

साधारण वर्ष	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१७६१,६७,७८,८९,९५, १८०१,७,१८,२९,३५, ४६,५७,६३,७४,८५, ९१,१९०३,१४,२५,३१, ४२	गु	र	र	बु	शु	सो	बु	श	मं	गु	र	म
१७६२, ७३, ७९, ९०, १८०२,१३,१९,३०,४१ ४७,५८, ६९, ७५, ८६, ९७ १९०९,१५,२६,३७, ४३	शु	सो	सो	गु	श	म	गु	र	बु	शु	सो	बु
१७५७,६३ ७४,८५,९१, १८०३,१४,२५, ३१,४२, ५३, ५९, ७०,८१, ८७, ९८,१९१०,२१,२७,३८, ४९	श	म	म	[illegible]	र	बु	शु	सो	गु	श	म	गु
१७५४,६५,७१,८२,९३, ९९,१८०५,११,२२,३३ ३९,५०,६१,६७,७८,८९, ९५,१९०१,७,१८, २९, ३५,४६	म	शु	शु	सो	बु	श	सो	गु	र	म	शु	र
१७५५,६६,७७,८३,९४, १८००,६, १७,२३,३४, ४५,५१,६२ ७३,७९,९०, १९०२,१३,१९,३०,४१, ४७	बु	श	श	म	गु	र	म	शु	सो	बु	श	सो
१७५८,६९,७५,८६,९७, १८०९,१५,२६,३७,४३, ५४,६५,७१,८२,९३,९९, १९०५,११,२२,३३,३९, ५०	र	बु	बु	श	सो	[illegible]	श	म	शु	र	बु	शु
१७५३,५९,७०,८१,८७, ९८,१८१०,२१,२७ ३८, ४९,५५,६६,७७,८३,९४ १९००,६,१७,२३,३४, ४५,५१	सो	गु	गु	र	म	शु	र	बु	श	सो	गु	श

लीप वर्ष (फरवरी के २९ दिन)	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१७६४,९२, १८०४,३२, ६०,८८,१९१६	र	बु	बु	र	म	शु	र	बु	श	सो	बु	श
१७६८,९६,१८०८,३६, ६४,९२,१९२०,४८	शु	सो	म	शु	र	बु	शु	सो	गु	श	म	गु
१७७२,१८१२,४०,६८, ९६, १९०८,३६	बु	श	र	बु	शु	सो	बु	श	म	गु	र	म
१७७६,१८१६,४४,७२, १९१२,४०	सो	गु	गु	सो	बु	श	सो	गु	र	म	शु	र
१७८०,१८२०,४८,७६, १९०४,३२	श	म	बु	श	सो	गु	श	म	शु	र	बु	शु
१७८४,१८२४,५२, ८०, १९२०,४८	गु	र	सो	गु	श	म	गु	र	बु	शु	सो	बु
१७६०,८८,१८२८,५६, ८४,१९२४,५२	म	शु	श	म	गु	र	म	गु	सो	बु	श	सो

उदाहरण

(१) ४ जनवरी १७६८ ६८+१७+४+६+२=९३/७ शेष २=सोमवार

(२) २२ फरवरी १८५६ ५६+१४+२२+५+०=९७/७ शेष ६=शुक्रवार

(३) ८ अगस्त १८५६ ५६+१४+८+५+०=८६/७ शेष २=सोमवार

(४) १ जनवरी १९०० ००+००+१+३+५=९/७ शेष २=सोमवार

(५) १३ फरवरी १९२४ २४+६+१३+५+५=५३/७ शेष ४=बुधवार

इति श्रीअनङ्गविलासे भानुकवि विरचिते आंग्ल तारीख प्रदर्शननाम पञ्चविंशो विलासः ।

दक्षिण वाम गणित कथन।

दोहे चौपै

चा[illegible] तीनऽ तावा चार, टोय दून पर तिगुणो गार।
समकर दहिने चादी जान, विष[illegible] अंक तो ताना मान॥
(गाय=दाहिना, पर=बाया)

किसी पृच्छक को दो चीजें दे दो और उनका मूल्य निश्चित कर दो जैसे [illegible] चाँदी का और एक छल्ला ताबे का, चादी के छल्ले का मूल्य तीन और ताबे [illegible] का चार निश्चित कर दो फिर उनसे कहो कि किसी एक छल्ले को दाहिने [illegible] और दूसरे को दूसरे हाथ मे गुप्त रख ले। फिर उससे कहो कि जो वस्तु दाहिने [illegible] में हो उसका दुगना अंक लो जो बायें हाथ में हो उसका तिगुना अंक लेकर [illegible] [illegible] जोड़कर हमें बताओ, सम अंक कहे तो दाहिने हाथ मे चादी होगी, [illegible]म अंक कहे तो दाहिने हाथ मे तावा होगा। यथा —

(१)			(२)		
दाहिना		बाया	दाहिना		बाया
चादी		तावा	तावा		चादी
३×२	+	४×३=१८	४×२	+	३×३=१७

सम अंक है तो दाहिने हाथ मे चादी जानो। विषम अंक हो तो दाहिने हाथ मे तावा जानो।

इति श्रीअङ्कविलासे भानुकवि विरचिते दक्षिण वाम गणित कथननाम विंशतितमो विलासः।



नारंगी गणित कथन ।

प्र०–एक स्त्री के पास कुछ सतरे थे वह तीन घरो में गई पहिले घर में उसने आधे सनरे और एक आधा सनरा वेचा, दूसरे घर में जो वचे थे उनका आधा और एक आधा सनरा बेचा, तीसरे घर में भी वैसाही किया पर कहीं सनरे को तोड़ा नहीं जब अपने घर वापस आई तब उसके पास ३६ सतरे वच रहे हो बताओ उसके पास कुल कितने सतरे थे ?

कुल संतरे २९५

दिये १४८ अर्थात् $\frac{१}{२}$ अधिक दिया

शेष १४७

दिये ७४ अर्थात् $\frac{१}{२}$ अधिक दिया

शेष ७३

दिये ३७ अर्थात् $\frac{१}{२}$ अधिक दिया

शेष ३६

(उलटी क्रिया)

३६ के दुने से कुछ अधिक बिना टूटे ३६×२=७२+१=७३

७३ " " ७३×२=१४६+१=१४७

१४७ " " १४७×२=२९४+१=२९५

इति श्रीअंकविलासे भानुकवि विरचिते नारंगी गणित कथननामएकविंशो विलासः॥

प्रश्न विनोद।

(१) प्र०-१९ म २ इस प्रकार मिलाओ कि योग २० से कम हो।

उ०-$१९\frac{१}{२}$

(२) प्र०-९९ में ९ इस प्रकार मिलाओ कि योग १०० से अधिक न हो।

उ०-$९९\frac{९}{९}$ = १००

(३ प्र०-एक वृक्ष में २० पक्षी बैठे थे एक शिकारी ने बन्दूक से एक को मार गिराया अब वृक्ष में कितने पक्षी रहे?

उ०-एक भी नहीं शेष सब उड गये।

(४) प्र०-आठ गज की एक मयाल है, एक आदमी एक दिन में एक गज काट सकता है तो बताओ पूरी मयाल काटने को कितने दिन लगेंगे?

उ०-सात दिन।

(५) प्र०-एक जहाज को एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने में १० दिन लगते हैं तो एक साथ दस जहाज जाने में कितने दिन लगेंगे?

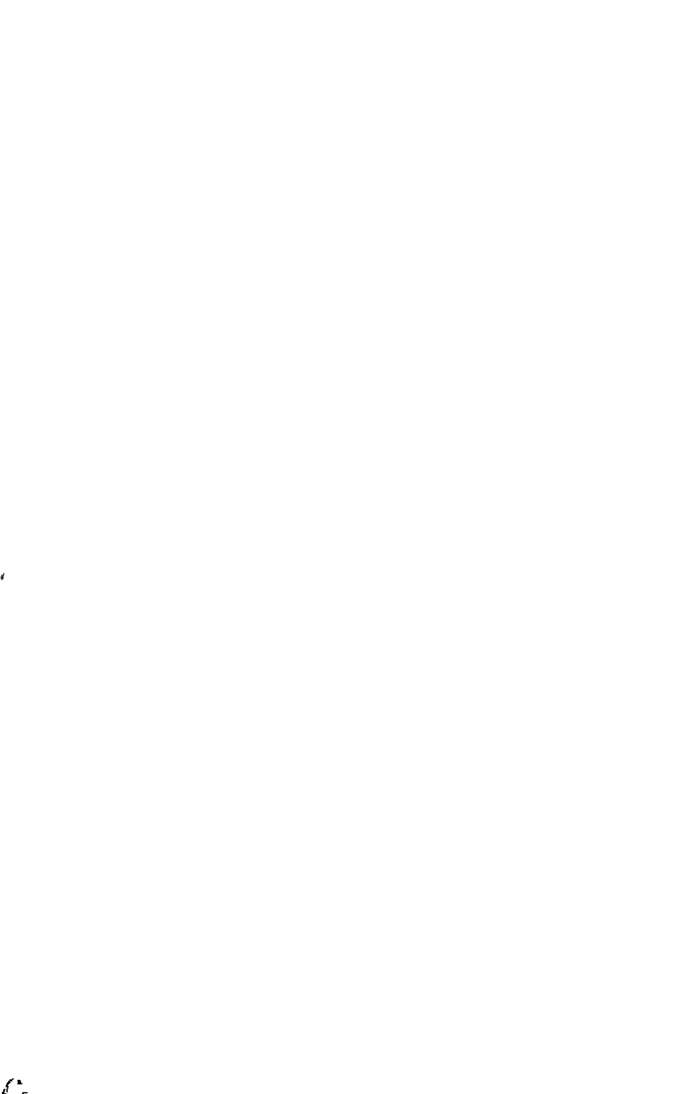
उ०-दस दिन।

(६) प्र०-एक नदी की गहराई कहीं २ कहीं ३ कहीं ४ और कहीं ७ फुट है जिसका औसत ४ फुट गहराई पड़ता है तो बताओ बिना नाव के पार जाने में आदमी डूबेगा या नहीं?

उ०-ऐसे प्रसग में औसत से काम न निकलेगा जहा अधिक गहरा है वहां न तैर सके तो अवश्य डूब जावेगा।

७) प्र०-एक साधारण कुआ खोदने और ईंट और चूने से बांधने में पाच आदमी प्रतिदिन दस घंटे के मान से तीस दिन में तयार कर सकते हैं तो ३०० आदमी एक साथ भिड़ जावें तो उसी कुए को खोदकर कितने दिनों में तैय्यार कर लेवेंगे?

उ०-गणित से तो आधे दिन में-परन्तु काल्पनिक और व्यवहारिक गणित में विशेष अन्तर है यहा काल्पनिक गणित से काम न निकलेगा व्यवहारिक गणितही काम आवेगा इस छोटे से काम में ३०० आदमी लगाना निरर्थक है कई तो निठल्लू बैठे रहेंगे और वृथा व्यय होगा खोदाई और जोड़ाई म उचित समय अवश्य लगेगा इसलिये आधे दिन म बन जाना असम्भव है ा दस आदमी लगाने से काम कुछ जल्दी हो सकेगा।



आयु कथन ।

(आयु बताना)

(१) मास दुगुण धन पाच करि, तिहि पुनि गुणौ पचास ।
आयु जोरि हृत वर्ष दिन, इक पन्द्रा जुरि स्वास ॥
वाम अंक सोइ मास है, शेष अंक वय जान ।
पृच्छक भाषत अंकही, आपुन कहिय विधान ॥

प्रश्नकर्त्ता को अपना जन्म महीना और अपनी उमर पहिले से ही मालूम होनी चाहिये उत्तरदाता पृच्छक के ही हाथ से गणित करावे और अंतिम संख्या देख वा सुन कर महीना और उमर कह देवे।

८×२=१६+५=२१×५०=१०५०+६४=१११४–३६५=७४९+११५=८६४

वाम अंक=८ (अगस्त)

शेषांक=६४ (आयु)

इससे ज्ञात हुआ कि पृच्छक का जन्म अगस्त में हुआ और उमर ६४ वर्ष की है।

२) केंद्रांश संख्या त्रिगुणी विधाय राह्वार सख्यांक कृतो विहीनम्
आयुः प्रमाणं कथित मुनीन्द्रैश्चिरतलैर्ज्योतिषिकैः स्मृतानि।

र्थ—जन्म कुंडली के केंद्रस्थानीय (अर्थात् १,४,७,१० घरों में) जो जो अंक हों उनको जोड़कर तिगुना करे और जहां राहु और आर (मंगल) बैठे हों उनके अंकों को जोड़कर त्रिगुणितांक से घटा देवे जो शेष रहे यह आयु का प्रमाण होगा यह स्थूलमान है।

३) अन्यमते

दिग ऋतु नख सर योग दृग, नख रस दिग मन राम ।
बेद ग्रहांकनि जोरि के, आयुः कहिय ललाम ॥

जन्म कुण्डली में जिस जिस घर में ग्रह हों वहां के अंक उपरोक्त क्रम से जोड़े जहां ग्रह न हों वहां छोड़ देवे जहां एक से अधिक ग्रह हों वहां उसी घर के क्रम से अंक बढ़ा लेवे तो आयु का स्थूलमान निकलेगा किसीर का मत है कि जिस घर के

राहु मंगल या शनि पड़े हों उनके अंकों को योग में से घटा देवे जो शेष रहे वह आयु का स्थूलमान होगा, यथा —

१ के अंक में जो ग्रह हो वहां			१०	७ के अंक में जो ग्रह हो वहां			२०
२	,,	,,	६	८	,,	,,	६
३	,,	,,	२०	९	,,	,,	१०
४	,,	,,	५	१०	,,	,,	१५
५	,,	,,	८	११	,,	,,	३
६	,,	,,	२	१२	,,	,,	४
							१०८

इति श्रीअंकविलासे स्वानुभव संग्रहीते आयु कथननाम अष्टादशो विलासः

संख्या प्रमाण।

एकं दश शतं चैव सहस्रमयुतं तथा।
लक्षंच प्रयुतं चैव कोटिरर्बुदमेवच॥
वृन्दः खर्वो निखर्वश्च शंख पद्मश्च सागरः।
अन्त्य मध्य परार्द्धंच दश वृद्ध्या यथा क्रमम्॥

संख्या	प्राचीन नाम	शून्य प्रमाण	आधुनिक नाम	सूचना
१	एक	०	एक	प्राचीन तथा केवल
१०	दश	१	दश	इन्हीं संख्याओं को है
१००	शत	२	सौ, सैकड़ा	अर्वाचीनों ने भ्रम से
१०००	सहस्र	३	सहस्र, हजार	१६ गलती है जो न्याय
१००००	अयुत	४	दस हजार	संगत नहीं है यदि
१०००००	लक्ष	५	लाख	१० शंख मानी जावे
१००००००	प्रयुत	६	दस लाख	तो १०० शंख का
१०००००००	कोटि	७	करोड़	क्या नाम होगा यथार्थ
१००००००००	अर्बुद	८	दस करोड़	में अर्ब से आगे गिनने
१०००००००००	वृन्द	९	अर्ब	में भ्रम होगया है शंख
१००००००००००	खर्व	१०	दस अर्ब	या महा शंख कुबेर
१०००००००००००	निखर्व	११	खर्ब	की निधि है और एक
१००००००००००००	शंख	१२	दस खर्ब	शंख दस निखर्व का
१०००००००००००००	पद्म	१३	नील	होता है इससे अधिक
१००००००००००००००	सागर	१४	दस नील	संपत्ति के स्वामी केव-
१०००००००००००००००	अन्त्य	१५	पद्म	ल लक्ष्मीनाथ हैं।
१००००००००००००००००	मध्य	१६	दस पद्म	
१०००००००००००००००००	*परार्द्ध	१७	शंख	* परार्द्ध मिति चरम संख्या।

इति श्रीअङ्कविलासे भानुकवि सम्पादिते संख्या प्रमाण वर्णनन्नाम चतुर्विंशो विलासः।

अंक मय जगद्दर्शन ।

अंक मय जगत का एक छोटा सा उदाहरण ।

यदि निठ कर देखो तो जगत भी क्याही विचित्र है, कोई आनन्द से ६थत पजाता है तो कोई दुख से ६९ पटाता है किसी को सोने के लिये ४पाई भी नहीं तो किसी को ६पर खट पर भी नींद नहीं कोई १००दागरी में मस्त, कोई अनाथ में लस्त, कोई १००भाग्यवती सुखी है तो कोई ६वाला वैधव्य से दुखी है कोई विज्ञापन ६पा रहा है तो कोई ६प्पय सुना रहा है कोई धर्म प्रथक है तो कोई समाथ प्रकाशक है कहीं बर७ की बहार है तो कहीं प्रजा अनावृष्टि से लाथ है कहीं २रे पहर पूरी ६न रही है तो कहीं ६०रे पहर भग ६न रही है कोई प्रा८ में चूर तो कोई प्र५ में भरपूर कोई जात का सर ५ है तो कोई बुड्ढा ख२० गड्डालय है कहीं १००त १००त का झगड़ा है तो कहीं ३-१३ नाई भाई का रगड़ा है कहीं किसी का धन ६ होता है तो कोई ५म राग में मस्त होता है कहीं १०मी १०हरे का त्यौहार है तो कहीं दुखित रोगियों का उप४ है कहीं राजा की आ.#११ती है तो कहीं प्रजा दुखित हो अपनी बि७ भर विनय करती है कोई निर्प में पड़ा है तो कोई ग२प में अड़ा है, कोई अपनी नयी १००० दास्ता सुना रहा है तो कोई अपनी ३०मारखानी बघार रहा है कोई १,००,००० वा १,००,००,००० यत्न करने पर भी सफल नहीं होता किसी को ईश्वर बिना प्रयत्नही ६प्पर फाड़कर देता है यथार्थ में बस १ का अन्त किसी ने न पाया । ×

इति श्रीअंकविलासे भानुकवि विरचिते अंकमय जगत दर्शननाम षड्विंशो विलासः ।

(अंक) *

अङ्कानाम् वामतो गतिः

अंक अगुण आखर सगुण, समुझत उभय प्रकार ।
खोये राखे आप भल, तुलसी चारु विचार ॥
रामायुध अंकित गृह, शोभा बरणि न जाय ।
नव तुलसी के वृन्द बहु, देखि हर्ष कपिराय ॥
मंत्र महा मणि विषय व्याल के, मेटन कठिन कुअंक भाल के ॥
तुम सन मिटहिं कि विधि के अंका । मातु वृथा जनि लेहु कलंका ॥
सीय राम पद अंक बराये । लखन चलत मग दाहिन बाये ॥
एकहि आंक यही मन माही । प्रात काल चलिहौं प्रभु पाहीं ॥
हरषहिं निरखि राम पद अंका । मानहु पारस पायउ रंका ॥
गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी सम्पति अति रंका ॥
अब भरि अंक भेंटि मोहि भाई । लोचन सफल करहुं मैं जाई ॥

सू०—इस सम्बध मे मंगलाचरण भी देखिये ।

*अंक-गिनतीके अंक, चिन्ह, गोद, संख्या, नाटकांश, ग्रन्थांश, नव संख्याका संकेत ।

अंक पदावली कथन ।

$\frac{१}{२}$

श्लोकेन वा तदर्द्धेन तदर्द्धार्द्धाक्षरेण वा ।
अवन्ध्यन्दिवसकुर्य्या द्दानाध्ययन कर्मभिः ।
अर्ध वसति कैलासे, अर्ध गायक मंदिरे ।
सम्पूर्ण वणिजागारे, यो जानाति स पंडितः ।
अजीर्णे भेषज वारि, जीर्णे वारि बल प्रदम् ।
अमृत भोजनार्धेतु, भुक्तस्योपरि तद्विषम् ।
सर्व्वे नाशे समुत्पन्ने, अर्ध त्यजति पंडितः ।
अर्धेन कुरुते कार्य, सर्व नाशो न जायते ।

शूली जातः कदशन वशाद्भैक्ष्य योगात्कपाली ।
वस्त्राभावाद्विगत वसनः स्नेह शून्यो जटावान् ।
इत्थं राजस्तव परिचया दीश्वरत्वं मयाप्तं ।
नाद्यापि त्वं मम नरपते ह्यर्द्ध चन्द्रं ददासि ।
अर्द्ध दानव वैरिणा गिरिजयाप्यर्ध हरस्याहृतं ।
देवेत्थं भुवन त्रये स्मरहरा भावे समुन्मीलति ।
गंगा सागर मम्बरं शशि कला शेषश्च पृथ्वी तल ।
सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्व मग मत्त्वामाव भिक्षाटनम् ।
अर्ध मात्रा लाघवेन पुत्रोत्सवंमन्यन्ते वैयाकरणाः ।

अर्ध भाग कौशल्यहि दीना, उभय भाग आधेकर कीन्हा ।
गिरा मुखर तनु अर्ध भवानी, रति अति दुखित अतनु पतिजानी ।
सकुचो तात कहत इक बाता, अर्ध तजहिं बुध सर्वस जाता ।
अर्ध राति पुर द्वार पुकारा, बाली रिपु बल सहै न पारा ।
अर्ध राति गइ कपि नहीं आवा, राम उठाय अनुज उर लावा ।
आधा कटक कपिन संहारा, कहहु बेग का करिय विचारा ।
इहा अर्ध निशि रावण जागा, निज सारथि सन खीझन लागा ।
अर्ध निशा वह आयो भौन, सुन्दरता वर्णै कहि कौन ।
निरखतही मन भयो अनन्द, क्यो सखि सज्जन ना सखि चन्द
आधा कैलासहि बसे, आधा गायक हाथ ।
पूरण बनिया घर रहे, जानै सोइ सनाथ । (हरताल)
आधा दूलह आधा रोग, बीच बाग मे भा सजोग । (बरगद)
पूरा है पर आधा नाम, औषधि के वह आवे काम । (नीम)
अध जल गगरी, छलकत जाय ।
आध सेर के पात्र मे, कैसे सेर समाय ।
आधी छोड़ एक को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे ।
आधा तीतर आध बटेर ।
आधे मार्धे, कामरि कांधे ।
आधे गाव दिवारि है, आधे में है फाग ।
एक घड़ी आधी घड़ी, आधिउ में पुनि आध ।
तुलसी संगति साधु की, हरै कोटि अपराध ॥

खाय के पान विराजत ओठ है बैठि सभा में बने अलवेला।
धोती किनारी की मार्डी सी ओढत पेट बढाय किये जस थैला।
बेश गुपाल बखानत है यह भूप कहाय बने फिर छैला।
सान करे बड़ी साहिबी की अरु दान में देत न एक अधेला॥

(१)

एक मेवाक्षरयस्तु, गुरुः शिष्य प्रबोधयेत्
पृथिव्या नास्ति तद्द्रव्यं, यद्दत्वाचानृणी भवेत्।
एकाक्षर प्रदातारं, यो गुरु नाभि वंदति।
श्वानयोनिशत भुक्त्वा चाण्डाले प्वभिजायते।
यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।
एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति॥
एको देवः केशवो वा शिवोवा, एकानारी सुन्दरी वा दरीवा।
एक मित्र भूपतिर्वा यतिर्वा, एको वासः पत्तने वा वनेवा।
अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमनसौभाग्य विलोपि जातम्।
एकोहि दोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाकः।
एकोहि दोषो गुण सन्निपाते, निमज्जतीन्दोरिति योन भाषे।
न तेन दृष्ट कविनाशास्त, दारिद्र्य मेक गुण कोटि हारि।
एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो, दशाश्वमेधाव भृथेन तुल्यः।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म, कृष्ण प्रणापी न पुनर्भवाय।
श्रुतिर्विभिन्नास्मृतिरेव भिन्ना, नेको मुनिर्यस्य वचोऽप्रमाणम्।
धर्मस्य तत्व निहित गुहाया, महाजनो येन गतः सपथाः।
सर्व धर्मान्परित्यज्य, मामेकं शरण व्रज।
अहंत्वा सर्व पापेभ्यो, मोक्ष यिष्यामि माशुचः।
एक एव सुहृद्धर्मो, निधनेप्यनुयातियः।
शरीरेण समन्नाश, सर्व मन्यद्धि गच्छति।
एके नापि सुपुत्रेण, पवित्र गुण शालिना।
सुरभिः क्रियते गोत्रश्चन्दने नेव काननम्।
ओमित्येकाक्षरब्रह्म, व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं, सयाति परमागतिम्।
चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चले जीवित मंदिरे।
चला चलेच संसारे, धर्म एकोहि निश्चलः।

१-२ एकस्य दुःखस्य न यावदंतं, पारंगमिष्यामि अपार्णवस्य ।
तावद् द्वितीय समुपस्थितम्मे, छिद्रेष्वनर्था बहुली भवंति ।

१-२-३-½ एक मात्रोभवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।
त्रिमात्रस्तु प्लुतोज्ञेयो व्यंजनं चार्द्ध मात्रकम् ।

१-२-३-४ प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये न तपस्तप्तं, चतुर्थे किं करिष्यसि ।

१-२-३ } एकस्तपो द्विरध्यायी, त्रिभिर्गानं चतुष्पथः ।
४-५-७ } पंच सप्त कृपिश्चैव, संग्रामो बहुभिर्जनैः ।

१ से ९ प्रथम शैल पुत्रीति, द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चंद्र घण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।
पंचमं स्कंद मातेति षष्ठंकात्यायनीतिच ।
सप्तमं काल रात्रिश्च महागौरीतिचाष्टमम् ।
नवमं सिद्धि दात्रीच नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।

१-१० एके नैव सुपुत्रेण, सिंही स्वपिति निर्भया ।
सहैव दशभिः पुत्रैर्भार वहति गर्दभी ।

१-१०० } एकोऽपि गुणवान्पुत्रो, निर्गुणैश्च शतैर्वरः ।
१००० } एकश्चन्द्रस्तमोहन्ति, नचतारा: सहस्रशः ।

---

(१) एक अनीह अरूप अनामा, अज सच्चिदानन्द परधामा ॥
भरत सुभाव सुशीतल ताई, सदा एक रस बरणि न जाई ॥
आश्रम एक दीख मग माहीं खग मृग जीव जन्तु कछु नाहीं ॥
बन्दौं सन्त असज्जन चरणा, दुख प्रद उभय बीच कछु बरणा ॥
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं, मिलत एक दारुण दुख देहीं ॥
एकहि बाण प्राण हरि लीन्हा, दीन जानि तेहिं निज पद दीन्हा ॥
एक निमेष वर्ष सम जाई, यहि विधि भरत नगर नियराई ॥
एक बार चुनि कुसुम सुहाये, निजकर भूषण राम बनाये ॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा, काय वचन मन पति पद प्रेमा ॥
सुनु सुग्रीव मैं मारिहौं, बालि एकही बाण ।
ब्रह्म रुद्र शरणागत, गये न उबरहिं प्राण ॥
एक बाणि करुणा निधान की, सो प्रिय जाके गति न आन की ॥
सग नारि इक देखि अनूपा, बरणि न सकहिं शेष तेहि रूपा ।

निशिचर एक सिन्धु मह रहई, करि माया नभ के खग गहई ॥
शैल विशाल देखि इक आगे, तापर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे।
बलि जीतन इक गयउ पताला, राखा बांध शिशुन हय शाला ॥
एक बहोरि सहस भुज पेखा, धाइ धरा जनु जन्तु विशेखा।
एक कहत मोहि सकुच अति, रहा बालि की काख।
तिन महँ रावण कवन तैं, सत्य कहहु तजि माख ॥
एकहि बाण काटि सब माया, जिमि दिन कर हर तिमिर निकाया।
लीन्ह एक तेहि शैल उपाटी, रघुकुल तिलक भुजा सोइ काटी।
निज जननी के एक कुमारा, तात तासु तुम प्राण अधारा।
एक नारि व्रत रघुबर केरा, लखन सुयश तुन सुनेहु घनेरा।
रहा एक दिन अवधि अधारा, समुझत मन दुख भयउ अपारा।
रहा एक दिन अवधि कर, अति आरत पुरलोग।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर, कृश तनु राम वियोग।
कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना, एक अधार राम गुण गाना।
कलिकर एक पुनीत प्रतापा, मानस पुण्य होइ नहिं पापा।
यहि कलिकाल न धर्म विवेकू, राम नाम अवलम्बन एकू।
एक हाथ बाजे नहि तारी।
इक तें एक दई के ताल।
इकलो चना भाड नहिं फोडै।
एक गरीबी आटा गीला।
इक मछली सर गंधित करै।
एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी।
इक नागिन अरु पख लगाय।
एक पूत जनि जनियो माय, घरै रहै की बाहर जाय।
रे मन साहसी साहस राख, सु साहस से सब फेर फिरेंगे।
ज्यों पद्माकर या सुख मे दुख त्यो दुख में सुख सेर फिरेंगे ॥
वैसही वेणु बजावत श्याम सुनाम हमारहू टेर फिरेंगे।
एक दिना नहिं एक दिना कबहू फिर वे दिन फेर फिरेंगे ॥
'कहै कृपाराम सब सीखबो निकाम एक बोलिबो न सीख्यो सब
सीख्यो गयो धूर में।
काजर की कोठरी में केतेहु बचाये चलो एक रेख काजर की लागिहै
पै लागिहै।

एक जने से दोय भले।
एक पथ दो काज।
एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
जो गहि सेवै मूल को, फूलै फलै अघाय॥
थोरे गरजै बूदन एक।
ताशहि सों यह लही विवेका, सब तें भगत जगत महँ एका।
चलियो भलो न कोस को, दुहिता भली न एक।
मगियो भलो न बाप सों, जो विधि राखै टेक॥
भलै मनुस की एकै बात।
भूमि एक बिस्वा नहीं, नाम धर्यो भूपाल।
सब चूमैंगे अगूठा एक तू न रूठा चाहिये।
है अने की जोय को, एक सहायक राम।
सिंह लगन सु पुरुष बचन, कदलि फरै इकबार।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार॥
ब्रह्म, चन्द्रमा, भूमि अरु, रद गनेश है एक।
गज मुकता त्यों शुक्र चख, एक कहे सविवेक॥
टका करै कुलहूल टका मिरदंग बजावै।
टका चढ़ै सुखपाल टका सिर छत्र धरावै॥
टका माइ अरु बाप टका भैयन को भैया।
टका सासु अरु ससुर टका सिर लाड लडैया॥
सो एक टका बिन इक टका होत रहत नित रात दिन।
बैताल कहै विक्रम सुनो धिक जीवन इक टके बिन॥

१-२ चलो सखी तहँ जाइये जहा बसै ब्रजराज।
गोरस बेंचत हरि मिलै एक पंथ दो काज॥

१-२ इक दूबर अरु दोय असाढ।

१-२ इक तो है ही करू करेला, दूजे नीम चढो।

१-२ एकहि बार आस सब पूजी, अब कछु कहब जीह करि दूजी।

१-२ इक तो बुढिया नाचनी, दूजे घर भा नाति।

१-२ एकहि म्यान माहिं द्वै खाडे।

१-२ लेना एक न देना दोय।

१-२ एक छत्र इक मुकुट मणि, सब वर्णन पर जोइ।
तुलसी रघुवर नाम के, वरण विराजत दोइ।

१-४ एक दंत दयावंत चार भुजा धारी, माथे सिंदूर लसै मूषक असवारी।

१-४ गृहिन दरिद्र गृह त्यागिन विभूति दीन्ही भोगिन वियोग पुण्यवन्तहू छलो गयो। ग्रहन ग्रहेश कियो शनी को सुचित्त लघु व्यालन अनद शेष भारन दलो गयो। फेरन फिरावत गुणिन द्वार द्वार नीच गुणन विहीन घर बैठेही भलो भयो। कौन कौन चूक कहौं तेरी एक आनन तें नाम चतुरानन पै चूकतो चलो गयो॥

१-४-५
६-१००० गावत गजानन सकुचि एक आनन तें, जात चतुराननहू बैठि वश लाज के। मौन गहि रहे शंभु कहि पंच आनन तें, भापत षडानन ना सामुहे समाज के॥ कहौं पुनि कौन विधि गाइये गुणानुवाद, 'भानु' लघु आनन तें देव सिरताज के। शेष जब गावै सहसानन तें तोहू गुन, गाये ना सिरात व्रजराज महराज के॥

१-५ एक मुख गाये ताते पाच मुख पाये अब पाच मुख गाइहौ तो केते मुख पाइहौ (गंगालहरी)

१-६ देव एक गुण धनुष हमारे, नव गुण परम पुनीत तुम्हारे।

१से६ तोसो तुही इक कृष्ण प्रिया, नहिं दूजि लखी त्रयलोक मझारी।
चारिहु वेद थके गुण गाय, तिया पंच बाणहु की छविहारी।
राग छौ अनुराग भरी, सत सिन्धु ना अस रूप निहारी।
आठहु सिद्धि नवौ निधि देत, सदा जन को वृषभान दुलारी।

१-६ एक एक तो बात है, लगी नौ नौ हाथ।

१-१० राम नाम इक अंक है, सब साधन हैं सून।
अंक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दसगून॥

१-१०० शेर पूत एकै भलो, सौ सियार के नाहिं।

(१सहस) एक वार तरवार को सहस वार अहसान।

१ कोटि जौलों एक तारे को हौ रचत कवित गंग तौलों तुमकेतिक करोर तारि डारतीं (गंगालहरी)

($१\frac{१}{२}$)

डेढ़ पायली रमतिला, मिरजापुर की हाट।

(२)

शोकारातिभय त्राणं, प्रीति विश्रम्भ भाजनम्
केन रत्न मिदं सृष्टं मित्र मित्यक्षर द्वयम्।
रामादपिच मर्त्तव्य, मर्त्तव्यं रावणादपि
उभयोर्यदि मर्त्तव्य, वरं रामो न रावणः।
संसार विष वृक्षस्य, द्वे एव रस वत्फले
काव्यामृत रसा स्वादः, संगमः सुजनैः सह।
संग्रामे सुभटेन्द्राणा, कवीनां कवि मंडले
दीप्तिर्वा दीप्तिहानिर्वा, मुहूर्तादेव जायते।
नवेदाच्च परं शास्त्रं, न देवः केशवात्परः।

२-३ खादन्न गच्छामि हसन्न जल्पे, गतं न शोचामि कृतंनमन्ये
द्वाभ्यां तृतीयो न भवामि राजन् किं कारणं भोज भवामि मूर्खः।

२-४-६-८ स्त्रीणा द्विगुणा आहारो, लज्जा चापि चतुर्गुणा
साहस षट् गुणंचैव, कामश्चाष्ट गुणाः स्मृतः।

२-६-३ न गच्छेता पिता पुत्रौ न गच्छे त्सोदर द्वयम्
नव नार्योन गच्छेयु र्न गच्छेद् ब्राह्मण त्रयम्।

---

२ पक्ष, नदीतट, धार असि, श्रुति उरोज, चख, हाथ।
राम पुत्र अरु हस्ति रद, चक्र सारस द्वै साथ॥
आखर मधुर मनोहर दोऊ, वरण विलोचन जन जिय जोऊ।
सिया राम मय सब जग जानी, करौं प्रणाम जोरि जुग पानी।
कह दुहुं कर जोरी अस्तुति तोरी, केहि विधि करौं अनन्ता।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना, वेद पुराण भनन्ता।
तेहि अवसर आये दोउ भाई, गये रहे देखन फुलवाई।
राम लषन दोउ वन्धु वर, रूप शील वल धाम
मख राखेउ सब साखि जग, जीति असुर संग्राम।

मुनि पद कमल वंदि दोउ भ्राता, चले लोक लोचन सुखदाता।

निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई, होहिं सुखी लोचन फल पाई।

सहज मनोहर मूरति दोऊ, कोटि काम उपमा लघु सोऊ।

प्रभु दोउ खंड चाप महि डारे, देखि लोग सब भये सुखारे।

सुनहु महीपति मुकुट मणि, तुम सम धन्य न कोउ।
राम लषण जिनके तनय, विश्व विभूषण दोउ॥

हर्षि बन्धु दोउ हृदय लगाये, पुलक अंग लोचन जल छाये।

दुइ बरदान भूप सन थाती, मागहु आजु जुडावहु छाती।

दुइकि होइ इक संग भुआलू, हँसब ठठाइ फुलाउब गालू।

तुलसी या जग आइकै, करि लीजे दो काम
देबे को टुकडा भलो, लेबे को हरि नाम।

भइ मति कीट भृंग की नाईं, जहँ तहँ मैं देखहु द्वै भाई।

गुण ते गरुवो होत, नहिं संपति न सहायते,
पूनोचन्द उदोत, दुतिया की सरवर नहीं।

जग में साचे दो जने, एक राम अरु दाम।
इक दाता है मोक्ष के, एक सुधारै काम॥

लाल लाल सबही कहत, लाल जगत में दोय।
इक सागर में दूसरो, मातु कोख में होय॥

दुविधा मे दोऊ गये, माया मिली न राम।

ये कबहूं नहिं दूबर होत रसोई के बिम कसाइ के कूकर।

सोनो औ सुगन्ध तो नें ढोनो डॅकियतु है।

($1\frac{1}{2}$)

ढेढ पायली रमतिला, मिरजापुर की हाट।

(२)

शोकाराति भय त्राणं, प्रीति विश्रम्भ भाजनम्
केन रत्न मिदं सृष्टं मित्र मित्यक्षर द्वयम्।
रामादपिच मर्त्तव्यं, मर्त्तव्यं रावणादपि
उभयोर्यदि मर्त्तव्य, वर रामो न रावणः।
संसार विष वृक्षस्य, द्वे एव रस वत्फले
काव्यामृत रसा स्वादः, संगमः सुजनैः सह।
संग्रामे सुभटेन्द्राणा, कवीना कवि मंडले
दीप्तिर्वा दीप्तिहानिर्वा, मुहूर्तादेव जायते।
नवेदाच्च परं शास्त्र, न देवः केशवात्परः।

२-३ खादन्न गच्छामि हसन्न जल्पे, गतं न शोचामि कृतंनमन्ये
द्वाभ्यां तृतीयो न भवामि राजन् कि कारणं भोज भवामि मूर्खः।

२-४-६-८ स्त्रीणा द्विगुण आहारो, लज्जा चापि चतुर्गुणा
साहस षट् गुणंचैव, कामश्चाष्ट गुणः स्मृतः।

२-६-३ न गच्छेता पिता पुत्रौ न गच्छे त्सोदर द्वयम्
नव नार्योन गच्छेयु नै गच्छेद् ब्राह्मण त्रयम्।

---

२ पक्ष, नदीतट, धार असि, श्रुति उरोज, चख, हाथ।
राम पुत्र अरु हस्ति रद, चक्र सारस द्वै साथ॥
आखर,मधुर मनोहर दोऊ, वरण विलोचन जन जिय जोऊ।
सिया राम मय सब जग जानी, करौं प्रणाम जोरि जुग पानी।
कह दुहु कर जोरी अस्तुति तोरी, केहि विधि करौं अनन्ता।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना, वेद पुराण भनन्ता।
तेहि अवसर आये दोउ भाई, गये रहे देखन फुलवाई।
राम लषन दोउ वन्धु वर, रूप शील वल धाम
मख राखेउ सब साखि जग, जीति असुर संग्राम।

मुनि पद कमल वंदि दोउ भ्राता, चले लोक लोचन सुखदाता ।

निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई, होहिं सुखी लोचन फल पाई ।

सहज मनोहर मूरति दोऊ, कोटि काम उपमा लघु सोऊ ।

प्रभु दोउ खड चाप महि डारे, देखि लोग सब भये सुखारे ।

सुनहु महीपति मुकुट मणि, तुम सम धन्य न कोउ ।
राम-लषण जिनके तनय, विश्व विभूषण दोउ ॥

हर्षि बन्धु दोउ हृदय लगाये, पुलक अंग लोचन जल छाये ।

दुइ बरदान भूप सन थाती, मागहु आजु जुड़ावहु छाती ।

दुइकि होइ इक संग भुआलू, हँसब ठठाइ फुलाउब गालू ।

तुलसी या जग आइकै, करि लीजे दो काम
देबे को टुकड़ा भलो, लेबे को हरि नाम ।

भइ मति कीट भृंग की नाई, जहँ तहँ मैं देखहु द्वै भाई ।

गुण ते गरुवो होत, नहिं संपति न सहायते,
पूनोचन्द उद्योत, दुतिया की मरजाद नहीं ।

जग में साचे दो जने, एक राम अरु दाम ।
इक दाता हैं मोक्ष के, एक सुधारैं काम ॥

लाल लाल सबही कहत, लाल जगत में दोय ।
इक सागर में-दूसरो, मातु कोख में होय ॥

दुविधा में दोऊ गये, माया मिली न राम ।

ये कबहू नहिं दूसर होत रसोई के बिन कसाइ के [illegible]

घोनो औ सुगन्ध तो ने दोनो देखियतु है ।

वेद पुराण संत मत येहु, सीय राम पद सहज सनेहू।

अँधरा मागै दुइ आखी।

दोइ हांथ सों बाजै तारी।

दोय घरों का पाहुना, भूखो ही रहि जाय।

खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो।

द्वौ तुम नीति निधान लला, परमारथ स्वारथ साधत दोऊ।

२-३ राज को दूसरो छेरी को तीसरो, रेंड को मूसरो खासर खूसा।

२-३ दो जन की तकरार में, तीजे की है मौज।

२-४ श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी, निरखहिं छवि जननी तृण तोरी।
पारिउ शील रूप गुण धामा, तदपि अधिक सुख सागर रामा॥

२-६० बोले नल दोउ भुजा उठाई, योजन साठि मोर गति भाई।

२-४-८ जामें द्व अधेली चार पावली दुअन्नी आठ, तामें पुनि आना लखो
१६-३२ सोरह समात है। बत्तिस अधन्नी जामें चवसठ पैसा होत, एकसौ
६४-१२८ अठाइस सुधेला गुनमात है। जुग सत छप्पन छदाम तामें देखियत,
२५६-५१२ दमरी सु पाच सत बारह लखात है। कठिन समैया कलिकाल को
कुटिल दैया, सलग रुपैया भैया कापै दियो जात है।

($2\frac{1}{2}$)

ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय।

घोड़ाहू शतरंज को, चलै अढ़ाई चाल।

ढाई चावल खीचड़ी, पके मिया की मिश्र।

बूढ़ा राजा ढाई दिन का।

(३)

अधमा धन मिच्छति, धन मानंच मध्यमाः
उत्तमा मान मिच्छति, मानोहि महतां धनम्।

असारे खलु संसारे, सारमेत त्रय स्मृतम्
काश्यां वासः सतां सेवा मुरारेः स्मरण तथा।

उपमा कालिदासस्य, भारवे र्थे गौरवम्
दण्डिनः पदलालित्य, माघे सति त्रयो गुणाः।

तमाल त्रिविधं प्रोक्तं, कलौ भागीरथी यथा
क्वचिद् धुक्का क्वचि त्युक्का क्वचिन्नासाग्र गामिनी।

प्रदाने विप्र पीडास्तु, पुत्र पीडास्तु भोजने
शयने पत्नि पीडास्तु, त्रि पीडास्तु दिने दिने।

दूरस्थाः पर्वता रम्या, वेश्याच्च मुख मडने
युद्धस्य वार्ता रम्याच, त्रीणि रम्याणि दूरतः।

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जल मन्न सु भाषितम्
मूढैः पाषाण खण्डेषु, रत्न सज्ञा विधीयते।

पुष्प दृष्ट्वा फल दृष्ट्वा, दृष्ट्वास्त्रीणाच यौवनम्
त्रीणि रत्नानि दृष्ट्वै कस्यनो चलते मनः।
पिता यस्य शुचिर्भूतो, माता यस्य पतिव्रता
उभाभ्यां यश्च सभूतो, तस्य नोचलित मनः।

सकृज्जल्पति राजानः सकृज्जल्पति पण्डिताः
सकृत्कन्या प्रदीयन्ते, त्रीण्येतानि सकृत्सकृत्।

भकारः कुम्भकर्णोच, भकारश्च विभीषणो
तयोर्ज्येष्ठ कुलश्रेष्ठे, भकारःकि न विद्यते। (रावण, रावणः)

३-६-११ त्रिषद् एकादशे राहुः त्रिषद् एकादशे शनिः
त्रिषद् एकादशे भौमः सर्वारिष्ट निवारणम्।

३ जानहिं तीन काल निज ज्ञाना, करतल गत आमलक समाना।

त्रिविध ताप त्रासक त्रिमुहानी, राम स्वरूप सिन्धु समुहानी।

त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम, गति सर्वत्र तुम्हारि।
कहहु सुता के दोष गुण, मुनिवर हृदय विचारि॥

सौरभ पल्लव मदन विलोका, भयउ कोप कांपेउ त्रय लोका।
तब शिव तीसर नयन उघारा, चितवत काम भयउ जरि छारा।

चली सुहावनि त्रिविध बयारी, काम कृशानु बढावन हारी।

तुम त्रिकालदर्शी मुनि नाथा, विश्व बदरि जिमि तुम्हरे हाथा।

त्रिविध समीर बहै सुखदाई, निरखत वन शोभा अधिकाई।

उभय बीच सिय सोहत कैसी, ब्रह्म जीव बिच माया जैसी।

राम कृपा अतुलित बल तिनहीं, तृण समान त्रय लोकहिं गिनहीं।

सचिव वैद्य गुरु तीन जो, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज्य धर्म तन तीनि कर, होइ बेगही नास॥

विनय न मानत जलधि जड़, गये तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिन होय न प्रीति॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज्य काहू नहिं व्यापा।

रूप में कसर नाहीं राग में कसर नाहिं लाग में कसर नाहिं लाजहू की घेरी है। रंग में कम्मर न कसर है उमगहू में प्रेम के प्रसंगहु में परम घनेरी हैं॥ ग्वाल कवि हाव में न भाव में कसर यहां चाव में कसर ना चलाक बहुतेरी है। तीन है कसर ऊधौ काहू के न कूब ईशां नाइन न जाति अरु काहू की न चेरी हैं॥

राज, तिया, अरु बाल हठ, तीन प्रबल हठ जान।

चढ़ै रंग तीसरि बार के बोरे।

बड़ी बड़ाई गोंड की, तीन कोस को कोस

धन जमीन जर तीन ये, सब झगड़ों के मूल

कौड़ी न हो जो पास तो कौड़ी के तीन तीन

तीन कौर भीतर तो सूझै देव पीतर।

तीन लोक तें मथुरा न्यारी।

वही ढाक के तीनहिं पात।

नौका दूती वैद्य प्रवीन, काम सरे पुछियत नहिं तीन।

भट भटयारी वेसवा, तीनों जाति कुजात।
आये को आदर करें, जात न पूछैं बात॥

भूल गये राग रंग, भूल गये चकरी।
तीन चीज याद रहीं, नून तेल लकरी॥

छुये चाम तें चाम कटावैं, भुइंमा सकरे सोवैं।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा, उढरि जाय अरु रोवैं॥

सभा बिगारे तीन जन, चुगुल चुतिया चोर।

तीन तिकार महा बिगार।

लीक लीक गाड़ी चलै, लीकहि चलै कपूत।
लीक छाड़ि तीनो चलें, शायर सिंह सपूत॥

ओरा भूत ऽरु साप कहानी, तीनों में बहु झूठ समानी।

तीनों पन नहिं एक समान।

श्रोता त्रिविध समाज पुर, ग्राम नगर दुहु कूल।
सन्त सभा अनुपम अवध, सकल सुमंगल मूल॥

की तुम तीन देव महं कोऊ, नर नारायण की तुम दोऊ।

३-४ ऋतु बसन्त बह त्रिविध बयारी, सब कहँ सुलभ पदारथ चारी।

३-४ तीन दिना तक पाहुना, चौथे बेईमान।

३-१३ तीन माहिं नहिं तेरा में, ढोल बजावें डेरा में।

३-१३ तीन बुलाये तेरा आये, देखौ घर की रीति।
बाहर वाले खागये, घर के गावैं गीत॥

३-१३-९-१८ तीन तेरा नौ अठारा, जानिये घर फूट।

(३½)

साढ तिहत्थी मानुष देह। पाये हरि सों करौ सनेह।

साढ़े तीन यार का किस्सा। है नव शौकीनो का यह हिस्सा।

रहे पेशवा राज्य में, साढ़े तीन सयान।
सखा देव विठ्ठल विदित, आधे नाना जान।

१ सखाराम पंत
१ देवाजी पंत
१ विट्ठलराव
½ नाना फड़नवीस

चक्र सुदर्शन वज्र इक, इन्द्र वज्र विख्यात।
हनूमान वज्राग पुनि, अर्ध भीम को गात।

सारँग श्री भगवान धनु, पुनि पिनाक शिव जान।
गाडीवहु अर्जुन धनुष, अर्ध इन्द्र धनु मान।

चींटीहूं टीडी कहूं, पुनि जलधर जल मीन।
मनुष अर्ध मिलि कल भवंस, कहियत साढ़े तीन।

सुरभी मधु माखी बहुरि, पाट कीट सुनु मित्र।
अर्ध सरब शुद्ध जानिये, साढ़े तीन पवित्र।

वर्ष परीवा दशहरा, अरु पचमी वसत।
अकती अर्ध मुहूर्त मिलि, साढ़े तीन कहत।

(४)

४ काव्येषु नाटकं रम्य, तत्रापिच शकुंतला।
तत्रापिच चतुर्थोऽकस्तत्र श्लोक चतुष्टयम्।

चतुर्भुजस्य पत्नीच, महालक्ष्मीः सरस्वती।
गंगाच तुलसी चैव, देवी नारायण प्रिया।

तत्र मित्र न वस्तव्य, यत्रनाऽस्ति चतुष्टयम्।
ऋण दाताच वैद्यश्च श्रोत्रियः सजला नदी।

नराणा नापितो धूर्तः पक्षीणा चैव वायसः।
चतुष्पदा शृगालस्तु, श्वेत भिक्षुस्तपस्विनाम्।

यौवन धन सम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।
एकै कमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम्।

असतुष्टा द्विजा नष्टा, सतुष्टश्च महीपतिः
सलज्जा गणिका नष्टा, निर्लज्जाच कुलागना।

४ चातुर्वर्ण्य मयासृष्टं गुण कर्म विभागशः।

४-२ अचतु र्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः।
अभाल लोचनः शंभुर्भगवान्बादरायणः।

१-२-३ न गच्छेद् रुद्र चातुष्क, न गच्छेद् द्वैश्य पचकम्
न गच्छेद् युग्म राजानौ, न गच्छेद् ब्राह्मण त्रयम्।

४ मधुसूदनो श्री कृष्ण अरु, सकर्षण अनिरुद्ध
चतुर्व्यूह मिलि ब्रह्मये, रूपचारि सब शुद्ध।

विधि मुख, हरिभुज, वेद, फल, वर्ण अवस्था चार ।
सुरपति, हस्ती दन्त, युग त्यों आश्रम निर्धार ॥

सुनि समुझहिं जन मुदित मन, मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चार फल अछत तनु, साधु समाज प्रयाग ।

वंदउ चारिउ वेद, भव वारिधि वोहित सरिस
जिनहिं न सपनेउ खेद, वरणत रघुवर विशद यश ।

सुठि सुन्दर संवाद वर, विरचउं बुद्धि विचारि ।
तेइ यह पावन सुभगसर, घाट मनोहर चारि ॥

रामभक्त जग चारि प्रकारा, सुकृती चारिउ अनघ उदारा ।

चारिउ शील रूप गुण धामा, तदपि अधिक सुखसागर रामा ।

जाकी सहज श्वास श्रुति चारी, सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ।

पुनि चरणन मेले सुत चारी, रामदेखि मुनि विरति बिसारी ।

चौथे पन पायउ सुत चारी, विप्र वचन नहि कहेउ विचारी ।

चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्त्ति दशरत्थ के ।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपद काल परखिये चारी ।

मुदित अवधपति सकल सुत, वधुन समेत निहारि ।
जनु पाये महिपाल मणि,क्रियन सहित फल चारि ।

चारि पदारथ करतल ताके, प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके ।

जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं, वेद पुराण सन्त असे कहहीं ।

अनुज वधू भगिनी सुत नारी, सुन शठ ये कन्या सम चारी ।
इनहिं कुदृष्टि विलोकै जोई, ताहि वधे कछु पाप न होई ।

तो पर नारि ललाट गुसांई, तजहु चौथ चंदा की नाई ।

सेवक शठ नृप कृपण कुनारी, कपटी मित्र शत्रु समचारी।

तासु मुकुट तुम चारि चलाये, कहहु तात कवनी विधि पाये।
कहा बालि सुत सुनहु खरारी, मुकुट न हाहिं भूप गुण चारी।

लंका बका चारिहु द्वारा, केहि विधि लाघिय करहु विचारा।

एक ओर चारि वेद, एक ओर चातुरी।

चारि दिना की चांदनी, फेर अधारी रात।

✓भादो सुदी चौथ को लख्योरी मृग अरु यातें, भूठहु कलंक मोहि
लागियो चहतु है।

नयनि नीच की अति दुखदाई, जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई।

सांचहि ताको न होत भलो, जु न मानत है कहि चार जने की।

अवधेश के बालक चारि सदा, तुलसी मन मन्दिर में विहरैं।

चोपदार चाकर चमू पति चवँर दार, मंदिर मतग ये तमाशे चारि दिन के।

पान पुरानो घी नयो, अरु कुलवती नार।
चौथे पीठि तुरग की, स्वर्ग निशानी चारि।

वृन्दावन सों वन नहीं, नन्द गाव से गाव।
बशी बट से बट नहीं, कृष्ण नाव से नाम॥

रास विलासी घट घट वासी, अरज सुनैया तुम्हीं तो हो।
चार जुगन में नाम सुना है, कृष्ण कन्हैया तुम्हीं तो हो।

अवध विलासी शिव हिय वासी, अरज सुनैया तुम्हीं तो हो।
चार जुगन में नाम सुना है, राम रमैया तुम्हीं तो हो॥

✓राखी है त्यौहार द्विज, क्षत्रि दशहरा होय।
दीप मालिका वैश्य की, शूद्र होलिका जोय॥

अंतर अंगुरी चारिको साच झूठ में होय, सत्र माने देखी भई,
न माने कोय।

चारि जने चारिहू दिसातें चारों कोन गहि मेरु को हलाय के
तो उखरिजाय।

आंखें चार, जी में प्यार।

हय गयरथ पदचर सहित, सेना के चतुरंग।

कोविद कवीशन को कृष्ण मानि भेट देत, अंगीकार कीजे
चाउँर सुदामा के।

चारि चारि दिना को चवाव चाहे कोऊ करै अत छुटि जैहै
पूतरी बरात की।

केशवदास के भाल लिख्यो विधि रंक को अक बनाय रँवाऱ्यो। धुवे नहिं छूटो छुटै बहु तीरथ जाय के नीर पखाऱ्यो। ह्वै गयो राव तबै जब वीर बली नृप नाथ निहाऱ्यो। भूलि गयो जग रचना चतुरानन बाय रह्यो मुख चाऱ्यो॥

४-१ राजा चंचल होय मुलक को सर करि ल्यावै। पंडित चचल होय उत्तर दै आवै। हाथी चचल होय समर में सूड़ि उठावै। घोडा चंचल होय झपटि मैदान दिखावै। ये चारो चचल भले राजा पंडित गज तुरी। वैताल कहै विक्रम सुनो एक नारि चचल बुरी॥

४-५ विष्णु चारि भुज विधि मुख चारी,
विकट वेप मुख पंच पुरारी॥

४-६-२ चौबे छब्बे होनगे, आये दूबे होय।

४-८४ आकर चार लाख चौरासी, जात जीव नभ जल थल वासी।

(५)

५ पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्त धनञ्जयः।

आयुः कर्म च वित्तं च, विद्या निधन मेवच
पचैतानिहि सृज्यते, गर्भस्थस्यैव देहिनः ।

आगाता जठरं जाया जात वेदो जलाशयः
पूरिता नैव पूर्यन्ते, जकाराः पच दुर्भराः ।

जननी जन्म भूमिश्च, जान्हवीच जनार्दनः
जनकः पचमश्चैव, जकाराः पच दुर्लभाः ।

देशाटनं पंडित मित्रताच, वारागना राज सभा प्रवेशः
अनेक शास्त्राणि विलोकितानि, चातुर्य मूलानि भवति पच ।

अरविंदमशोकंच चूतंच नव मल्लिका ।
नीलो त्पलंच पचैते, पच बाणस्य सायकाः ।

अहल्या द्रौपदी तारा, कुंती मन्दोदरी तथा
पच कन्या स्मरेन्नित्य, महा पातक नाशनम् ।

तिथि वारश्च नक्षत्र, योगः करण मेवच
पंचागस्य फल श्रुत्वा, गगा स्नान फलं लभेत् ।

सर्गश्च प्रति सर्गश्च, वंशो मन्वन्तराणिच
वशानु चरितंचैव, पुराण पच लक्षणम् ।

मद्यमासतथामत्स्यो मुद्रामैथुन मेवच
मकार पचकं देवि ! देवा नामपि दुर्लभं । (वामतंत्र)

पचभिः सह गन्तव्य स्थातव्य पचभिः सह
पचभिः सह वक्तव्य न दुःख पचभिः सह ।

काकचेष्टा बकोध्यानं श्वान निद्रातथैवच
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पचलक्षणम् ।

सा-ख त्वपचधामूर्हि पतिर्देहीति व्याकुला
पंचेन्द्रास्च हरेरंशा भविष्यन्ति मियास्तव ।

पंचभिः कारिता कुन्ती तद्वधूरथ पंचभिः
सतीं वदति लोकोऽत्र यशः पुण्यं रथाप्यते।

धनिकः श्रोत्रियो राजा, नदी वैद्यस्तु पंचमः
पंच यत्र न विद्यन्ते न तत्र दिवसं वसेत्।

राज पत्नी गुरोः पत्नी, मित्र पत्नी तथैव च
पत्नी माता स्वमाता च पंचैता मातरः स्मृताः।

शनैः पन्थाः शनैः कंथा शनैः पर्वत मस्तके।
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पंचैतानि शनैः शनैः।

जनिता चोपनेता च यश्च विद्यां प्रयच्छति
अन्न दाता भय त्राता पंचैते पितरः स्मृताः।

५-७ }
१०-१५ } भारतः पंचमो वेदः सुपुत्रः सप्तमोरसः
दाता पंचदश रत्न, जामाता दशमो ग्रहः।

५-१०-१६ लालयेत्पंच वर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत्
प्राप्तेतु षोडशे वर्षे पुत्रे मित्र वदाचरेत्

५-१०० अन्यैः सार्कं विरोधेन, वयं पंचोत्तर शतम्
१०५ { परस्पर विरोधेन, वयं पंच ते शतम्।
अस्माकहि विरोधेतु, वय पंच शतकौ
परैः सह विरोधेतु वय पंचाधिक शतम्।

५-१० }
१००० } शकट पंच हस्तेन दश हस्तेन वाजिनम्
हस्ती हस्त सहस्रेण देश त्यागेन दुर्जनः।

५ पाण्डव, शिवमुख, भूत, गो, गव्य कन्यका, माया।
महापाप, गति, वर्ग त्यों, पंच यज्ञ अरु प्राण॥

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी।

तुलसी या संसार में, पंच रतन हैं सार।
साधु मिलन अरु हरि भजन, दया दान उपकार

सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाच देव रक्षा करे, ब्रह्मा विष्णु महेश ।

पंच शब्द ध्वनि मंगल नाना, पट पावड़े परहिं विधि नाना ।

पच कहे शिव सती बिवाही, पुनि अवडेरि मराइन ताही ।

पंच कवल करि जेवन लागे, गारि गान सुनि अति अनुरागे ।

अगहन की सित पचमी, वृषभ लग्न भृगुवार ।
सुखद समय गोधूलिका, राम विवाह विचार । ✓

सदा कौरवा मेरे बैरी, धरि दो पच भतारू नाम (द्रोपदी)

जो पांचहि मत लागै नीका, करहु हर्षि हिय रामहि टीका ।

है प्रभु परम मनोहर ठाऊ, पावन पचवटी तेहि नाऊ ।

बनियक सखरच ठकुरक हीन, बैदक पूत व्याधि नहीं चीन ।
पंडित चुप चुप बिसवा भल, कहै घाघ पाचौ घर गल ।

पाच पच मिलि कीजे काज, हारे जीते आव न लाज ।

गिरी चिरौंजी दाख पुनि, छुरमा और बदाम ।
मेवा एई पच जे, आवें जग में काम ।

पाच कौर भीतर, तो मरैं देव पीतर ।

पांचौ अगुरी घी में तर ।

पांचो अगुरी इकसी नाहिं ।

पंचन के मुख है परमेश्वर ।

कानि तजै अपने कुलकी तुरफैन मो लीवे की सान चलावैं । एकहि देत दिलासा प्रसन्न ह्वै एक सो मोटरी लै घर आवैं । हे परमेश्वर पचन में पर नेक दया उर माफ़न लावैं । नर्क परैं तिनके पुरखा परपच करैं अरु पच कहावैं

५-२५-३० पाँचै आम पचीसे महुवा, तीस बरस में इमलिक महुवा।

(६)

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः ॥
धैर्यलय समायुक्तो षड्गुणाः पाठकोत्तमः ॥

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, वीर्यस्य यशसः श्रियः ।
ज्ञानवैराग्य योश्चैव षण्णाम्भग इतीङ्गना ॥

अग्निदो गरदश्चैव, शस्त्रपाणि धनापहः ।
क्षेत्रदारापहश्चैव, षडेते आततायिनः ।

अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभामूषकाः शुकाः ।
प्रत्यासन्नाश्चराजानः षडेते ईतयः स्मृताः ।

उपाध्यायश्च वैद्यश्च, ऋतु काले नरागना ।
सूतिका दूतिका नौका, कार्यान्ते तेच शष्पवत् ।

मौन काल विलम्बश्च, प्रयाण भूमि दर्शनम् ।
भृकुट्यन्य मुखी वार्ता, नकारः षड् विधः स्मृतः

उद्यमं साहसं धैर्यम्बलम्बुद्धिः पराक्रमः
षडेते यस्य विद्यन्ते, तस्माद्देवोऽपि शङ्कते ।

संस्कृत प्राकृतश्चैव, शौरसेनीच मागधी ।
पारसीच अप भ्रंश, भाषा षट्कंच लक्षणम् ।

रिक्त पाणिर्न पश्येच्च राजानं देवता गुरुम् ।
दैवज्ञ भिषजं मित्र, फलेन फल मादिशेत ।

शुष्कमांस स्त्रियोवृद्धा, बाला र्कस्तरुणंदधि ।
प्रभाते मैथुननिद्रा, सद्यः प्राणहराणिषट् ।

सद्योमांस नवान्नंच, बालास्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृत मुष्णोदकं चैव, सद्यः [illegible] ।

शा गीघ्री शिर कम्पी, स्वतो लिखित पाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठीच, षडेते पाठकाधमाः।

संधि विग्रह यानानि संस्थितिः संश्रयस्तथा।
द्वैधीभावश्चभूपाना, षड्गुणाः परि कीर्त्तिताः।

६-४-२ षट कर्णो भिद्यते मंत्रश्चतुष्कर्णः स्थिरो भवेत्।
द्विकर्णस्यच मंत्रस्य ब्रह्माप्यंत न गच्छति।

६ जग जान षट मुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा।
तिहि हेतु मैं वृषकेतु सुत कर चरित संक्षेपहि कहा।

कीरति सरित छहू ऋतुरूरी, समय सुहावनि पावनि भूरी।

छठे श्रवण यह परत कहानी, नाश तुम्हार सत्य मम बानी।

शारद प्रेरि तासु मति फेरी, मागेसि नींद मास षट केरी।

ब्रह्मानंद मगन कपि, सब कहँ प्रभु पद प्रीति
जात न जाने दिवस निशि, गये मास षट बीति।

षट विकार तजि अनघ अकामा, सकल अकिंचन शुचि सुख धामा।

भाइ भतीजा भानजा, भाट भिक्षु सुरदार।
षट भकार को त्यागि के, तुलसी करु व्यौहार॥

षडक्षरा गायत्री जानो।

माधुरि अक्षर ओज अरु, पदच्छेद स्वर शुद्ध
धीरज लय ये षट गुणनि, कह पाठक गुण बुद्ध।

शीघ्र राग युत शिर हलदि, केवल पठन उलेख
अनर्थज्ञ स्वर मन्द पढ़, अवगुण पाठक लेख।

मीठा खट्टा चिरपरा, खारा कडुवा आदि।
सहित कसैला स्वाद के, षटरस भोजन माहिं॥

दर्शन, रस, ऋतु, याहुब्जर, कार्तिकेय मुख, ईति।
शास्त्र, राग, त्रिशिरा नयन, भ्रमर चरण सोइ रीति॥
धर्मकोण, वेदाग, अरु, तर्क इन्हिं सब जान।
षट सख्या हित बर्णही, कविवर सहित प्रधान॥

छटे छमासे मो मग आवे, आप दिखें अरु मोहि दिखावे।
नाम लेत मुहि लागत शका, क्यों सखि सजन ना सखि पखा।

६-५-४ श्री लिखिये षट गुरुन को, पाच स्वामि रिपुचार।
३-२-१ तीन मित्र द्वै भृत्य को, एक पुत्र अरु नारि॥

(७)

७ अयोध्या मथुरा माया, काशी काञ्ची अवन्तिका
पुरी द्वारावती चैव, सप्तैता मोक्षदायकाः।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाश्च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च, सप्तैते चिरजीविनः।

ब्राह्मी च वैष्णवी चैंद्री, रौद्री वाराहिकी तथा
कौवेरी चैव कौमारी, मातरः सप्त कीर्त्तिताः।

आदौ माता गुरोः पत्नी, ब्राह्मणी राजपत्निका
गावी धात्री तथा पृथ्वी, सप्तैता मातरः स्मृताः।

क्षुधित तृषित कामी विद्यार्थी कृषिकस्तथा
भाण्डागारी प्रवासीच सप्त सुप्तान्प्रबोधयेत्।

अहिर्नृपति शार्दूलौ वरटि बालकस्तथा
परश्वानंच मूर्खंच सप्तसुप्तान्न बोधयेत्।

सप्तैतानि न पूर्य्यन्ते पूर्यमाणान्यनेकशः
ब्राह्मणोऽग्नियमोराजा पयोधिरुदर गृहम्।

मुनि, पताल, रवि तुरंग, स्वर, अग्निशिखा, गिरि, वार।
द्वीप, सिन्धु, पुरि राज अँग, सप्त कहहु सविचार॥

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना, ज्ञान नयन निरखत मन माना।

त्यहि अवसर नारद सहित औ ऋषि सप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिन गिरि, गवने तुरत निकेत।

सप्त द्वीप भुज बल वश कीन्हा, लै लै दंड छोंडि नृप दीन्हा।

बलि आगत प्रभु बाढेउ, सो तनु वरणि न जाय।
उभय घरी महं दीन्ह मैं, सात प्रदक्षिण धाय।

सप्तावरण भेद करि, जहँ लगि रहि गति मोरि।
गयो तहां प्रभु भुज निरखि, व्याकुल भयो बहोरि।

इश्क मुश्क खासी खुसस, खैर खून मद पान।
सात छिपाये ना छिपे, परगट होहि निदान।

राजा कन्या ज्योतिषी, वैद्य गुरू सुर सिद्ध।
भरेहाथ इन पै गये, होय कार्य्य सब सिद्ध। ✓

सात भावरी पूरो ब्याह।

सातो सिंधु सातो लोक सातों रिपि हैं सु सोक सातो रवि थोरे थोरे देखे-न डरात मैं। सातों द्वीप सातों इति काप्जोई फरत और सातों मत रात दिन भान है न गात मैं। सातों चिरजीव नरराइ उठे बार बार सातों सुर हाइ २ होत दिन रात मैं। सातहू पताल काल सबद कराल राम भेदे सात ताल चाल परी सात सात मैं॥

७-१ सप्त ताल ये कृपा निधाना, वेधे सबहिं एकहीं बाना।

७-५-१ सात पाच की लाकरी, एक जने का बोझ।

७ से १० सातें मास सत मसा कहावै, आठ मास जीवत नाहीं।
नवें मास अति रगा-चगा, दसें मास बल-तन माहीं। ✓

पृष्ठ ९० के अंतिम श्लोक में पूर्व को पूर्ण पढिये।

७½

सजि प्रतीति बहु विध गड़छोली, अवध साढ़ साती जनु बोली।

(८)

मृगराजो वृषो नागः कलशो व्यंजन तथा
वैजयन्ती तथा भेरी, दीप इत्यष्ट मंगलम्।

राजा वेश्या यमश्चाग्नि, स्तस्करो वालयाचकौ।
पर दुःखंन जानाति, अष्टमो ग्राम कण्टकः।

मूर्खत्व सुलभं भजस्व कुमते मूर्खस्य चाष्टौ गुणा निश्चिन्तो बहुभोजको-
तिमुखरो रात्रिदिवं स्वप्नभाक्। कार्याकार्यविचारणान्धबधिरो
मानापमाने समः मायेणामयवर्जितो दृढवपुर्मूर्खः सुखं जीवति।

८-७ अष्ट कुला चल सप्त समुद्रा ब्रह्म पुरंदर दिनकर रुद्राः।
न त्वं नाहं नायं लोक स्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः॥

८-९-१० अष्ट वर्षा भवेद् गौरी, नववर्षाच रोहिणी।
दश वर्षा भवेत्कन्या, ततऊर्ध्वं रजस्वला।✓

श्री दामा सुखधाम कृष्ण को परम प्राण प्रिय, वसुदामा शुभ नामदाम
मणि मय जाके हिय, सुबल प्रबल परिहास रसिक मंगल मधु मंगल,
तोक सुखद ब्रज लोक कृष्ण अनुरूप कृष्ण कल, अरजुन पालक गो
वत्स बहु ऋषभ वृषभजूथादि पति, हरि जू के आठ सखा सदा
सुमिरत मंगल होत अति।

श्री वल्लभ आचार्य के, चारि शिष्य सुखरास।
परमानन्दऽरु सूर पुनि, कृष्णरु कुंभनदास।
विट्ठल नाथ गुसाइ के, प्रथम चतुर्भुजदास।
छीत स्वामि गोविन्द पुनि, नन्द दास सुखरास। (ब्रज के अष्ट छाप)

अगहन शुक्ला अष्टमी, सेन सहित भगवान।
उत्तर फाल्गुनि नखत में, लंकहिं कीन पयान।

अति सुन्दर है रुक्मिणी, लक्ष्मी को अवतार।
सत भामा को मान है, जाम्बवती सो प्यार।
कालिंदी नागिन जिती, भद्राजी सो हेत।
मित वृन्दा अरु लक्ष्मणा, कुलको शोभा देत।

निरखि राम छवि विधि हरखाने, आठहिं नयन जानि पछिताने।

नारि स्वभाव सत्य कवि कहई, अवगुण आठ सदा उर रहई।
साहस अनृत चपलता माया, भय अविवेक अशौच अदाया।

अष्टाध्यायी पाणिनि जानो।

आठों गाठ कुम्मेत।

आठो पहर काल सिर नाचै।

मयरस तजभन आठ गण, पिंगल माहिं प्रधान।

अक्षर आठ अनुष्टुप् पद में।

रैन दिन आठो जाम राम राम राम राम,
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये।

गीत कवित नाचत पढ़त, युद्ध बाद ससुरार।
अरु अहार व्योहार में, लज्जा आठ निवार॥

योग अंग, वसु, सिद्धि, अहि, विधि श्रुति, दिग्गज, याम।
अष्ट और वैयाकरण, भाषहिं कवि अभिराम॥

हाली नाली वरदिया, कटकैया कुतवाल।
ये आठो रक्षा करें, काना चोर छिनाल॥

पौर के किवार देत घरै सबै गारि देत साधुन को दोष देत प्रीति ना चहत है। मागने को ज्वाब देत बात कहै रोय देत लेत देत भाज देत ऐसे निवहत हैं। पागहू के बंद देत बारन की गाठ देत परदनि की काछ देत देतइ रहत हैं। एते पै सबहि कहैं लाला कछु देत नाहीं लालाजी तो आठों जाम देतइ रहत हैं॥

८-९ अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता।

८-९ आठ कनौजी चूल्हा नौ।

८-१६ } आजु जो कहै तो आठ मास लौं न लागैं ढीक काल्हि जो कहै तो
५-१५।५० } मास सोरह चलावहीं। पाच दिन कहै पाच बरस बिताय देति
पाख जो कहै तो लै पचास पहुँचावहीं। भनत मथान जा पै ताहू
पै न त्यागैं द्वार आपना लजात फेर बाहू को लजावही। ऐसे
सत्यवादी सरदार है दिवैया जहा काहे को पठैया तहा जीवत लौं
पावहीं॥

(९)

१ धन्वन्तरिक्षपणकामर सिंह शंकु वेताल भट्ट घट खर्पर कालिदासाः
ख्यातो वराहमिहिरोनृपतेः सभायां रत्नानिवैवररुचिर्नव विक्रमस्य।

आयुर्वित्तं गृहच्छिद्रं रहस्यं मन्त्र मौषधम्।
तपोदाना व मानौच नव गोप्यानि कारयेत्॥

मुक्ता माणिक्य वैदूर्य गोमेदान्वज्र विद्रुमौ
पद्मरागं मरकतं, नीलचेति यथा क्रमात्।

प्रथम शैल पुत्रीति, द्वितीयं ब्रह्मचारिणी
तृतीयं चन्द्र घंटेति, कूष्माडेति चतुर्थकम्
पंचम स्कन्द मातेति, षष्ठं कात्यायनीतिच
सप्तम काल रात्रिश्च, महा गौरीति चाष्टमम्
नवम सिद्धि दात्रीच, नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः।

श्रवणं कीर्तिन विष्णोः, स्मरणं पाद सेवनम्
अर्चन वन्दनं दास्यं, सख्य मात्म निवेदनम्। (नवधाभक्ति)

आचारो विनयोविद्या प्रतिष्ठा तीर्थ दर्शनम्
निष्ठावृत्तिस्तपोदानं नवधाकुल लक्षणम्।

राजेन्द्रः कनरी भगस्तनतमः शीघ्न जग्यो गुरु
र्वशो जावधरः सचाव निजनिः केतुर्द्धगो सुदरि
वानर काव्यमय शनैश्चरगतिर्यस्तु साम्योऽपरः
सातचेत्कुरुगे कृपा मनि तदा सर्वेनुकूला ग्रहाः । (नवग्रह)

श्रगस्त्य, निधि, भक्ति, ग्रह, और ब्रग, भूखंड ।
दुर्गा, नाड़ी, अंक, सह, नव में होत अखंड ॥

नवमी भौमवार मधुमासा, अवधपुरी यह चरित प्रकासा ।

नवमी तिथि मधुमास पुनीता, शुक्ल पक्ष अभिजित हरि प्रीता ।

नव मारीच हृदय अनुमाना, नवहि विरोधे नहिं कल्याना ।
शस्त्री मन्त्री प्रभु शठ धनी, वैद्य वदि कवि मानसगुनी ।

श्रीवृषभानु कुमारि हेतु शृंगार रूपमय, वास हास रस हरे
मात बधन करुणामय, केशी प्रति अति रौद्र वीर मारो वत्सासुर,
भयदावानलपान पियो बीभत्स-बकी उर, अति अद्भुत,
बच विरचप्रति-शान्त सतते सोचचित,-कहि केशव सेवहु रसिक जन
नव रस में ब्रज राज नित ।

नवधा भक्ति कहौं तोहि पाहीं, सावधान सुनु धरु मनमाहीं ।

मारकंड नव सहस पुराना, आदि शक्ति सह हरि गुण गाना ।

मानिक मुक्ता विद्रुमऽरु, पन्ना पुनि पुखराज ।
हीरा नीलक लहसुनी, पिरोजादि नव साज ॥

नव मन तेल न नारि सिंगार ।

गज भर केर लंडैया नौ गज की है पूछ ।

जगमी किलनी नौ मन काजर ।

९-२ नौ की ग्यारा सबसे न्यारा ।

९ २॥ नव दिन चले अढाई कोस ।

९-१२ नव नगरी ना तेरा बाकी ।

९-१२ नव की लकड़ी तेरा खर्च ।

(१०)

१० वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्बिभ्रते ।
दैत्यदारयते बलिंछलयते चत्रं चयं कुर्वते ।
पौलस्त्यजयते हलकलयते कारुण्यमातन्वते ।
म्लेच्छान् मूर्छयते दशा कृतिकृते कृष्णाय तुभ्यंनमः ॥

मनो मधुकरो मेघो मानिनी मदनो मरुत्
मा मदोमर्कटो मत्स्य मकारा दश चंचलाः ।

लग्ने शुक्रो बुधोयस्य, यस्य केंद्रे बृहस्पतिः
दशमोऽङगारको यस्य, सजात कुल दीपकः ।

सदा वक्रः सदा रुष्टः, सदा पूजामपेत्तते
कन्या राशिस्थितो नित्य, जामाता दशमो ग्रहः ।

धृतिः चमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्म लत्तणम् ।

काली तारा महा विद्या, षोडशी भुवनेश्वरी
भैरवी छिन्नमस्ताच, विद्या धूमावती तथा ।
बगला सिद्ध विद्याच, मातंगी कमलात्मिका ।
एता दश महा विद्याः, सिद्ध विद्याः प्रकीर्त्तिताः ।

दशकूप समावापी दशवापी समोहृदः
दश हृदसमः पुत्रो दश पुत्र समोद्रुमः ।

एवं दशदिशो रत्तेच्चामुडाशववाहना ।

= { अन्नादश गुणं [illegible] पयः
: { पयसोऽष्ट [illegible] ।

१०-११ अन्यायोपार्जित द्रव्य, दश वर्षानितिष्ठति
माप्ते चैका दशे वर्षे, समूलंच विनश्यति।

१० प्रभु निमिष महँ रिपु शर निवारि, प्रचारि डारे सायका
दश दश विशिख उर माझ मारे, सकल निशिचर नायका।

दश मुख देखि शिरन की वाढ़ी, विसरा मरण भई रिस गाढ़ी।

मारेसि दश दश विशिख उर, परे भूमि सब वीर
सिंह नाद करि गर्जे तब, मेघनाद रणधीर।

रहे दसहु दिशि शायक छाई, मानहु मघा मेघ झरिलाई।

दिन दश करि रघुपति पद सेवा, तब फिरि चरण देखिहौ देवा।

मय रस तज भन गल सहित, दश अक्षर इन सोहिं।
सर्व्व शास्त्र व्यापित लखौ, विश्व विष्णु सो जोहिं॥

दिन दस आदर पायके, करले आप वखान।
जौलो काग सराध पख, तौलग तो सन्मान॥

०-१ राम राम सब कोउ कहे, दशरथ कहै न कोय।
ोटि एक वार दशरथ कहै, कोटि यज्ञ फल होय॥

-२० हम कुल घालक सत्य तुम, कुल पालक दशसीस।
अधउ वधिर न कहहि अस, श्रवण नयन तव वीस॥

-२० मैंना ने मैंना कही, मोल भयो दस बीस।
बकरी ने जो मैं कही, तुरत कटायो सीस॥

(११)

१ एका दश रुद्राणामेकागौरीत्य नौचितीमता।
राघवनृपतव यशसादशापिगौरी कृताहरितः।
(दशापि हरितः=दसो दिशा)

एका दशस्थे गोविंदे सर्वेप्येकादशे स्थिताः
किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे, शनिरंगारको गुरुः।

एका दशैते कथिता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः।

हरि दिन कामद गिरि प्रभु आये, समाचार सुर संतन पाये।

हरि दिन पहुंचे अवध सुमंता, देखि नगर दुख भयो दुरन्ता।

ग्यारा सहसहिं लिंग पुराना, विविध कथा कर ललित विधाना।

इक पर एक होत हैं ग्यारा।

ग्यारा वर्णिक त्रिष्टुप् कहिये।

एक तो देवैया होय दूसरे रिझैया होय तीसरे सरूपवत सुघर सल
गात। चौथे चतुराई पाचे परखै हमारो गुन छट्यें छलीन सातें
सो निबाहै नात। आठें ऐंड्दार नवें निपट निगाड़ राखै दसें
बाज नाही ग्यारें गरू सुहात। पाखन गुणज्ञ डिग ताही केरहत
ऐसे गुण ग्यारहो समाज में सराहे जात।

(१२)

नान्नोदक समं दानं, न तिथि द्वादशी समा।
न गायत्र्याः परो मन्त्रो, न मातुः पर दैवतम्।

नूपुर बिछिया किंकणी नीवी बसन सोय।
कर मुंदरी कंकण वलय, बाजू बंद भुज दोय।
बाजू बंद भुज दोय कंठ श्री दुलरी राजै।
नासा बेसर सुभग श्रवण ताटंक विराजै।
भगवत बेंदा भाल माग मोती गुह ऊपर।
द्वादश भूषण अंग नित्य प्यारी पग नूपुर। (द्वादश भूषण)

द्वादश अक्षर मंत्र वर; जपहिं सहित अनुराग।
वासुदेव पद पंकरुह, दम्पति मन अति लाग॥
(ओं नमो भगवते वासुदेवाय)

सुर सेनप उर अधिक उछाहू, विधितें डेवढे लोचन लाहू।

नींद नारि भोजन परि हरई, बारह वर्ष तासु कर मरई।

द्वादश दिन वीते मगमाही, पहुंचे जाय जमुन तट पाहीं।

यह विधि द्वादश वर्ष विताये, पुनि प्रभु पंचवटी पहँ आये।

बारा सहस्र केर परमाना, अहै प्रगट ब्रह्माड पुराना।

बारा बरसे दिल्ली रहिके, काम कियो भरभूजे को।

चैते गुड वैसाखे तेल, जेठे पैठ अषाढे वेल।
सावन साग़ऽरु भादो मही, कार करेला कातिक दही।
अगहन जीरा पूसे धना, माहे मिसरी फागुन चना।
इन बारह कर बचे जो भाई, ता घर वैद्य न सपने जाई।

(१३)

गाडौ स्वान पुच्छ इक जुगलों जब देखौ तब टेढी।
पौ बारा जिनके पड़े, करती मौज बहार। = ६+६+१ (युवा नायक)
मेरे घर कच्चे पडे, भये गले के हार। = ६+५+१ (अनभिज्ञ नायक)

मानुष्यं वर वंश जन्म विभवो दीर्घायुरारोग्यता।
सन्मित्र सु सुतः सती प्रियतमा भक्तिश्च नारायणे।
विद्वत्व सुजनत्व मिन्द्रिय जयः सत्पात्र दानेरति
स्ते पुण्येन विनात्रयो दशगुणाः संसारिणां दुर्लभाः।

ताम्बूल कटु तिक्त मुष्ण मधुरक्षार कषायान्वितम्।
वातघ्न कफ वारणं कृमिहर दुर्गंधि निर्नाशनम्।
वक्त्रस्याभरणं विशुद्धि करणं कामाग्नि सदीपनम्।
ताम्बूलेहि सखे त्रयोदश गुणाः स्वर्गेऽपिते दुर्लभाः।

वर्ष त्रयोदश भयो प्रवेशा, खर दूषण वध कीन रमेशा।

त्रयोदशी ढूंढे हनुमाना, पुनि अशोक वन माहिं समाना।

कुंभ निकुंभ दैत्य बलवाना, तेरस तक मारे भगवाना।

देखहु खोजि भुवन दश चारी, कहँ अस पुरुष कहा अस नारी।

कातिक वदी चतुर्दशि तारा, शनि के दिन भा प्रगट कुमारा (हनुमानजी)

कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा, पुर न जाउँ दश चार वरीसा।

चौदह भुवन एक पति होई, भूत द्रोह तिष्ठै नहि सोई।

यह जो आवत अचल समाना, चौदह ताड ऊच परमाना (अंगद)

सुनु गिरजा क्रोधानल जासू, जारै भुवन चारि दश आसू।

भुजबल जीति लोक वश कीन्हे, चौदह भुवन भोग करि लीन्हे।

चैत्र शुक्र चौदश जब आई, मरो दशानन जग दुखदाई।

कौल काम वश कृपण विमूढा, अति दरिद्र अजसी अति बूढा।
सदा रोग वश सतत क्रोधी, विष्णु विमुख श्रुति सत विरोधी।
तन पोषक निन्दक अघ खानी, जीवत शव सम चौदह मानी।

चौदह दिवस युद्ध करि भारी, बाधि लियो अहिराज प्रचारी (मेघनाद)

चौदा सहसहि मत्स्य पुराना, सोइ भविष्य जान परमाना।

रतन मयी नव नारि रमा सम सुन्दर कहिये।
घूघट हय भ्रू धनुष अमिय विष मद चख पइये॥
मुख शशि ग्रीवा कम्बु सदा सुखदा सुर तरुसी।
रम्भासी सुकुमारि चतुर अति धन्वन्तरसी॥
गज गामिनि धनि लेखिये सुरभी सम शुचि शील तन।
सुरन वृथा वारिधि मथ्यो तिय तन में चौदह रतन॥

ढेरी चौदह तें गुनो, ताशहिं देत्र घटाय।
बचे हुए को जोडकर, टिपकी देहु बताय॥ ✓

ताश के ५२ पत्तों में से यह खेल चाहे जितने ताशों में होसकता है- किसी से कहिये कि उसके हाथ में जितने पत्ते हों उनकी तेरा तेरा टिपकियों की ढेरियां जितनी बन सकें बनावे जैसे पहिले (६) नहला

निकला तो उसपर कोई भी ४ चार ताश के पत्ते और रख देव (८) अट्ठा निकला तो उसपर कोई भी ५ पांच ताश के पत्ते और रखदेव और हाथ में बचे हुए ताशों से और ढेरी न बन सके तो उनको हाथही में रखे रहे यह क्रिया वह आपके विना देखे गुप्त रीति से करे अब आप पूछें कि (१) कितने ताशों से खेला है (२) कितनी ढेरियां हैं और (३) हाथ में कितने ताश बचे हैं बस नीचे के सब ताशों की टिपकियो का योग कहदेव यथा १८ ताशों से खेला है ३ ढेरी हैं हाथ में २ ताश बचे हैं तो ३×१४=४२-१८=२४+२=२६ टिपकिया हैं टिपकियों के लिये गुलाम की ११, रानी की १२ और राजा की १३ टिपकिया मानो।

प्रथम असील होय दूजे नैनसील होय तीजे बड़ो डील होय चौथे चोप ठानेगा। पाचयें प्रवीन होय छठयें छली न होय सातयें सरस आठें ओज उर आनेगा। कहैं भुवनेस नित नवयें निगाह राखे दसयें दिमाक ग्यारे गुन पहचानेगा। बारहे बिमल चित तेरहे तरहदार चौदहे चतुर सो हमारे तई मानेगा।

(१५)

वसु मुनि यति तिथि, मणि गुण निकरः।
८+७=१५

वर्ष पंचदश के भगवाना, सीय वर्ष छः की जग जाना।

वर्ष पंचदश माहिं सुहाये, विश्वामित्र बुलावन आये।

पन्द्रह दिवस संग मुनि नाथा, काज सँवारे श्री रघुनाथा।

शंकर राम रूप अनुरागे, नयन पंचदश अति प्रिय लागे।

भये पारउदिन सजत समाजू, तुम सुधि पायहु मोसन आजू।

परखेहु मोहिं एक पखवारा, नहिं आवहु तो जानेहु मारा।

कहहुं पत्त महँ आव न जोई, मोरे कर ताकर वध होई।

पंद्रह वर्ष लागि हम मागे, एकौ दिन नहि रहिहै आगे। (अभिमन्यु)

पन्द्रा सहसतें कछु अधिक, अग्नि पुराण बखान।

पल पखवारा घड़ी महीना चौघडिया का साल.
जिसको लाला काल कहै फिर उसका क्या अहवाल।

(१६)

अप्राप्त यौवना नारी, न कामाय न शांतये
संप्राप्ते षोडशे वर्षे, गर्दभी चाप्सरायते।

आदौ मज्जन चारु चीर तिलकं नेत्राजनं कुडलम्
नासा मौक्तिक हार मेव कुसुमंलुद्रावली कचुकी।
अगे चन्दन लेप कुकुम वरं केयूरक नूपुर
ताम्बूल कर ककण चतुरता शृंगार रूप स्त्रियः।
आसन स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
मधुपर्काचमस्नानं वसनाभरणानिच।
गध पुष्पे धूपदीपौनैवेद्य वंदन तथा।

भूम्यासन जल वस्त्र प्रदीपोऽन्नं ततः परम्।
ताम्बूलच्छत्र गन्धाश्च माल्यं फलमतः परम्।
शय्याच पादुकागावः काञ्चनं रजत तथा।
दानमेतत् षोड्शक मेत मुद्दिश्य दीयते।

चारे चतुष्पद चारि खग, चारि फूल फल चार।
राधा जू के तन लसे, ये सोरह शृंगार।
हय घूघट गज गामिनी, केहरि लक समान।
मृगलोचनि फूली फिर, जे पशु लच्छन जान।
भव भोंहें सुर कोकिला, कठ कपोत सुधार।
खजन कैसी चपलता, पछिन लच्छन चार।
कर कमलहु चपक वरण, सोन फूल अनुहार।
दुपहरिया सी झिलमिली, फूलन लच्छन चार।
अधर बिंब दाड़िम दशन, कदलि जघ परमान।
श्री फल कैसी तरुणता, जे फल लच्छन जान।

शुचिता शील सनेह गति, चितवनि बोलनि हासि।
कच गूथन श्रीवन्त शुभ, भाल तिलक सुखरासि।
भाल तिलक सुखरास, दृगन अंजन अति सोहै।
बीरी नदन सुदेश चिबुक, मसकन मन मोहै।
या विधि मेंहदी अंगराग, भगवत मन रुचिता।
ये सोरह शृंगार मुख्य तामें वर शुचिता।

जहँ तहँ यूथ यूथ मिलि भामिनि, सजि नव सप्त सकल द्युति दामिनि।

चलि ल्याइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मन्त कुंजर गामिनी।

राकापति षोड़श उगहिं, तारागण समुदाय।
सकल गिरिन दव लाइये, रवि बिनु राति न जाय।

सोरह गोटी चौसर केरी, सोरह कौड़ी ज्वारिन केरी।

सोरह कला जान चौपाई।

षोडश कोश कोट चहु ओरा, मणि माणिक लागे नहिं थोरा (नरातक)

१६-३१ संवत सोरा सौ इकतीसा, करौं कथा हरि पद धरि सीसा।

१६-३२ सोरह योजन मुख तेहिं ठयऊ, तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ।

१६-८० संवत सोरा सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।

(१७)

रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।
(यमनसभ लग) ६+११=१७

ततः सप्तदशे जातः सत्य वत्या पराशरात्,
चक्रेवेद तरोः शाखा दृष्ट्वापुंसोऽल्पमेधसः।

सत्रा सहसहि कूर्म पुराना, सुनत श्रवण मुद मंगल नाना।

१७-१०० सत्रह योजन जाघ लँवाई, शत योजन तनु वरणि न जाई (कुंभकर्ण)

(१८)

अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवती सुतः।

अद्वैतामृत वर्षिणी भगवती मष्टादशा ध्यायिनीं
मवत्वामनु संदधामि भगवद् गीते भवद्वेषिणीम्।

१८-२ अष्टादश पुराणानां व्यासस्य वचन द्वयम्
परोपकारः पुण्याय पापाय पर पीडनम्।

१८ अठरा सहस भागवत जानो, हिन्दुन को सर्वस यह मानो।

रोमावलि अष्टादश भारा, अस्थि शैल सरिता नसजारा।

वैवर्तहु जो ब्रह्म पुराना, अठरा सहस केर परमाना।

१८-१० वर्ष अठारा दिन दश जाही, वेइ ग्रहण पुनि पुनि परि जाहीं।

१८-२७ वर्ष अठारा की सिया, सताइस के राम।
कीन्हीं मन अभिलाप तब, करनोंहै सुर काम।।

१८-१०० दिना अठारा अस रण रच्यऊ, शत बाधव महँ एकन बच्यऊ।

(१९)

सूर्याश्वैर्मसजस्तता सगुरवः शार्दूल विक्रीडितम्।
(मस जस ततग) १२+७=१९

इक नव मिलि उन्नीस है, ताके दश रहि जात
दश के पुनि एकहि रहत, एकहि एक लखात।
१९ उन्नीस, १+९=१०, १+०=१ ईश्वर।

उन्निस वर्णिक अति धृति छन्दा।

उन्निस सहसहिं गरुड़ पुराना, ज्ञान तत्त्व कर ललित विधाना।

सम्वत में चौ जोरि कै भाग देव उन्नीस।
शेष अंक सो जानिये अधि मासै जगदीस।
दोय क्वार त्रय चैत्र पुनि, पच नभ, नभ अठ जेठ।
शिव बिसाख तेरा भदँ, सोराऽसाढ़ सु ठेठ।
अठरा फवहूं फाल्गुन, मास लौंद है आठ।
शेष लौंद नहिं क्षय बिना, जिनके अड़बड़ ठाठ।

२ बचै तो क्वार	११ बचै तो वैसाख
३—चैत्र	१३—भाद्रपद
५—श्रावण	१६—आषाढ़
० वा ८—जेष्ठ	१८—फाल्गुन (कालप्रबोध)

(२०)

सोनर क्यों दशकंठ, बालि बधेउ जिहि एक शर।
बीसहु लोचन अंध, धिग तव जन्म कुजाति जड़।

बोले विकट सुनहु युवराजू, योजन बीस उलंघहु आजू।

कहैं कवि हेम हम नीके कै विचारि देख्यो, मेरे भाये बीसों बिस्वा दामही में राम हैं।

मम भुज सागर बल जलपूरा, जहँ बूड़े बहु सुरनर शूरा।
बीस पयोधि अगाध अपारा, को अस वीर जो पाइहि पारा।

२०-१० बीस भुजा दश मस्तक जाही, आतुर चला जात मग माही।

(२१)

तव एकविंशति बेर मै बिन छत्र की पृथिवी रची (रामचंद्रिका)

इक्कीस वर्षीय मकली इच्छा।

(२२)

सप्त भकार युतैक गुरु र्गदितेय सुदारतरा मदिरा।
७ भगण १ गुरु=२२

बाइस वर्णिक आकृति वृत्ता।

बाइस योजन जासु अजाना (कुंभकरण)

सनै धान बाईस पसेरी।

बाइसगढ़ ऊदनि ने जीते, तेइस विजय कीन मलिखान (सिरसा)

(२२½)

अटफल पच्चू साढे बाइस।

(२३)

अक्षोहिणि तेइस कइ बारा, जरासंध लै हरि सनहारा।

तेइस सहसहुं विष्णु पुराना, श्रवण किये मुद मंगल नाना।

तेइस वर्णिक विकृति वृत्ता।

(२४)

सगणैरिह वृत्तवर वसुभिः किलदुर्म्मिल मुक्त मिदं कविभिः।
८ सगण=२४ वर्ण

अवतारहुं चौविस कहे, निष्ठाहू चौबीस।

चौविस अर्बुद इनकर यूहा, सहस वृन्द सम कोटि समूहा।
(१ अर्बुद=१० कोटि)
(१ वृन्द=१ अर्ब)

चतुर्विंशादिन युद्ध महाना, अब नृप कहौं सुनौ दै काना (भीष्म, परशुराम)

दत्तात्रय गुरु चौविस कीन्हे।

शिव पुराण चौवीस हजारा, स्वइ वाराह केर निरधारा।

चौविस वर्णिक संस्कृति वृत्ता।

रोला की चौवीस, कला यति शंकर तेरा।

(२५)

पच्चिस वर्णिक अतिकृति वृत्ता।

पंच तत्त्वसों प्रकृति पचीसा, सिरजनहार जान जगदीशा।

नारदीय पचीस हजारा, भक्ति तत्त्व दरशावनहारा।

मोसी कन्या लाख पचीसा, ऐसे वचन न कहौ मुनीसा।

सो शर अर्जुन काटि निवारे, बाण पचीस शल्य उर मारे।

(२६)

छव्विस वर्णननि ते अधिक, दंडक वृत्त प्रमान।

छव्विस वर्णिक उत्कृति वृत्ता।

(२७)

वर्ष सताइस में रघुनाथा, वन गमने सिय लछमन साथा।

लख चौरासी योनि में, थावर सत्ताईस।
नक्षत्रहु अरु योगहू, है पुनि सत्ताईस।

भीम जरासंधहि हन्यो, लड़ि सत्ताइस द्योस।

(२८-२९)

'अभिजित अंतर्गत सहित, उडगण अट्ठाईस।

अट्ठाइस दिन फरवरी, चौथ वर्ष उन्तीस ।

है अष्ट विंशति मत्त द्वै वसु भानु कर हरिगीतिका ।

जाम्बवंत अरु कृष्ण सों, अट्ठाइस दिन भो युद्ध ।
जाम्बवती कृष्णहिं दई, बुद्धि भई जब शुद्ध ॥

(३०)

मास दिवस कर दिवस भा, मर्म न जानै कोय ।
रथ समेत रवि थाकेउ, निशा कवन विधि होय ।

मास दिवस तेह रहेउ खरारी, निसरी रुधिर धार तहँ भारी ।

मास दिवस महँ कहा न माना, तो मैं मारब काढ़ि कृपाना ।

बोला विकट सुनहु युवराजू, योजन तीस उलंघहु आजू ।

तीस तीर रघुवीर पँवारे, भुजन समेत सीस महि पारे ।

तीस दिवस अप्रेल के, तीसहि जानो जून ।
सपटेम्बर नोवेंबरहु, जान तीन पर सून ।

तीसमारखां नाम, मान्यो इक मूसो नहीं ।

(३१)

आकर्षेउ धनु श्रवण लगि, छाडे सर इकतीस ।
रघुनायक सायक चले, मानहु काल फणीस ।

इकतिस दिनकी जनवरी, मार्च मई जूलाय, पुनि अगस्त अक्टूबरहु
दिसवरहु सुखदाय ।

आठ आठ आठ पुनि, सात वरणनि सजि, रचिये कवित्त इमि,
गुरुहिं सुमिरिकै ।
८+८+८+७=३१

वसु वसु तिथि सानंद सवैया, यारौ वीर पँवारो गाय ।

(३२)

तुरत पवनसुत वत्तिस भयऊ ।

वत्तिस लच्छण शुभकहे, कीर्ति बढ़ावन हार ।

सुनहु पवन सुत रहनि हमारी, जिमि दशनन्हि मँह जीभ विचारी (३२ दांत)

परी बतीसों दांत बिच, जीभ विचारी एक ।

पैसा रहो न पास में रहे बतीसी काढ़ि ।

दस वसु वसु संगी जन रस रंगी छंद त्रिभंगी गंत भलो ।

(३३)

तैंतिस कोटि देव सुमिरन कर, कहिहौं वीर पँवारो गाय ।

तैंतिस वर्णिक देव धनाक्षरि ।

(३४)

चौतिस योजन की चकलाई, अति अकार तन चितै न जाई (कुंभकरण)

(३५)

पैंतिस की कहनूति कहीजे, तीन पाच हमसों नहिं कीजे ।

(३६)

मोर वंस तुम कीन सँहारा, कृष्ण लीजिये शाप हमारा ।
छतिस पद संवत यदुराई, तव कुल आपस महँ कटिजाई । (गाधारी)

सब जातन में नाउ छत्तीसा ।

छत्तिस व्यंजन बनी रसोई।

राग छतीसों गावन लागे, जिनमें उठे बीर बैताल।(गाडो)

रासो पृथ्वीराज में, छनी नस छतीस।

सिपहगरी के छत्तिस फ़न।

३६-६३ जगते रहु छत्तीस ह्वे (रामचरण छत्तीन)
(३६) (६३)

(३७)

त्रय पर सात बिराजत कैसे, त्रिकालज्ञ मुनि नायक जैसे।

(३८)

तीन आठ यों भेद लखावत, तीनहु ताप योग बिनसावत।

अष्ट त्रिंशशर पूर तुणीरा, धरे स्यन्दनहिं सो रणधीरा। (अतिकाय)

(३९)

तीनऽरु नौ यों कहै बिचारी, तीनहु काल भक्ति हरि प्यारी।

(४०)

नील कहा चालिस मैं जाऊं, आगे परत मोर नहिं पाऊं।

जाड़ा चिल्ला दिन चालीस, धन के पद्रा मकर पचीस। ✓

४०-१३ चालिस योजन तेरस वासर, रच्यो सेतु नल नील उजागर।

४० बकरी पाव, गाय दुइ सेर, भैंस दूध देती पच सेर।
चालिस पशु मिलि चालिस सेर, भेद पशुन के कहु बिन देर॥

तीन भैंस नव गाय है, बकरी अठाईस।
चालिस पशु मिलि देत है, दूध सेर चालीस॥

३ भैंस × ५ सेर = १५ सेर
९ गाय × २ सेर = १८ सेर
२८ बकरी × १ पाव = ७ सेर

४०   ४०

(४१)

४१-३२ इकतालिसवें वर्ष में, रामचन्द्र भगवान।
आयुः बत्तिस वर्ष की, जनकसुता गुणखान॥ (राजतिलक)

(४२)

कोटि बियालिस तमीचर, नारातक कर घात
राम कृपा बल हति खलनि, कपिन बिताई रात।

घाट बयालिस हम लुटवैहे, मरिहैं फौज पिथौरा क्यार। (नदियाबितवै)

(४३)

चौ पर तीन विराजत जैसे, चारि वेद त्रय कालहुं जैसे।

(४४)

चारि चारि के कहिये भेदा, चारि वेद चारहिं उपवेदा।

(४५)

चारि पाच ये कहत पुकारे, चारि वेद माणहु ते प्यारे।

(४६)

चौ पर छै भेदहिं कहु मीता, चारि वेद छै अंग पुनीता।

(४७)

चारि सात के सुनहुं विचारा, चारि वेद ऋषि जगत ग

(४८)

दोहा के सब होत है, मात्रा अडतालीस,
दो दल तामें होत है, प्रतिपद दल चौबीस।

(४९)

हरि प्रेरित त्यहि अवसर, चली पवन उनचास,
अट्टहास करि गर्जही, कपि बढ़ि लाग अकास।

(५०)

लघु संवत जीवन पचदसा, कल्पान्त न नाश गुमान असा।

(५१)

पांच एक को संगम कैसे, पच प्राण ईश्वर में जैसे।

(५२)

सबतें लघु है मॉगिबो, यामे फेर न सार।
बलि पै जाचतही भये, बावन कर करतार।

बावन तोले पाव रती।

लंका में जो छोट है, बावन गज को सोउ।

ताश माहि पत्ते है बावन। (देखो अंक १४)

बरस माहि बावन सप्ताह।

देखी तेरी कालपी, बावन पुरा उजार।

बावनगढ़ के राजा जीते, जीते बड़े बड़े सरदार॥ (चदेल)

(५३)

पाँचऽरु त्रय इक संग विराजत, पंच यज्ञ त्रय ताप नसावत।

(५४)

पाच चार हैं बड़े सयाने, पाच देव चारिहु युग माने।

उपगीती है चौवन मत्ता।

(५५)

पचपन सहसहि पद्म पुराना, पद्मनाभि लीला गुण गाना।

पांच पांच पर राजहिं कैसे, पंचायतन राम शिव जैसे।

(५६)

छप्पन भोगी हैं नारायण, तिनकी कथा करिय पारायण।

छप्पन कोटि यादवा जेते, कृष्ण भक्त सब जानिय तेते।

छप्पन कोटि कपिन लै साथा, करत प्रणाम चलेउ कपि नाथा। (श्रीखंड)

षट पंचाशिका ग्रंथ हिय भावत, प्रश्नोत्तर ज्योतिष प्रगटावत।

छप्पन छुरिया हनि हनि बांधै औ गुजराती बांधि कटार।

(५७,

बुधजन कहत सुनहु खग राजा, अयुत सतावन बाजहिं बाजा।

आर्या की सत्तावन मत्ता।

इसवी सन सत्तावन जोरे, संवत विक्रम लहिये।

(ई० १८९८+५७=संवत् १९५५)

(५८)

पांच आठ की छवि अति छाजी, पच देव योगहिं तें राजी।

(५६)

पाचऽरु नोनें शिक्षा लीजे, पंचदेव की भक्ती कीजे ।

(६०)

६०-१-२ षष्टि योजन विस्तीर्णा लंबोष्ठी दीर्घ नासिका ।
एक वक्त्रा नव भुजा सक्रांतिः पुरुषाकृतिः ॥

६० बोले नल दोउ भुजा उठाई, योजन साठि मोरि गति भाई ।

षष्टि बाण भीषम उर मारा, मानहु वज्रपात फटकारा ।

संवत्सरहू साठ प्रमाणो, प्रभव विभव इत्यादिक जानो ।

साठा सो पाठा ।

(६१)

छै पर एक विराजत कैसे, षट दर्शन में ईश्वर जैसे ।

(६२)

छै पर दो शोभा के धाम, षट रिपु नाशक सीताराम ।

(६३)

रामचरण छत्तीन, जगत रहु छत्तीस ह्वै ।
६३ ३६

शुद्ध वर्ण मालादि में, त्रेसठ वर्ण सुजान ।

(६४)

तंत्र कला अरु योगिनी, चौसठ जान प्रमान ।
शतरजहु चौसठ घरा, जानत सर्व सुजान ।

भयो भयंकर खेत अति, अर्जुन कीन मसान।
नाचत चौंसठि योगनी, करि करि शोणित पान।

चौंसठ बुर्ज चारि नव खंडी, जिन पै बैठि स्वर्ग दिखराय (सिरसा)

(६५)

छै पर पांच विराजत हैं कस, षट कर्म्मन में पंच देव जस।

(६६)

छै छै संगम कहौ सुहावन, षट ऋतु में षट रस मन भावन।

(६७)

छै पर सात विराजत कैसे, षट दर्शन में ऋषि गण जैसे।

(६८)

छै आठहुं के कहौ विधाना, षट कर्म्मन में योग प्रधाना।
अड़सठ तीरथ करके आई, तउना गइ तुमड़ी करुवाई।

(६९)

छै पर नौ राजत हैं कैसे, रस पर काव्य रसामृत जैसे।

(७०)

धरणी धसकि धरन जब उडेऊ, सत्तरि योजन ते पुनि फिरेऊ (कुमुद)

सत्तर चूहे खाय के बिलारी चली हज्ज को।

सव वजे सत्तर वला, घरतें आगै दूर।

सत्तरगज वा पच-नने पग, कहियत इक एकड़ के लगभग।
अद्तालिस सौ चालिस गजवा, नौ सहसा पग होत सुरव्वा।

(७१)

चतुर्युगी इक दिव्य भनंत, दिव्य इकत्तर कर मन्वंत। (मन्वंतर)

छप्पय के सब भेद मीत इकहत्तर लेखो।

(७२)

लड़े बहत्तर दिन सग्रामा, वानॅर राक्षस बिन विश्रामा।

सूप तो सूप भला चलनी कहँ देखहु जामें बहत्तर छेद हैं।

(७३)

सात तीन राजत हैं कैसे, मुनि गण पूज्य त्रिकालहु जैसे।

(७४)

सातऽरु चार विराजत कैसे, ऋषिगण वेद प्रचारक जैसे।

सार्ध चहोत्तर शपथ पुरानी, खोलै पत्र न दूसर मानी। ४७॥

(७५)

सातऽरु पाच निराजत कैसे, सप्त स्वरों में पंचम जैसे।

(७६)

सातऽरु छः को करिय बखाना, सप्त स्वरनि छै राग प्रधाना।

(७७)

सात सात के कहिय विचारा, सात द्वीप सत पुरी उदारा।

(७८)

सात आठ यह कहत पुकारी, ऋषि गण अष्ट सिद्धि अधिकारी।

शके माहिं अठहत्तर जोरे, सन ईसवी पहिचानो।
शक १८२०+७८=ईसवी १८९८।

(७९)

सात८रु नौ को संगम कैसे, ऋषिगण भक्ति मनतैक जैसे।

(८०)

आठ-शून्य-महिमा नहिं गोई योगेश्वर-सो-बड़ो न कोई (श्री कृष्ण)

असी बाण मारेहु हनुमानहिं, शर अनेक घाले भगवानहिं।

(८१)

सहस इकासी एक सौ, ललित स्कंद पुरान।

आठ एक-यह भेद बतावत, योगहि ब्रह्म रूप दरसावत।

नव नव गुणित होत इक्यासी, तदपि आठ इक नव सुख रासी।
अगुण सगुण इमि भेद न भाई, तजि संशय भजिये रघुराई।

(८२)

आठ ठांय है अंक ललामा, अष्ट सिद्धि दाता सिय रामा।

(८३)

आठ तीन कर मर्म महाना, अष्ट योग त्रयलोक प्रधाना।

(८४)

आकर चारि लाख चोरासी, जात जीव नभ जल थल वासी।

वार्ता श्री वैष्णव चोरासी, जग महँ-भगती-कल्प-लतासी।

चौरासी आसन हैं जेते, योग ग्रन्थ सब जानिय तेते।

ब्रज चारासी कोस की, महिमा परम पुनीत।

फेरि साढियन को समझायो, गत चौरासी की झनकार। (बुलारा युद्ध)

हैहय वंशी कीरत खासी, मति गढ़ रहे गात्र चौरासी।

(८५)

आठ पाच यों कहत पुकारे, योग पच माखन रखवारे।

(८६)

रौरव आदिक नरक की, संख्या छयासी जान।

(८७)

दधि मुख कह अरुपी उपरता, योजन सात जाउ गलरन्ता।

(८८)

सूत कथो हरि चरित पुनीता, सहस अठासी ऋषि सुन प्रीता।

(८९)

आठऽक नोको मर्म महाना, योग माहि हरि भक्ति प्रधाना।

(९०)

नव पर रुप शून्य को कैसे, नव के पर अक नहिं जैसे।

(९१)

नव पर एक कहत अस टेरी, करिय भक्ति इक ईश्वर केरी।

(९२)

नव पर दोकर कहहु विधाना, नव रस सिया राम गुण गाना ।

(९३)

नव पर श्रय कर सुनहु हवाला, दुर्गा पूजा शुभ श्रयकाला ।

(९४)

नव पर चारि कहत अस वाता, भक्तिहि चारि पदारथ दाता ।

(९५)

नव पर पांच विराजत कैसे, भक्ती पचदेव की जैसे ।

(९६)

चौसर पल्ला घर चौवीसा, छियानवे चारो में दीसा ।

(९७)

नव सातहु कर कीजे गायन, नव रस सप्त काड रामायन ।

(९८)

नव अरु आठ सँवारत काजा, भक्ति योग को जुरो समाजा ।

(९९)

नव पर नव की शोभा कैसी, रघुवर भक्ति परम निधि जैसी ।

लोभहिं में सब जन्म गो, सरो न एको काम ।
पड़े फेर निन्यानवे, माया मिली न राम ।

(१००)

१००-३०० अप शब्द शतं माघे, भारवौच शत त्रयम् ।
कालिदासेन गरायन्ते, कविरेकः शते जयः ।

१००-१००० } शतेषु जायते शूरः सहस्रेषुच पंडितः।
१०००० } वक्ता दश सहस्रेषु, दाता भवति वा नवा।

सौ हजार } शतं विहाय भोक्तव्य, सहस्र स्नान माचरेत्।
लाख,कोटि } लक्ष विहाय दातव्य कोटिं त्यक्त्वा हरिं भजेत्।

सौ-हजारो तांबूलस्य गुणाः सति, सखे शत सहस्रशः
एकोपिच महान्दोषो, यस्यदानाद्विसर्जनम्।

१०० शाक खाय शत वर्ष गँवाये (पार्वती)

कमल नाल जिमि चाप चढाऊ, शत योजन प्रमाण लै धाऊ।

शत योजन आयउ छन माहीं, तिन सन बैर किये भल नाहीं।

प्रथम दिवश नल सेतु सुहावन, चौदह योजन कीन सुपावन।
द्वितिय दिवस शुभ योजन बीसा, तीजे दिन इक्सि किय कीसा।
दिवस चतुर्थे सु बाइस योजन, पचम तेइस कियो मुदित मन।
दश योजन आयत अति सुन्दर, शत योजन विशाल शोभाधर॥
(१४-२०-२१-२२-२३=१००)

जो लांघै शत योजन सागर, करै सो राम काज अति आगर।

शत योजन तेहि आनन कीन्हा, अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा।

तब शत बाण सारथी मारेसि, परा भूमि जयराम पुकारसि।

कनक कनकतें सौ गुणी, मादकता अधिकाय।
यह खाये बौरात है, वह पाये बौराय। (धतूरा, सुवर्ण)

सौऽपराध शिशुपाल के, छमा कीन जगदीस।
अधिक भये पर चक्रसों, काटि गिरायो सीस।

धोये हू सौवार के, काजर होत न सेत।

सौ युग पानी में रहे, मिटै न चकमक आग।

बखशिश सौ सौ, हिसाब जौ जौ।

सौ दिन चोरन, इक दिन साहु।

सौ गाथा सुग्गा पढ़ै, अंत बिलाई खाग।

सौ कौवे में बगुला राजा।

सौ ऐबों का ऐब गरीबी।

सौ नकटन में एक है, नक्कू जाके नाक।

सौ मन सोना, रत्ती हुकूमत।

सौ में सती लाख में जती।

सौ सौ तोपन की कग मसकै, महुवे दगन सलामी लाग।

सौ अजान नहिं एक सुजान।

सौ सौगंदे खाय भूलि नहिं ताहि पतीजे।

सौ सयान को एकै मत।

१००-१ सौ कोसा अरु एक मसोसा।

सौ सुनरा की, इक लुहरा की।

सौ दंडी इक बुंदेलखंडी।

सौ,हजार—सौ की हानी, सहस बखानी।

सौ,हजार लाख — चले बाग्ह कवि सकहि न भापन,
शत तें सहस सहस तें लाखन। (कर्णार्जुन संग्राम)

सौ में फुली सहस में काना, सवालाख में ऐंचा तान
ऐंचा ताना करै निचार, मैं मानी कंरा सों हार।

(१०१)

उद्धरेत्सप्तगोत्राणि, कुरुमेकोत्तरशतम् । (गया)

श्रीगान्धारी के भये, इक कन्या सौ पूत ।

(१०५)

अन्यैः साकं विरोधेन, वयं पंचोत्तरं शतम् ।
परस्पर विरोधेन, वयं पंचशते शतम् ।

पाच पाडु शत कौरवा, बधु एकसौ पाच ।
नसे कौरवा कुमति सो, पाडु न लागी आंच ।

बधु एक शत पाच सो, निसि दिन बढ़ै सनेहु,
कहो हमारो मानिये, पाच ग्राम दे देहु । (कृष्ण)

(१०८)

शताष्टोत्तर संख्याकाः सामन्तास्तत्रजज्ञिरे,
षोडशानाशततेपानभूतुः शूरसंज्ञकाः(पृथ्वीराज)

जप माला में पाइये, गुरिया इकसौ आठ,
राजा अरु आचार्य्य कहँ, श्री लिख इक सौ आठ । (श्री १०८)

अष्टोत्तर शत हाथ की, शिला लेय अनिरुद्ध,
बाणासुर को दल हन्यो, कियो घोर तहँ युद्ध ।

है सूरज को व्यास, महिसो इक सौ आठ गुण । ✓

(११०)

तेहिके शत सुत अरु दस भाई, खल अति अजय देव दुखदाई (कालकेतु)

(१२०)

गंजीफा मे जानिये, पान एक सौ बीस,
है दशावतारी वही, रसिक जनन मे दीस ।

बरनशिश सो सौ, हिसाब जौ जौ।

सौ दिन चोरन, इक दिन साहु।

सौ गाथा सुग्गा पढ़ै, अंत बिलाई खाय।

सौ कौवे में बगुला राजा।

सौ ऐबों का ऐब गरीबी।

सौ नकटन में एक है, नक्कू जाके नाक।

सौ मन सोना, रती हुकूमत।

सौ में सती लाख में जती।

सौ सौ तोपन की कर मसकैं, महुवे दगन सलामी लाग।

सौ अजान नहिं एक सुजान।

सौ सौगंदे खाय भूलि नहिं ताहि पतीजे।

सौ सयान को एकै मत।

१००-१ सौ कोसा अरु एक मसोसा।

सौ सुनरा की, इक लुहरा की।

सौ दर्डी इक बुँदेलखंडी।

सौ,हजार—सौ की हानी, सहस बखानी।

सौ,हजार लाख — चले बाण कवि सकहि न भाषन, शत ते सहस सहस तें लाखन। (कर्णार्जुन संग्राम)

सौ में फुली सहस में काना, सवालाख में ऐंचा ताना।
ऐंचा ताना करैं विचार, मैं मानी कैरा सो हार।

शत पच चौपाई मनोहर, जानि जे नर उर धरैं,
दारुण अविद्या पच जनित, विकार श्री रघुवर हरैं।

इसवी सन पच बियासि घटै, हिजरी सन शुद्ध तबै प्रगटै।
(ई० १८९८-५८२=हिजरी १३१६)

(६००)

कष्ट सहित छै सो हय पाये, ते सब कौशिक ढिग पहुचाये। (गालवऋषि)

रावण पुरीतें दिशा प्राची, कोश शतरस चलि गये,
बैठे जलधि महँ पाइ थल, वर शम्भु चरणन चित दये। (नरांतक)

छै सौ चालिस एकड़ जानो, पूरो एक मुरब्बा मील। (६४०)

(७००)

सत्सई जग में परम पुनीता, श्री दुर्गा अरु भगवत गीता।

तुलसी सतसई भक्तन प्यारी, रसिक जनन की रुचै बिहारी।

सतसई औरहु रचना प्यारी, किंतु बिहारी की छवि न्यारी।

(८००)

देने हित गुरु दच्छिणा, गालव बहु हठ कीन।
कौशिक मागे आठ सौ, श्याम कर्ण हय पीन॥

सैन्य आठ सौ दसइकी, एक वाहिनी जान।

(९००)

नौसौ हाथी के हलका में, भूमै आदि भयंकर दादू (पृथ्वीराज)

दगी सलामी चदेली में नौसो तोप दई दगवाय (महोबा)

नौसे चूहे खाय के बिलारी चली हज्ज को।

(१३५)

शक मँह जोरे इक सौ पैंतिस, संवत विक्रम लहिये।
(शक १८२०+१३५=संवत १९५५)

(२००)

दुइ शत मिले न तेहु पर, तब मुनि मानि गलानि,
रोये विश्वामित्र ढिग, अस है हठ दुख दानि। (गालव ऋषि)

महा कोपि लंकेश कुमारा, तीक्षण द्वैशत बाण महारा।

दुइ सौ जोड़ी बजै नगाड़ा, कड़कै तुरही औ कड़ाल। (महोबा)

(२५०)

योजन ढाई शत चकलाई, चौंसठ कोस उतंग सुहाई (विन्हावलपुर)

(२७०)

सेना दो सौं सत्तर जहवा, अक्षोहिणि में इक गुण तहवा।

(३००)

पूर्ण तीनसौ पैंसठ दिन जस, एक वर्ष में आही,
तीर्थ तीनसौ पैंसठ है तस, कुरुक्षेत्र के माही।

शतक त्रय भरथरि मन भावन।

(४००)

पूर्ण शतक अष्टि जानिये, भाग चार सौ पूर। (काल प्रबोध)

शत योजन को सेतु वह, रह्यो चार सौ कोस। (सेतुबंध)

(५००)

वर्ष पांच शत निज कर नीचा, हुते शीस पावक के बीचा (रावण)

शत पंच चौपाई मनोहर, जानि जे नर उर धरें,
दारुण अविद्या पच जनित, विकार श्री रघुवर हरें।

इसवी सन पच बियासि घटैं, हिजरी सन शुद्ध तबै प्रगटै।
(ई० १८९८-५८२=हिजरी १३१६)✓

(६००)

कष्ट सहित छै सो हय पाये, ते सब कौशिक ढिग पहुचाये। (गालवऋषि)

रावण पुरीतें दिशा माची, कोश शतरस चलि गये,
बैठे जलधि महँ पाइ थल, वर शम्भु चरणन चित दये। (नरातक)

छै सौ चालिस एकड़ जानो, पूरो एक मुरब्बा मील। (६४०)

(७००)

सत्सइ जग में परम पुनीता, श्री दुर्गा अरु भगवत गीता।

तुलसी सतसइ भक्तन प्यारी, रसिक जनन को रुचै बिहारी।

सतस इ औरहु रचना प्यारी, किंतु बिहारी की छबि न्यारी।

(८००)

देने हित गुरु दक्षिणा, गालव बहु हठ कीन।
कौशिक मागे आठ सौ, श्याम कर्ण हय पीन॥

सैन्य आठ सौ दसहिकी, एक वाहिनी जान।

(९००)

नौसौ हाथी के हलका में, झूमै आदि भयंकर ठाढ़ (पृथ्वीराज)

दगी सलामी चदेली में नौसो तोप दई दगवाय (महोवा)

नौसे चूहे खाय के बिलारी चली हज्ज को।

नौसौ छयासठ वर्ष दुखारी, रही विपिन मँह जनकदुलारी ।

जस नौसौ तस एक हजार, छोडौ आपस की तकरार ।

(१०००)

सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।

राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे ।
सहस्र नाम तत्तुल्य, राम नाम वरानने ।

अश्व मेधसहस्रच सत्यंच तुलया धृतम् ।
अश्वमेध सहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यते ॥

सहस नाम सम सुनि शिव वानी, जपि जेई पिय संग भवानी ।

बंदौ खल जस शेष सरोषा, सहस वदन वरणै पर दोषा ।

सवत सहस मूल फल खाये । (पार्वती)

वर्ष सहस बीते यहि भाती, जात न जाने दिन अरु राती ।

सुनहु राम जो शिव धनु तोरा, सहस बाहु सम सो रिपु मोरा ।

सहस बाहु सुरनाथ त्रिशकू, किहि न राज्य मद दीन कलङ्कू ।

जानी मैं तुम्हार प्रभुताई, सहस बाहु सन परी लराई ।

एक बहोरि सहस भुज देखा, धाइ धरा जनु जन्तु विशेषा ।

जब लगि जाकी अवधि है, पूजा नहीं करार ।
तब लगि ताकी माफ है, अवगुण करै हजार ॥

दौरौ कोस हजार लौं, बसे लक्ष्मी पास ।
बिना दिये रघुनाथ के, मिलै न तुलसीदास ।

नाम हजारी लाल है, पैसा एक न पास ।

(११००)

ग्यारह सो है लिंग पुराना, ग्यारा सहस कहू परमाना ।

ग्यारा से चढ़ई संग लीन्हे, चढन तहा पहुंचो जाय । (माड़ो)

ग्यारा सौ सत्ताइस शाखा, मुनिजन वेदन की करि राखा ।

(१२००)

प्रति कलियुग में सुरन के, बारह सौ है वर्ष ।

हाथी जूझे है बारासै, पैदर चार लाख गिरि जायँ (जैचद)

(१३००)

सन अठरा सौ ब्यासी रूरे, तेरा सौ हिजरी के पूरे ।

(१४००)

सन उन्निस सौ ब्यासी जबहीं, चौदह सौ हिजरी के तबही ।

(१५००)

कहिबे को लोकोक्ति हजारा, पर यथार्थ मे डेढ हजारा । (का० प०)

(१६००)

षोडशानाशत तेषा बभूवुः शूर सत्तमाः (पृथ्वीराज)

सवत सोरा सौ इकतीसा, करो कथा हरिपद धरि सीसा ।

सवत सोरा सौ असी, असी गग के तीर ।
सावन शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो सरीर ॥

(१७००)

सतरा सौ है कूर्म पुराना, सतरा सहस कहू परमाना ।

गज सतरा सौ साठ को, होत एक है मील ।

(१८००)

अठरा सौ है मत्स्य पुराना, अठरा सहस कहू परमाना।

(१९०२)

सन उन्निस सौ में परो, महा घोर दुष्काल।
फिर मत अइयो जगत में, वा छप्पन को साल॥

सन १८९९, १९००, संवत १९५६।

(२०००)

जो करणी समुझै प्रभु मोरि, तहि निस्तार कलप शत कोरी।

शेषहि जिव्हा दोय हजार, निसि दिन राम नाम उचार।

एक बार हरिनाम उचार, शेष लहै फल दोय हजार।

कहत व्यास अरु वेद सुगील, इक्किस सौ साठक है मील, (२१६०)
लगभग चौगुन पृथ्वी जान, आठ हजार मील परमान।

धनुषै गुण काटेतब पारथ, दोय सहस मारे रथ सारथ। (अश्वमेध)

दो हजार तोपे सजवाई, हाथी सजिगे पाच हजार। (महोबा)

दोय सहस्र चारसौ तीस, सेना पूतना कह जगदीस।

(३०००)

बेल पत्र महि परे सुखाई, तीन सहस सवत सो खाई।

सुनि प्रभु वचन निशान अपारा, तीन सहस हने इक बारा। (शत्रुघ्न)

तीन सहस्र लिये रण गोढ़, आइ सुबाहु सामुहे ठाढ़े।

तीन सहस दल गढ़ सिरसा को, बलिपुर रहो छावनी डारि। (सिरसा)

(४०००)

विष्णुनाम द्वैार विचार, शेष लहत फन चार हजार।

युग सहस्र जे विप्रवर, सुन्दर परम प्रवीन,
जानहिं श्रुति कर मत सकल, रहि मख रत अधीन। (रामाश्वमेध)

(५०००)

युद्ध महा भारत भये, पच सहस मे वर्ष।
कलियुग तर्हां लें लग्यों, कियो देश अपकर्ष।

पाच हजार काबुली घोडा, छै सौ शुतुर माल लदवाय।
मलिखे भेज दिये सिरसा को, वहुतक ध्वजा रही फहराय। (सिरसा)

पच सहस दो सौ असी, फीट केर इक मील। ५२८०।

(६-७-१०हजार)

इहि विधि बीते वर्ष षट, सहस वारि आहार।
सवत सप्त सहस्र पुनि, रहे समीर अधार।

वर्ष सहस दस त्यागेउ सोऊ, ठाढे रहे एक पग दोऊ।

(७०००)

सप्त सहस्र शिष्य सग लागे, भोजन आय द्वार ह्वै मागे। (दुर्वासा)

सात सहस दो सो नव्बे की, सख्या रुक चमू परमान।

रवि जप सात हजार प्रमाना।

(८०००)

अष्टौ श्लोक सहस्राणि, अष्टौ श्लोक शतानिच।
अह वेद्मि शुकोवेत्ति, सजयोवेत्तिवानवा। (व्यास कथन आदि पर्व)
८८००,

आठ सहस्रक मील के, है पृथ्वी को व्यास।

आठ सहस जप बुध परमाना।

आठ सहस्र प्यादे सौ हाथी दुइसौ शुतर सहस्र असवार। (सिरसा)

(९०००)

नव सहस सवत चलि गयऊ, तब नृप के मन विस्मय भयऊ। (दशरथ

नव सहस नौसे नवे, तुलसीकृत विस्तार।
अष्टा दश षट चारि को, सब ग्रथन को सार॥ ९९९० ॥

(१००००)

शालग्रामो हरेर्मूर्त्तिर्जगन्नाथश्चभारतम्
कलेर्दशसहस्रान्ते ययौत्यक्त्वाहरेःपदम्।

कलौदश सहस्राणि हरिस्त्यजति मेदिनीम्
तदर्धं जाह्नवीतोयं तदर्धंग्राम देवता।

भूप सहस दस एकहि वारा, लगे उठावन टरइ न टारा।

होहिं सहस दश शारद शेषा, करहिं कल्प कोटिन भरि लेखा।
मोर भाग्य राउर गुण गाथा, कहिन सिराहिं सुनहु रघुनाथा।

मत्त सहस दस सिंधुरसाजे, जिनहिं देखि दिसि कुंजर लाजे।

अयुत नाग बल भीम शरीरा, रूप भयंकर अति रणधीरा।

दस सहस पुनि ब्राह्म पुराना, वामन केर स्वई परमाना।

दस हजार वे शिशुहते, गंधर्वन के पुत्र।
तिनकी धनुही छीनि कै, तोरी हती सुमित्र॥

मगल जप दस सहस प्रमाना।

(११०००)

दश वर्ष सहस्रानि दश वर्ष शतानिच,
　रामोराज मुपासित्वा ब्रह्मलोक मयास्यति ।

ग्यारा सहस वर्ष भगवाना, कीन्हो राज धर्म विधि नाना । (राम)

सहस इकादरा जाप चन्द्र को ।

(१२०००)

बारा सहस केर परमाना, अहै प्रगट ब्रह्माड पुराना ।

(१३०००)

तेरा सहसहिं ब्राह्म पुराना, श्रीपुरुषोत्तम चरित बखाना ।
　दस हजार कहुं मिलत प्रमाणा, कला भेद करि याहि बखाना ॥

(१४०००)

सुर डरत चौदह सहस निशिचर, एक श्री रघुकुलमनी ।

चौदह सहस सुभट लै धाये, छण मह प्रभु तुम मारि गिराये ।

चला वीर आगे महल में गया, सु चौदह सहस नारि देखत भया ।

(१५०००)

पन्द्रा सहस तें कछु अधिक, अग्नि पुराण बखान ।

पन्द्रा आठ तिरचर काढ़िं, सात गुणाकर एक लखाहिं। ११८७३×७

(१६०००)

जमुना जल क्रीड़त नंदलाला, सोलह सहस संग ब्रजबाला ।

११८–(पृष्ठ ११०) १००० में १४ सहस्र का १४ सहस्र पढ़ें।

वसु नभ शशि रस भूमि सुहानी, कृष्णचन्द्र की जानिय रानी। १६१०

सोरह सहस अठोत्तर सौघर, तहां तहां सुंदरि सँग गिरिधर।

सोला सहस शुक्र जप जानो।

(१७०००)

सत्रा सहसहिं कूर्म पुराणा, सुनत श्रवणमुद मंगलनाना।

सहस सत्तरा जप केतू को।

(१८०००)

अठरा सहस भागवत जानो, हिंदुन को सर्वस यह मानो।

द्वै लख सेन पदातिहने, गज सहस अठारा (राम रावण)

योजन अष्टादश सहस अरु पट सत मित भूप,
जाहिर जम्बू दीप है अति रमणीय अनूप।

सहस अठारा जप राहू को।

(१६०००)

उन्निस सहसहिं गरुड़ पुराणा, ज्ञान तत्व कर ललित विधाना।

चारिहु वेद मंत्र विस्तार, उन्निस सहस चारसौ चार (का. प्र.)

सुर गुरु जप उन्नीस हजारा।

(२००००)

बीस सहस्र वर्ष तप कीन्हा, भालयज्ञ में पुनि मन दीन्हा। (रावण)

(२१०००)

इक्किस सहस आठसौ सत्तर, संख्या एक अनी की हहतर। २१८७०

इक्किस सहस आठसौ सत्तर, अक्षोहिणि प्रति रथ पुनि कुंजर। २१८७०
श्वासोच्छ्वास क्रिया निसि वासर, सहस इकीस ऽरु छै सौ तापर २१६०० ४

(२२ हजार)

नारदीय बाईस हजार, सहस पचीस कीन विस्तार।

(२३ हजार)

तेइस सहस जाप शनि जानो।

(२४ हजार)

शिव पुराण चौबीस हजारा, स्कंद बाराह केर निरधारा।

(२५ हजार)

पंचविंशतिसाहस्रैश्चतुर्विंशति सिद्धिभृत्। (कालीतंत्र पाठ)

नारदीय पचीस हजारा, भक्ति तत्व दरशावन हारा।

पृथ्वी परिधिहिं कहौ सुजान, सहस पचीस मील अनुमान।
(व्यास×$^{3}\frac{1}{7}$=परिधि)

(३० हजार)

तीस सहस सतत करि राजू, लह्यो दिलीप लोक सुर राजू।

(३२ हजार)

बत्तिस सहस वर्ष तप कीना, अंशुमान तब हरि पद लीना।

(४० हजार)

सप्त अक्षोहिणी फौज सँवारी, चालिस सहस छत्र के धारी (पांडव)

(५० हजार) अर्द्ध लक्ष

सुनियत लख पद सूर के, आधेहु मिलते नाहिं।
मिले तिनहिं पै भक्त जन, वार वार वलि जाहिं।

भीष्म हने दिन पांच मे, रथपति सहस पचास।

आने एरुड़ भूमि में, कड़ियां सहस पचास।

(६० हजार)

सगर पुत्र भे साठ हजारा, जिन वहुतक पृथ्वी खनिडारा।
पर्‍यो तहा गंगा-जल जाई, सागर नाम भयो तव भाई।

वालखिल्य ऋषि साठ हजारा, इक अंगुष्ठ तुल्य तनु धारा।

षट सहस्र दस शूर जुझारा, लवणासुर सँग अनी अपारा।

हस्ती साठि सहस्र वल, सदा धर्म की सीव।
श्वेत छत्रशिर शोभित, यह राजा सुग्रीव।

दुःशासन रथ साजियो मो भाइन तें सत्थ।
साठि सहस नृप छत्र धर चढ़े साजि कुरुनाथ।

(६५ हजार)

पैंसठ सहसऽरु छै सौ दस पुनि, अक्षोहिणि प्रति हय हिय मे गुनि।
(६५६१०)

(७० हजार)

सत्तरि सहस नाग वल जाही, इन महँ एक कहौ मैं ताही (गंधमादन)

पाछे खड़े जेहि सहस सत्तर प्लवग अति वल सींव है,
रघुवीर सन्मुख है विराजित वीर सो सुग्रीव है।

७६ हजार

सहस छहत्तर मील है, शनि को व्यास प्रसिद्ध।

(८० हजार)

योजन अयुत अए नभ जाई, दधि बल सुमिरि हृदय रघुराई।

(८१ हजार)

सहस इकासी एक सौ, ललित स्कन्द पुरान।

(८७ हजार)

बीते संवत सहस सतासी, तजी समाधि शम्भु अविनासी।

(८८ हजार)

सूत कह्यो हरि चरित पुनीता, सहस अठासी ऋषि सन मीता।

सहस अठासी मील है, व्यास वृहस्पति जान।

(लाख)

ताम्बूलस्य गुणाः सन्ति, सरो शत सहस्रशः
एको पिच महान्दोपो, यस्यदानाद्विसर्जनम् (देखो १००)

नृप रूप पहिचानि गुरु, भ्रम वश रहा न चेत।
वरे तुरत शत सहस वर, विप्र कुटुम समेत।

लक्ष लक्ष वर धेनु धन, पूजि पूजि द्विज पाय।
एक एक विप्रन दई, हर्षित कोशलराय।

तुरँग लाख रथ सहस पचीसा, सकल सवारे नख अरु सीसा।

उलटे तासों तासु पति, सौ हजार मनसत्व,
एक सून रथ तनय कहं, भजत न मन समरत्व। (रामलक्ष्मण)

इक लख पूत सवा लख नाती, सो रावण घर दिया न बाती ।

ता बसुदेव हरषि तिहि ठाहीं, लक्ष धेनु मनसी मन माहीं ।

गैया लक्ष सवत्स सुहाई, वाढी दूध नवीन मँगाई ।
सब विधि सबहि अलंकृत कीनी, करि संकल्प द्विजन कहँ दीनी ।

लाख रूढी एकड गुनों, पग हैं नो हज्जार,
नव्वे पग डिसमिल भयो, पैमायश को सार ।

एक लाख इक सठ सहस, असी बाल इक सार,
भये कृष्ण के पुत्र ये, गुण बल रूप अपार ।

एक लक्ष भारत श्रुति माहीं, व्यास प्रणीत विदित सब वाहीं ।

एक लक्ष नौसहस पर, त्रयशत और पचास,
अक्षोहिणि प्रति जानिये, पैदल सह उल्लास (१०९३५०)

लाख तदबीर करो तो क्या होता है,
वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है ।

मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है,
बिगडी बन जाती है जब फजले खुदा होता है ।

लाखन में कोउ एक सपूत ।

लाख जाय पै साख न जाय ।

बँधी मूठ है सवा लाख की ।

(२ लाख)

दोय लक्ष पर जान, सहस अठारा सात सौ,
परयुत सबै सुजान, सख्या इक अक्षोहिणी ।

इक गज, इक रथ, तीन तुरगा, पदचर पच, इक पत्ती संगा ।
सेनामुख गुल्मऽरु गुण कहिये, वाहिनि पृतना चमू अनी ये ।

त्रिगुण त्रिगुण पत्ती तें गिनिये, संख्या एक अनी की लहिये ।
दस अनीक अक्षौहिणी जानो, नभ नभ मुनि वसु शशि भुज माना ।

गज	रथ	हय	पदचर		सयोग	
१	१	३	५	=	१०	= पत्ती
३	३	९	१५	=	३०	= सेनामुख
९	९	२७	४५	=	९०	= गुल्म
२७	२७	८१	१३५	=	२७०	= गुण
८१	८१	२४३	४०५	=	८१०	= वाहिनी
२४३	२४३	७२९	१२१५	=	२४३०	= पृतना
७२९	७२९	२१८७	३६४५	=	७२९०	= चमू
२१८७	२१८७	६५६१	१०९३५	=	२१८७०	= अनी
२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०९३५०		२१८७००	= अक्षौहिणी

दोय लक्ष अठतिस सहस, मील चन्द्र है दूर ।

(३ लाख)

लक्षत्रया वर्त्तनात्तु महादेव विजेष्यति (कालीतंत्र)

सेना तीन लाख दिल्ली की सो कनवज में पहुची जाय ।

तीन लाख को टीका लैके सो नेगिन को दो सौंपाय (नैनागढ़)

(४ लाख)

चारि लक्षवर धेनु मँगाई, काम सुरभिसम शील सुहाई ।

लख चौरासी योनि मे, चौ लख मानव जान ।

चारि लाख बत्तीस हजार, कलियुग वर्ष केर निरधार ।

चारि लाख से सूरज आये, रहिगे तीन लाख सब ज्वान (पथरीगढ़)

(५ लाख)

लक्ष पंचकमावर्त्त्य कला पंचक संयुतः (काली तंत्र)

पाच लाख से माहिल चलि भये, हाहाकारी बीतत जाय ।

पाच लक्ष हैं पत्थर के घर, औ नव लाख काष्ठ के सुंदर (लंका)

(६ लाख)

संख्या त्रय अक्षोहिणी, है छै लाख प्रमान ।
सहस छपन अरु एक सौ, तापर गिनौ सुजान । (६,५६,१००)

(७ लाख)

सात लाख संख्या केशन की, भाषत सुन्दर गरुड़ पुराण ।

सात लाख से चढ़ो पिथौरा, लश्कर कूच दीन करवाय,
राह पकर लइ गढ़ महुवे की दल में रही अँधरिया छाय ॥

(८ लाख)

आठ लाख चौसठ सहस, मील भानु को व्यास । *

आठ लक्ष चौंसठ सहस, द्वापर युग के वर्ष ।

आठ लाख से सजे चंदेले, अगणित ध्वजा रही फहराय ।

(९ लाख)

नवलख गऊ जाहि सो नंदा, पचलख जिहि सो उपनंदा ।

है नव लक्ष संग तव हाथी, सकल करौं तारागण साथी (भीमप्रतिज्ञा कलिंग प्रति)

---

*अन्य ग्रहों का व्यास भी यहा स्थूल मान से एकत्रित ही लिखा जाता है—

आठ लक्ष है व्यास सूर्य को, सहस अठासी गुरु को जान ।
शनी बहत्तर सहस मील है, आठ सहस पृथ्वी अनुमान ।
पौने आठ सहस्र शुक्रकर, मंगल चार सहस्र सुजान ।
बुद्ध तीन शशि दोय सहस है, व्यासक थूल मान हिय आ।

लख चौरासी योनि में, नव लख जलचर जान।

जाके घर में नौ लख गाय, सो क्यों छाछ पराई खाय।

मुख दिखराई में वेला को, मल्हना दियो नौलखाहार।

(१० लाख)

दशलक्षावर्तनात्तु दशविद्याप्तिरुत्तमा। (कालीतन्त्र)

दस लख गऊ जाहि नृप माना, कोटि जाहि नंदराज महाना।

लाख मिले दस लाख की, तृष्णा बाढ़त जाय,
जब आवत संतोषधन, तृष्णा जात नसाय।

लख चौरासी योनि में, दश लख पक्षी जान।

(११ लाख)

लख चौरासी योनि में कृमि एकादश लक्ष।

(१२ लाख)

द्वादश लक्षऽरु सहस छानवे, त्रेता युग में वर्ष प्रमाण।

(१३ लाख)

पक्षी तें पशु योनि है, तेरा लाख विशेष।

(१४ लाख)

चौदा लक्ष पिंड पृथ्वी के, इक सूरज के पिंड समाहि,
अद्भुत रचना जगदीश्वर की, कहत शास्त्र वेद लजाहि।

भारत चौदह लक्ष है, गर्भन के रा.न।

(१५ लाख)

भारत पंद्रा लक्ष है, दिव्य पितृके लोक।

(१६ लाख)

दस पट लाख हरी हर बोलत, चले जाहिं गिरि कंदर तोलत।

(१७ लाख)

पचीतें थिरयोनि है, सत्रा लाख विशेप (१०, २७)

लक्ष सत्तरा सहस अठाइस, वर्ष होत सतयुग के माहिं।

(१८ लाख)

जलचरतें थिर योनि है, अठरा लक्ष विशेप (६,२७)

व्योम तीन रस गुण वसु एका, अक रीति लिखि गुणी विवेका।
(नरातक सभा में गुणी १८,३६,०००)

सहस छतीसऽरु लक्ष अठारा, गुणी नरातक सभा मँझारा।

(१९ लाख)

मानव तें पशु योनि है, उन्निस लाख विशेप (४,२३)

(२० लाख)

यह कपि अंगद वालि कुमारा, वीस लक्ष जाकर परिवारा।

(२३ लाख)

लख चौरासी योनि में, पशु है तेइस लाख।

(२४ लाख)

संख्या ग्यारा जोहिणी, लख चौविस अनुमान (२४,०५,७००)

(२५ लाख)

पचविंशति लक्षेस्तु दश विघ्नेश्वरो भवेत् (कालीतंत्र)

मोसी कन्या लाख पचीसा, ऐसे वचन न कहौ मुनीसा।

(२७ लाख)

लख चौरासी योनि में, थिर लख सत्ताईस।

भानु परिधि अब कहौ सुशील, लगभग लक्ष सताइस मील।
(२७,१५,४२८)

(३० लाख)

तीस लाख दल साठि हजारा, पवन पुत्र सब कीन जुहारा (नलवीर)

तीस लक्ष भारत अमर, पंद्रा पितृ सुलोक,
चौदह पुनि गधर्व ढिग, एक लक्ष भुवि लोक।

(महाभारत के श्लोक ६० लाख)
३० लक्ष देव लोक मे
१५ लक्ष पितृ लोक मे
१४ लक्ष गधर्व लोक में
१ लक्ष मर्त्य लोक मे
—
६०

(४३ लाख)

लख तैतालिस बीस हजार, वर्ष दिव्य युग एक मँझार।

चारि लाख बत्तीस हजार, कलियुग इते बरस निर्धार।
द्वापर दुगुन सुत्रेता तीन, सतयुग चौगुन संख्या कीन।
चतुर्युगी इक दिव्य भनत, दिव्य इकत्तर कर मन्वंत।
चौदा मन्वतर कर कल्प, नर कह अमित देव कहँ स्वल्प।

कलियुग	४,३२०००
द्वापर	८,६४०००
त्रेता	१२,९६०००
सतयुग	१७,२८०००

४३,२०००० = १ दिव्ययुग

(५० लाख)

पंचाशल्लक्ष माहात्म्य, महाकाल समो भवेत् (काली तंत्र)।

(६० लाख)

दश षट लाख हरीहर बोलत, चले जाहिं गिर कंदर तोलत।

श्लोक महाभारत विदित, साठ लाख परमान।

(८० लाख)

असी लाख अरु सात शत, कपि दल वर बरबंड,
नभ मारग कूदत चले, गय गवाक्ष बलिदंड।

आये मगह राज भगदत्ता, असी लक्ष जाके मदमत्ता।

(८४ लाख)

आसनानि कुलेशानि यावन्तो जीव जन्तवः
चतुर्शीति लक्षाणि चैकैकसमुदाहृतम्।

आकर चारि लाख चौरासी, जात जीव नभ जल थल वासी।

(कोटि)

गो कोटि दानं ग्रहणेषु काशी, प्रयाग गंगाऽयुत कल्पवासः
यज्ञा युत मेरु सुवर्ण दान, गोविन्द नाम स्मरणेन तुल्य।

कृष्णेति मंगलं नाम यस्य वाचि प्रवर्त्तते।
भस्मी भवन्ति राजेन्द्र! महा पातक कोटयः॥

जन्म कोटि लगि रगर हमारी, बरौं शंभु नतु रहौं कुमारी।

सुन्दरता मर्याद भवानी, जाइन कोटिहु बदन बखानी।

कहहिं परस्पर बचन सप्रीती, सखि इन कोटि काम छवि जीती।

सहज मनोहर मूरति दोऊ, कोटि काम उपमा लघु सोऊ।

कोटि मनोज लजावन हारे, सुमुखि कहो को अहहिं तुम्हारे।

कोटि विप्र वध लागहिं जाहू, आये शरण तजौं नहिं ताहू।

काटे पै कदली फरै, कोटि जतन कर सींच।

गिरि सम होहिं कि कोटिक गुञ्जा।

कोटि कँगूरन चढ़ि गये, कोटि कोटि-रणधीर।

सादर शिर कईं शीस चढ़ाये, एक एक के कोटिन पाये।

रामचन्द्र के चरित सुहाये, कल्प कोटि लग जाहिं न गाये।

दान बिन दरन निदान ठहरान कौन ज्ञान बिन जस अपजस कर करिगे। कविराय सतन सुभाय सुने सुमन के धरम विहीन मन भरा धर धरिगे। काम आये काहू कें न दाम दृढ़ दीनन के धाम गाड़े गाड़े सन नग गरि गरिगे। जोरि जोरि निरद रहाइ पै दूर देते जोरि जोरि कृपिन शरीर मरि मरिगे।

कोटिन दाख खवाय मरी पर ऊट हैं काठ कठेरोइ भावै।

कोटिन रंग दिखावत है जन अंग में आनत भंग भवानी।

(२ कोटि)

कोटि द्वयस्य लाभेऽपि नत सद्गुणं धनुः।
असद्वंशः शरः स्तब्धो लक्ष लाभाभि काङ्क्षया॥

(कोटि=छोड़, किनारा) (लक्ष=लाख, निशाना)

(३ कोटि)

तिस्रः कोटयोऽर्द्ध कोटीच, रोमाणि मानवहारिके (साढ़े तीन कोटि)
सप्त लक्षाणि केशाः स्युर्नखाः प्रोक्तास्तु विंशतिः (गरुड़ पुराण)

सार्धं त्रिकोटि नाड़ीना मालयश्चकलेवरम्।

साढ़े तीन कोटि तीरथ की संख्या भाषत वायु पुरान।
सोइ स्वर्ग खड अन्तरिक्ष मे, साढ़े दस कोटी सब जान।
(वायु पुराण अर्थात् ब्रह्माण्ड पुराण)

तीन करोड़ रहे गधर्वा, हनूमान संहार्यो सर्वा।"

सग सचिव त्रय कोटि महाना, नाम सुषेण वैद्य बुधिवाना।

त्रय कोटि रक्ष प्रधान तेहि दिन हने लक्ष्मण वीर।

मानुष तन में रोम राजहीं, साढ़े तीन कोटि परमान।
रोम कूप उतनेही जानो, अस वरणत है गरुड़ पुरान।

भौम भूमि ढिग तऊ अति दूर, सार्धं त्रिकोटि मील भरपूर (मगल)

(४ कोटि)

सूरज से बुध दूर सुजान, मील चार कोटिक परमान।

(५ कोटि)

तीन कोटि कुंजर मतवारे, पंच कोटि रथ सरस सँवारे (पांडव)

पाच कोटि मीलहुं ते आगर, क्षेत्रफलहि पृथ्वी अनुमान।

सम वृत्त के क्षेत्रफल निकालने की सुलभ रीति—

व्यास अर्द्ध को वर्ग करि, बाइस तें गुणि देय।
भाजि सातसो वृत्तकर, क्षेत्रफलहि लखि लेय॥ यथा—

एक वृत्त का व्यास ८, व्यासार्ध ४, ४×४=१६ वर्ग

$$\frac{१६\times२२}{७} = \text{क्षेत्रफल } ५०\frac{२}{७}$$

इस रीति को इस प्रकार भी लिख सकते हैं.—

$$\frac{८}{२}\times\frac{८}{२}\times\frac{२२}{७}=५०\frac{२}{७}$$

यह ऊपरी क्षेत्रफल हुआ यदि गोल पृष्ठ का फल लेना हो तो इसका चौगुना और गोलांतर्गत घन फल लेना हो तो पांच गुणित होगा

(७ कोटि)

सात कोटि हैं ताम्र के, चाँदी के श्रुति कोट (श्रुति ४)
जात रूप केहू इते, माणिक कोट सुकोटि ॥ (लंका)

सप्तकोटि निशिचर सँगताके, असित मेरु सम खल भट गाके (विंदुराक्षस)

रवि से शुक्र दूर ठिय जान, मील सात कोटिक अनुमान।

(८ कोटि)

आठ लाख शत बार गनाई, लै सँग सेन पपपुर जाई। (दुर्गंध)

(९ कोटि)

नव करोर स्फटिक सुहाये, सहस कोटि मणि नील सुहाये। (लंका)

नव करोर मीलहुँ तें दूर, पृथ्वी तें राजत है सूर। (सूर्य)
प्रति सेकंड ज्योति गति शील, इक लख सहस छयासी मील

(१० कोटि) अर्बुद

दश करोर वानर सँग लैके, चले सकल प्रभुपद चित दैके।

दश करोरि नव लाख अरु, बीस सहस सत एक।
चले केसरी संगलै, करत चरित्र अनेक ॥

सजे कोटि दश मत्त मतंगा, बीस कोटि लिय संग तुरंगा। (मेघनाद)

स्वर्ग भूमि अरु अन्तरिक्ष मे, तीरथ है साढे दस कोटि।
गंगाजी में सबही राजत, महिमा गंग न गिनिये छोटि।

(१३ कोटि)

कोटि त्रयोदश लक्ष इकीस, चौबिस सहसऽरु नौ सौ दीस।
रथ गज हय अरु पदचरमान, महाऽक्षोहिणी सख्या आन।

रथ १३२१२४६०
गज १३२१२४६०
हय ४११३७४७०
पदचर ६८५६२४५०

योग १३,२१,२४,६००

(१४ कोटि)

रवि से मंगल दूर सुजान, चौदह कोट मील अनुमान।

(१६ कोटि)

पुनि बसंत शत बीर बुलाये, कह्यो जाहु पश्चिमहिं सिधाये,
सोलहु कोटि कीश लै भारी, उठे तमकि जय राम पुकारी।

(२० कोटि)

बीस कोटि संग सेन सुहाई, चले सकल जय कहि रघुराई (सीताशोध

बीस कोटि वर कीशजे, रक्षा करत गवाक्ष।

बीस कोटि असवार महाबल, तीस कोटि सन लेखौ पैदल (पाडव)

(२१ कोटि)

इकिस कोटि वनचर लै साथा, पवन कुमारहिं नायउ माथा। (मयद)

(२५ कोटि)

शेल शूल असि मुदगर धारी, कोटिपचीस चले रथ चारी (मेघनाद)

(३० कोटि)

एक नील दल तीस करोरा, धावत एक एक बर जोरा।

तीस कोटि लै बहु खडो, नाम वीर धूम्राक्ष।

(३३ कोटि)

तैंतिस कोटि देव सुमिरन कर, कहिहौं वीर पँवारो गाय।

(३६ कोटि)

षट् त्रिंशत् कोट्यश्चैव हरस्य सकला गणाः।

उत्तर दिशि दश शीस, रहेउ स्वयं सज्जितवली।
सग कोटि छत्तीस, लिये मुख्य सेनापती।

(४२ कोटि)

कोटि बयालिस तमीचर, नारान्तक कर घात।
राम कृपा बल हति खलनि, कपिन विताई रात।

(४८ कोटि)

कितक मील रवि से गुरु दूर, अड़तालिस कोटी भरपूर।

(५० कोटि)

कोटि पचास खड़े कपि घेरे, बहु शर भंग निपुण रण केरे।

(५६ कोटि)

छप्पन कोटि वनचर लै साथा, करत प्रणाम चले कपिनाथा (श्रीलह)

छप्पन कोटि यादवा जेते, कृष्ण भक्त सब जानिय तेते।

(६६ कोटि)

कोटि छियासठ गजन को, अवरीष नर नाह,
विनय सहित विप्रन दई, कीरति रही अथाह।

(६७ कोटि)

सप्त षष्टि हताः कोट्यो वानराणां तरस्विनाम्
पश्चिमे नाद्य शेषेण मेघ नादेन सायकैः।

संख्या		क्रमिक संख्या	संख्या		क्रमिक संख्या
९१	एकनवतिः	एकनवतः	९६	षण्णवतिः	षण्णवतः
९२	द्विनवतिः	द्विनवतः	९७	सप्तनवतिः	सप्तनवतः
९३	त्रिनवतिः	त्रिनवतः	९८	अष्टनवतिः	अष्टनवतः
९४	चतुर्नवतिः	चतुर्नवतः	९९	नवनवतिः	नवनवतः
९५	पञ्चनवतिः	पञ्चनवतः	१००	शत	शततमः

विशेष विवरण

(१) एकसौ से अधिक संख्या मे अधिक वा उत्तर शब्दो का प्रयोग होता है यथा.—

१०१ एकाधिकं शतं अथवा एकाधिकशतं।
एकोत्तरं शतं अथवा एकोत्तरशत।

(२) प्रकार अर्थ में संख्यावाचक शब्दों के पश्चात् धा प्रत्यय होता है। यथा -

द्विधा-त्रिधा-अष्टधा-नवधा इत्यादि।

(३) अनेकवार के अर्थ मे शस् अर्थात् शः प्रत्यय होता है। यथाः—

बहुशः अल्पशः शतशः सहस्रशः लक्षशः कोटिशः।

(४) विंशति आदि शब्दो से पूर्ण अर्थ मे तम प्रत्यय होता है अथवा ति का लोप होजाता है। यथा —

विंशतितमः अथवा विंशः।

॥ इति ॥

निवेदन

अंकविलास के प्रूफ का संशोधन यथासंभव सावधानी से किया गया है तथापि मेरी वा छापे की भूल से कहीं अशुद्धि रह गई हो तो उदारचेता महानुभाव कृपया सुधार लेवें।

ग्रंथकर्त्ता।

संख्या	क्रमिक संख्या	संख्या	क्रमिक संख्या
१ एकनवतिः	एकनवतः	९६ षण्णवतिः	षण्णवतः
२ द्विनवतिः	द्विनवतः	९७ सप्तनवतिः	सप्तनवतः
३ त्रिनवतिः	त्रिनवतः	९८ अष्टनवतिः	अष्टनवतः
४ चतुर्नवतिः	चतुर्नवतः	९९ नवनवतिः	नवनवतः
५ पञ्चनवतिः	पञ्चनवतः	१०० शत	शततमः

विशेष विवरण

(१) एकसौ से अधिक संख्या में अधिक वा उत्तर शब्दो का प्रयोग होता है। यथा,—

१०१ एकाधिकं शतं अथवा एकाधिकशतं।
एकोत्तरं शतं अथवा एकोत्तरशतं।

(२) प्रकार अर्थ मे संख्यावाचक शब्दो के पश्चात् धा प्रत्यय होता है। यथा,—

द्विधा-त्रिधा-अष्टधा-नवधा इत्यादि।

(३) अनेकवार के अर्थ मे शस् अर्थात् शः प्रत्यय होता है। यथाः—

बहुशः अल्पशः शतशः सहस्रशः लक्षशः कोटिशः।

(४) विंशति आदि शब्दो से पूर्ण अर्थ मे तम प्रत्यय होता है अथवा ति का लोप होजाता है। यथा —

विंशतितमः अथवा विंशः।

॥ इति ॥

निवेदन

अंकविलास के प्रूफ का संशोधन यथासंभव सावधानी से किया गया है